



कामेट
२५४४७

केदारनाथ
२२७७०

■ केदारनाथ

बद्रीनाथ
२३१९०

१०१५९
नीलकंठ
२१६४०

■ बद्रीनाथ

बरमोरी ■ ३२३३

६१०५
बोशीमठ ■

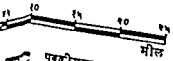
■ खमोली

■ शंकरप्रयाग

■ कर्णप्रयाग

■ खीनगर

रिपयग



तोर्य-यात्रा-मार्ग
हरिद्वार से बद्रीनाथ
और केदारनाथ को

रुद्रप्रयाग का आढमखोर वधेरा

लेखक
जिम कौर्नट
अनुवादक
श्रीराम गर्मा
विशालभारत सम्पादक



ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस
बम्बई कलकत्ता मद्रास
१९५७

THE MAN EATING LEOPARD
OF
RUDRAPRAYAG
(in Hindi)
RUDRAPRAYAG KA ADANKHOR
BAGHERA
JMI CORBETT

Printed in India by V N Bhattacharya, M.A.
at the Inland Printing Works 60/3 Dharamtala Street, Calcutta-13
and published by John Brown Oxford University Press
Mercantile Buildings, Calcutta-1

अनुवादक की ओर से

गत वर्ष जब इन पत्रिकाओं के लेखक न कौबेट साहब की अंग्रेजी पुस्तक की मूल ईंटिंग रूप में आक नदप्रयाग का हिंदी अनुवाद करना प्रारम्भ किया था तब कौबेट साहब जीवित थे। अतः हमारा विश्वास था कि कौबेट साहब से इस अनुवाद के कारण निकटतम सम्बन्ध हो जायगा जो शिकार खलन के नाते उनसे आत्मिक सम्बन्ध तो था ही। पर अनुवाद छपने से पूर्व कौबेट साहब परलोक सिंघार गये। निधन के समय उनकी आयु ८० वर्ष थी।

यह बड़ा दुःख का बात है कि कौबेट साहब उस महत्त्व तथा लाकमेवी व्यक्ति को भारत छोड़ना पड़ा और फिर वे पूर्वी अफ्रीका में जाकर बस गये। गढ़वाल और कुमायूँ की निरीह जनता में कौबेट साहब के प्रति आश्रय है वह बड़ा बड़ा भारतीय कार्यकर्ता का प्राप्त नहीं है। इसका मूल कारण है कि कौबेट साहब जहाँ विश्व विख्यात शिकारी थे वहाँ वे सच्च मानव भी थे। हमारा दावा है कि पहले से मनुष्य थे पीछे एक आसटक।

कौबेट साहब के परिचय के लिए एक अल्प लेख की आवश्यकता है। यह काम तो धायद फिर किसी पुस्तक के साथ सम्पन्न हो सके। गढ़वाल और कुमायूँ के लाखों व्यक्ति उनका नाम बड़ा आदर से लत है और ऐसा प्रतीत होता है मानो हिमालय के गगनचुम्बी शिखर उनकी याद में अब भी मूक श्रद्धा प्रकट कर रहे हैं।

पाठकों का यह बताना आवश्यक है कि अंग्रेजी शब्द leopard के लिए हमने 'बघरे' शब्द का प्रयोग किया है। कई वर्ष पूर्व तक लोग panther और leopard में भ्रम करते थे। पर ये एक ही ही दो नाम हैं। हिंदी में इसका अनक नाम है। वहीं गुलबघा कहते हैं वहीं उदुआ कहते हैं और वहाँ 'गुल्लार' शब्द का प्रयोग होता है। गत तीन वर्षों से लेखक leopard के लिए बघरा शब्द प्रयोग करता आया है। tiger के लिए शेर का प्रयोग किया गया है।

अनुवाद करने में सुबोध और सरल भाषा का ही प्रयोग किया गया है। कहीं कहीं भाषा-सौष्ठव की दृष्टि से एक दो परिवर्तन छोड़ भी दी है पर मूल कथा या घटनाचक्र में तनिक भी परिवर्तन नहीं किया गया है।

अतः मैं पाठकों को यह बताना भी कुछ अनुचित नहीं है कि कौबेनट साहब विश्व विख्यात शिकारिया में से थे। वन्य पशुओं की वाता जानन में ता वे अद्वितीय थे। अतः ही हिन्दी में उनके रोमांचकारी वचन सीधा-सादी भाषा में पाठकों को आकर्षक और उपयोगी सिद्ध हुए।

नवजीवन काम

श्रीराम शर्मा

आगरा

विजयान्तमी १९५६

विषय सूची

१ तीस-यात्रा-माग	१
२ आदमखोर	६
३ आतक	१
४ आगमन	२९
५ तहकीकात	३२
६ पहली मार	३८
७ बघरे के स्थान की खोज	४१
८ दूसरी मार	४५
९ तैयारियाँ	५२
१० जादू	५८
११ बाल-बाल बचना	६१
१२ पिशाच-पास	६३
१३ गिन्कारियों का शिकार	७१
१४ वापसी	८०
१५ अक्काश और मनोरञ्जन	८७
१६ धकरे की मौत	९७
१७ साइनाइड जहर	१०१
१८ नहूसत	१०८
१९ सावधानी का पाठ	११९
२० जगली सूजर का शिकार	१२४
२१ पड़ पर से पहरेदारी	१३०

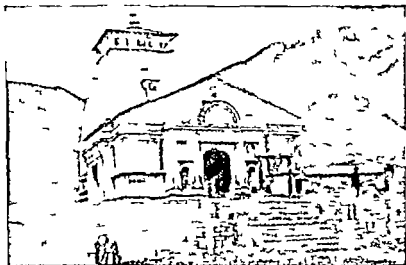
२२	आतकपूर्ण रात्रि	१४२
२३	बघरा की लडाई	१४९
२४	अधरे में गोत्रो	१६२
२५	उपसहार	१७८

१४७
१४९
१६२
१७८

चित्र सूची

बनारनाथ का सुप्रसिद्ध मन्दिर	पृ	१ के सामने
बनारनाथ के ऊपर हिमालयादित हिमालय		१
कुमार्यु की एक नदी और वहाँ के मनोरम प्राकृतिक दृश्य		१६
रुद्रप्रयाग के पुल की मीनार जिस पर कनल कौबेट नदीस रातें व्यतान की थी		४२
मन्नाकिनी और जलकनन्या का संगम		४२
बूढ़ा लदेरा		१२४
पण्डितजी और उनका मकान		१६०
गुलाबराय		१६१
इस काम के पेट से बपरे का निवार किया गया था		" १६१ "
कनल कौबेट और रुद्रप्रयाग का आत्मखोर		१७४

मानचित्र
तीस-यात्रा-भाग



बेगनाथ का सुप्रसिद्ध मंदिर



बदरीनाथ के ऊपर हिमाच्छादित हिमशिखर

तीर्थ यात्रा-मार्ग

बाध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से हिमालय का वह भाग जिसे उत्तराखण्ड कहते हैं बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। प्राकृतिक मोक्ष के अतिरिक्त बदरी और केदार तीर्थ स्नान होने के कारण वह भूभाग समस्त हिन्दुओं के लिए अत्यन्त आकर्षक है। भारतवर्ष के प्रत्येक कोण से भाषाभाषी भिन्नता हान पर भी समस्त धार्मिक वृत्तियों के हिन्दू देवगणाय और धरणीनाथ के मंत्रों की यात्रा करना अपना कर्तव्य समझते हैं। उत्तराखण्ड की यात्रा का प्रारम्भ शास्त्रीय विधान से हरिद्वार से जाना चाहिए और उचित रूप से यात्रा करने के लिए और पूण पुण्य प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि यात्री हरिद्वार से केदारनाथ तक पदल यात्रा कर और वहाँ से बदरीनाथ की पहाड़ी भाग से नग पैर जाय। हरि की पौनी के कुछ मंत्र स्नान कर और पवित्र हाकर अनक मदिरा और मठा के दान हरिद्वार में कर और उनमें भद्रानुसार चढ़ावा भेंट कर और हरि की पौड़ी के ऊपर तीर्थ-यात्रा भाग के सकीण भाग में बठ कोटिया को जिनकी अगुलिया गलकर गिर गई है पैसा दो पसा दना भक्तलाग आवश्यक समझते हैं क्योंकि कुछ न मिलने से कोट्टी भक्त यात्रियों को अभिगाप देते हैं। इस बात को कोई चिन्ता नहीं करता कि इन अभाग कोट्टिया के पास उनके चिमडा में छिपी इतनी सम्पत्ति होती है जिसकी यात्री को स्वप्न में भी कल्पना नहीं हानी। वे अपनी सम्पत्ति को चट्टानों की गुफाओं में भी रखते हैं जिन्हें वे अपना घर कहते हैं। ऐसे व्यक्तियों को गालियाँ से बच सकें या अभिगाप से मुक्त रह सके कुछ ताँबे के टुकड़े खच करके ही ता कोई बुरी धान नहो है।

रीति रिवाज और धार्मिक दृष्टि से जो कुछ पूजा-अचना तथा दान

दक्षिणा हरिद्वार में करन के बाद भाग हिन्दू अनी लम्बी और कठिन तीय यात्रा प्रारम्भ करन की स्वतन्त्र हो जाते ह ।

हरिद्वार के बाद तीय-यात्रा का पहला रोचक और मनोहर स्थान ऋषीकेश है । यहाँ पर काशी कमलीवाला से प्रथम सम्पर्क होता ह । काशी कमली वाला नाम इसलिए पड़ा कि काशी कमलीवाल क्षत्र के प्रवक्ता काला कम्बल पहनते थ । बाबा काशी कमलीवाले के अनक गिष्य अब भी काला कम्बल या ढीला लबागा पहनते ह जिसके बीच में यानी कमर पर बकरी के बाला की रस्सी को चारा ओर बाध ठेते हैं । काली कमली वाल क्षत्र के लग देश भर में अन जनहितकारी कामा के लिए प्रसिद्ध ह । पता नही तीय यात्रा मार्ग में मिलन वाले अथ धार्मिक संस्थाओं में से किसी को भी प्रतिष्ठा का कोई अधिकार है पर यह म जानता हू कि काली कमलीवाला का यह अधिकार अवश्य ह और उस प्रतिष्ठा के वे अधिकारी भी ह क्योंकि अने अनक मंदिरों और मठा म चढ़नवाठ पुत्राये में से उहान अ रागल दवावान यात्रियों के ठहरन के स्थान-चट्टिया बनवाए ह और उनका वे मलीमाति धरते ह । साथ ही वे गरीबों और दीन दुखियों को धर्माय भाजन ेते ह ।

ऋषीकेश के बाद लछमननूरा जाता ह । लछमनमूले से तीय यात्रा मार्ग मूले का पुल पार कर गंगा के दाहिनी ओर से उसक बाई ओर को जाता है । महा ज्ञान-गुण-भागर बन्धरा से सावधान रहना चाहिए । पुल बन्धरों से घिरा और भरा रहता ह । सावधान इसलिए रहना चाहिए क्योंकि वे हरिद्वार के काट्टिया की अनेका अधिक स्वायसाधक ह । अगर उनका यात्री लाग भुन बन या मिठाई की पूजा से प्रसन्न करना भूल जाते हैं तो लम्ब और सकीर्ण पुल पर का उनका रास्ता कठिन और कठेगूण हो जाता है । गंगा के बाई ओर तीन दिन की यात्रा के बाद यात्री गङ्गा की पुरानी राजवानी धीनगर पहुँच जाते ह । धीनगर

ऐतिहासिक धार्मिक और व्यापारिक दृष्टि से बड़े महत्त्व का केन्द्र है और प्राकृतिक सौन्दर्य भी उसका अपूर्व है। उच्च पर्वत शिखरों से घिरी एक चौड़ी और खुली घाटी में वह स्थित है। यहीं पर सन् १८०५ में गढ़वाली सैनिकों के पुरखों ने गोरखों के विरुद्ध अपना अंतिम तथा अत्यन्त मोर्चा लिया था। स्मरण रहे गत दो महायुद्धों में गढ़वाली सैनिक बड़ी वीरता पूर्वक लड़े थे। गढ़वाल निवासियों के लिए यह बड़े दुःख की बात है कि उनका श्रीनगर उनके राजाओं के आसपास के साथ गाढ़ना झील के बाघ के फँस से सन् १८९४ में पूर्णतया बह गया। यह बाघ गंगा की सहायक नदी विरही गंगा की घाटी में पहाड़ के टूटने से बना था। नीचे व्यापार पर यह ग्यारह हजार फीट चौड़ा ऊपर शिखर पर यह दस हजार फीट चौड़ा तथा तीसरी फीट ऊंचा था। जब वह बाघ फँस तो छ घंटे का सूखन अवधि में एक नीचे पन फीट पानी भस्मराना और घटपड़ता बह निकला। बाघ के फँस का समय पहले से ही इतना ठीक बता दिया गया था कि यद्यपि बाघ से हरिद्वार तक गंगा की घाटी मल्ट हो गई थी और उस पर हर एक पुल बह गया था सब भी स्थल एवं ही कुटुम्ब की जान बर्बाद हुई। इसका कारण था कि उस कुटुम्ब के व्यक्ति वहाँ से बलपूर्वक हटाए जाते पर भी खनर के स्थान में वापस पहुँच गए थे।

श्रीनगर से आगे को छातीवाल तक कठिन चढ़ाई पड़ती है और यात्री चढ़ाई से परेशान हो जाते हैं। पर इस धर्म के परेशानों का उपाय उनको गंगा की घाटी के मनोहर दृश्य और कानरनाम के उपर हमारा जमी बरफ के दृश्य से हो जाता है। छातीवाल से एक दिन का यात्रा में ही यात्री गुणाबराय का सामन देखते हैं जिसमें यात्रियों के निवास के लिए घाम फूम के छपरों की एक पंक्ति बनी है। वहाँ एक कमर का पत्थर का बना मकान है और बाहर के पानी की होने बनी हुई है।

यह विशाल और दानदार वीन के पानी की हौदी एक क्षीण पर निर्मल धारा में बरी जाती है। ग्रीष्म काल में यह धारा देवदार के पौधों के मार्गों द्वारा पहाड़ की ओर को घीरे घीरे लाई जाती है। साल के अन्य मौसमों में बिना किसी रुकावट के ठाठ में चट्टानों के ऊपर पानी फूट निकलता है। उन चट्टानों पर बार्द और नए मलायम वाला जैसी कालीन सी किछी रहती है। साथ ही पानी ग्रीष्मकाल का छोट कर जल की हरी घास की तरह और नीलाम्बर रंग की घास में होकर बहता है।

यात्रियों की चट्टियां सौ सौ गज आगे और सड़क के दाहिनी ओर बहा एक आग का पड है। यह घुस और उसके ऊपर दुल्लो मकान एक पंडित महाराज का घर है। यात्रियों के निवास स्थान भी इन पंडितजी महाराज के हैं। यह इसलिए स्मरणीय है क्योंकि मुझे या कहानी कहनी है उसमें इन पंडितजी का महत्वपूर्ण स्थान है।

दा मोल और आगे समतल भूमि पर जिसे यात्री बहुत दिना बाद देखते हैं ह्प्रयाग जा जाता है। ह्प्रयाग में यात्रीगण और मैं अपना अपना रास्ता पकड़ते हैं क्योंकि यात्रियों का रास्ता अल्कनंदा पार महाकित्तों के बाईं ओर बेदारनाथ को जाता है और मेरा भाग पहाड़ों में से होकर ननीताल का।

यात्रियों के सामने का माग जिनपर करोड़ों यात्रियों के पदमार पड़े हैं बहुत ही ढलवा और ऊबड़ खावड़ है। उन यात्रियों को जिनके फफुंडा न समुद्रतट से उची घाय में कभी सांस नहीं लिया है—जो अपने मकान की छत की उचाई से किसी और उचाई पर नहा बैठे हैं और जिनके पद मरकती बालू से अधिक कठोर भूमि पर नहा पडे हैं बहुत कष्ट होगा। अनेक बार ऐसे अवसर आये जव यात्री दम काँपे हुए सौंसे मन के प्रयास में पहाड़ों की तंड चढ़ाई पर परिश्रम से

घालत हूँ रक्तरजित और फट परा स अवन गरीर भार का संभालत
 हुए तथा डगडमाने हुए ऊबड़ खावड़ भाग नुकीली चट्टाना और
 बर्फीली जमीन पर परिश्रम करत हुए यात्रियों क मन में यह प्रश्न
 उठता है कि क्या इस श्रम और तपस्या द्वारा भविष्य में जा पुण्य
 मित्रगा और जितकी व याचना करत ह उस मूल्य का ? जिसको वे यात्राओं
 और कष्ट भागकर अदा करत ह । पर एक बन्धु हिन्दू की हसियन
 सौम्याश्रीगण विरोलिना का भाति धीर धीर आगे बढ़े और पयभ्रष्ट हान
 का उनका खयाल न हागा वरन इस बात म उन्हें सताप हागा कि बिना
 तपस्या और कष्ट के कल्याण और पुण्य की प्राप्ति नहा हाती और
 इस विश्व म जितना कष्ट भागना पड यात्राएँ जितना ही अधिक हाती
 ह उतनी ही अगल जप में सुख की प्राप्ति होनी है ।

आदमखोर

सगम के लिए हिंदी 'गुल् प्रयाग' है। रुद्रप्रयाग में दो नदियाँ मिलती हैं—मदाकिनी बदरनाथ की ओर से और धलवनना बदरीनाथ की ओर से। रुद्रप्रयाग में आगे दोना नदियाँ की सम्मिलित धारा का भवनजन गंगा मार्ल कहते हैं दुनिया के 'गव' लाग गया।

जब कोई जानवर चाहे वह बघरा हो या गर आदमखोर हो जाता है तो हिमालय के ख्याल से उस स्थान का नाम दे दिया जाता है। जब किसी आदमखोर का किसी स्थान का नाम दिया जाता है तब उसका मतलब यह नहीं कि उस जानवर ने अपनी आत्मखोरी उस स्थान पर प्रारम्भ की या उसने जितने मनष्य मारे वे सब उसी स्थान पर मारे। यह बिल्कुल स्वाभाविक बात है कि वह बघरा जिसने अपनी आत्मखोरी का जीवन बदरनाथ तीर्थ-यात्रा-भाग पर रुद्रप्रयाग से बारह मील की दूरी पर एक छोटे गाँव में प्रारम्भ किया अपन जीवन के शेषकाल तक रुद्रप्रयाग के आत्मखोर के नाम से मशहूर हुआ। बघरा के आत्मखोर होने के ठीक वही कारण नहीं है जो 'गरा' के आदमखोर होने के होने हैं। बघरा हमारे जंगल के सब पशुओं में मुदरतम और आक्षेप होते हैं और जब वे घिराव में आ जाते हैं या घायल हो जाते हैं तो वे जंगल के किसी भी जानवर से साहम में कम नहीं हैं। पर—यद्यपि ऐसा मानने का मेरी तवियत नहीं करती—वे उस सीमा तक मुदरर खानवाले हैं कि वे भूख से पीडित हान पर जंगल में पाई जानवाली किसी भी मुदरर चीज को खा जायेंगे ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार अफ्रीका की घनी झाड़ियाँ में सिंह किसी भी मुदरर का खाने हैं।

गड़बाल के निवासी हिन्दू हैं। इसलिए अपन मृतका का वे जलाने हैं।

दाव-दाह की क्रिया निर्दिष्ट रूप से किसी जल धारा या नदी के किनारे हाती है ताकि गव भस्म गंगाजी में बहा जाय और वहा से फिर समुद्र में पहुँच जाय। चूँकि अधिकांश गाँव पर्वत शिखरो पर बसे होते हैं और जल-धाराएँ ध्यवा नदियाँ अधिकांश मीलों दूर घाटियाँ में हाती हैं, इसलिए यह बात अच्छी तरह समझ में आ जायगी कि दाह-संस्कार में एक छोटे समाज में बहुत से आत्मियाँ की आवश्यकता पड़ती है और उसमें काफी खर्च पड़ता है। घब को ल जान के अतिरिक्त जलान के लिए लकड़ी ले जान और लकड़ी इकट्ठा करने के लिए मजदूरों की भी आवश्यकता पड़ती है। साधारण समय में ये रस्म रिवाज भलीभाँति सम्पन्न किए जाते हैं। पर जब पहाड़ों में कोई महामारी—जवा फैलती है वहाँ के निवासी इतनी तेजी से मरते हैं कि दावा का प्रिया-क्रम नहीं हो सकता तब गाँवों में एक सरल और सीधी रीति व्यवहृत होती है और वह यह कि मृतक के मुँह में एक जलता हुआ कायला रखा दिया जाता है तथा गव को एक पहाड़ के किनारे ल जाया जाता है और नीचे घाटी में फेंक दिया जाता है।

उस क्षण में जिसमें घबरे का प्राकृतिक भोजन म्वल्प हो जाता है उन दावा का पाकर वह बहुत जल्दी मानस माम का म्वाद प्राप्त कर लेता है। जब बीमारी खत्म हो जाती है और साधारण स्थिति पुन स्थापित हो जाती है तब अपने भोजन की उपलब्धि समाप्त हो जान में यह मनुष्या को मारना शुरू कर देता है। १९१८ में जब भारतवर्ष में इन्फ्लुएन्जा की महामारी फैली थी जिसमें दस लाख से अधिक जान गई गड़वाल का ता उसमें बहुत घुरी तरह भुगतना पडा और इस महामारी की समाप्ति पर ही गड़वाल में यह आत्मस्रोत प्रकृत हुआ।

९ जून १९१८ को बजी गाँव में हृदययाग के आत्मस्रोत घबरे ने पहली मरहत्या की। उसकी पहली मार का यही लेखा है और अंतिम मरहत्या जो इस आत्मस्रोत ने की वह थी भसवाडा गाँव में १४ एप्रिल

सन् १९२६ का। इन दोनों विधियाँ के बीच जिन मी-युद्ध इस घड़े द्वारा मारे गए उनकी संख्या सरकारी कागजात में १२५ है। यह १२५ की संख्या जिनका कि गडवाल के तत्कालीन सरकारी नमधारी मानते हैं, कुछ ठीक नहीं है। मैं जानता हूँ कि यह संख्या शून्य है क्योंकि उन व्यक्तियों का नाम सरकारी लेख में नहीं लिखा गया है जिनको उस घड़े ने तब मारा जब मैं वहाँ था।

जितने व्यक्ति हम आदमखोर ने मारे उससे कम उसके जिम्मे रखने पर भी मैं यह नहीं चाहता कि मैं किसी प्रकार गडवाल के लोग की यातनाओं का काम करके बजाऊँके लम्बी यातनाएँ जो उन्होंने आठ दीघ वर्षों में सही। मैं उस घड़े की व्याप्ति का किसी प्रकार काम करना चाहता हूँ जो गडवाल के लोग ने उसे दी अर्थात् लोग उसे सब काल का अत्यंत कुख्यात आदमखोर बघरा कहते हैं।

अस्तु जितने मनुष्य उस घड़े ने मारे उनकी संख्या कुछ भी हो गडवाल का यह दावा है कि यह बघरा जितना प्रकाशन में आया उतना कभी भी कोई और पशु नहीं आया। स्वयं मेरी जानकारी में उसकी घर्षा यूनाइटेड किंगडम अमेरिका कनाडा दक्षिणी अफ्रीका कीनिया मलाया हाँगकॉंग आस्ट्रेलिया पूजीलड और भारतवर्ष के अधिकांश दैनिक और साप्ताहिक पत्रों में रही थी।

समाचार पत्रों के इस प्रकाशन के अतिरिक्त हम आदमखोर की घर्षा और कहानियाँ भारत के प्रत्येक भाग में साठ हज़ार यात्रियाँ द्वारा फैलाई गईं, जो प्रतिवर्ष घरे और बेजार के दाना के लिए आते हैं। आदमखोर द्वारा मारे गए आदिमियों के लेख का सरकारी तरीका यह है कि इस प्रकार मारे गए लोगों के रिश्तेदार या मित्र गाँव के पटवारी को एक रिपोर्ट तथा समस्त घटना के बारे में ही लिखाते हैं। रिपोर्ट के मित्तन पर पटवारी घटनास्थल पर जाता है और अगर उमक आन तक लागू नहीं मिलती

ता वह खाज के लिए कुछ आदमी एकत्र करना है और उनकी सहायता से वह मरे व्यक्ति की तलाश करता है। अगर पटवारी के आन से पहले लाग मिल जाती है या खाज करनवाला दल लाग पा लेता है तो पहले लाग मिल जाती है और खाज करनवाला दल लाग पा लेता है तो पटवारी मौक की जाच करता है और जब उसे विश्वास हो जाता कि मृतक का सबमुच ही आदमखोर न मारा है और कल का मामला नहीं है तब वह गव दाह की आज्ञा दे देता है। स्पष्ट है कि मृतक के हिसाब से ही दाह और दफन की क्रियाएँ होती हैं। अगर मार आत्महत्या द्वारा की गई है तो पटवारी उस क्षत्र के आदमखोर के सामने नाम रजिस्टर में दर्ज कर उता है और घटना की पूरी रिपोर्ट जिले के अधिकारी डिप्टी कमिश्नर का भजी जाती है। डिप्टी कमिश्नर खुद भी एक रजिस्टर रखता है जिसमें आत्महत्या द्वारा मार गए व्यक्तियों का लेखा रहता है। यदि आदमखोर द्वारा मारे गए व्यक्ति का गव नहीं मिलता या उसका कोई भाग नहीं मिलता तो मामला की तहकीकात बाल में की जाती है और उस मौत का जिम्मेदार आदमखोर नहीं रखा जाता। स्मरण रहे कि आदमखोरा के बारे में प्रायः यह होता है कि उनकी मारी लाग या टकड़ नहीं मिला करते क्यो कि वे अपने मानवी गिकार का बहुत दूर तक जान के आदी होते हैं। इससे अतिरिक्त जब लाग किसी आत्महत्या की जिम्मेदारी भी आत्महत्या पर नहीं रखी जाती।

इस प्रकार स्पष्ट हो गया होगा कि यद्यपि आदमखोर द्वारा मार गए लोगों की सख्या का सरकारी लेखा उतना ही अच्छा है जितना उम्मुक्त परिस्थितियाँ में हो सकता है फिर भी किसी असाधारण आत्महत्या के लिए सम्भव है कि वह उससे अधिक मनुष्यों के मारने का जिम्मेदार हो जितना कि उसके बारे में सरकारी कागजात में दर्ज है किन्तु उस परिस्थिति में जब कि उसकी आत्महत्या की प्रवृत्ति एक लम्बी अवधि तक चली।

आतक

आतक दरम साधारणतया तथा भावभीमतया प्रतिदिन की साधारण बातों में इस प्रकार प्रयुक्त होता है कि हमने वह सामाजिक धर्म नहीं निकालते जिसमें हमारा सामाजिक मर्यादा होता है। इसलिए मैं यह समझ करूँ कि पाठक को मैं अपनी भावना बता सकूँ कि आतक क्या वास्तविक आतक के—मानी गढ़वाल के ५०० वग मील में रहने वाले पंचम हज़ार निवासियों के लिए क्या था—उस क्षत्र के निवासियों जिन्होंने आत्मसंतोष अपनी मानवी शिक्षा पकड़ना था और उन साठ हज़ार यात्रियों के लिए जो सन १९१८ से सन १९२६ के बीच उस इलाक़े से गुज़रते थे। मैं कुछ उदाहरण दूंगा यह बताऊँ कि वहाँ के यात्रियों और निवासियों के लिए उस आतक के क्या कारण थे।

कभी भी कोई कर्पूर यादर इतनी कड़ाई से और इतने ठीक धर्मों में नहीं बरता गया जितना कि संप्रयाग के आत्मसंतोष बंधरे द्वारा वहाँ लगाया गया।

इस क्षत्र में उस क्षत्र का जीवन साधारण रूप में बीतता था—लोग काम के लिए दूर के बाज़ारों को जाते थे सबधिया और मित्रों से मिलने दूर के गाँव जाते थे स्त्रियाँ छप्परा के लिए घास या पत्तों के लिए चारा बालू पहाड़ों पर जाती थीं जब स्कूल जाते थे या जंगल में बरखिया बगल जान या सूखी लकड़ी इकट्ठी करने जाते थे और ग्रीष्म काल में यात्री लोग एक-एक करके या बड़ी संख्या में कर्पूरनाथ या बदरीनाथ के पवित्र तीर्थों के भाग पर आने-जाते थे। पर ज्योंही मूस अपनी क्षत्र धर्मों में पवित्रता की आत्मा पहुँचता और जैसे ही छाया लम्बी होनी लगती वैसे ही उस क्षत्र की सम्पूर्ण आवादी

का व्यवहार विद्यत गति से भिन्न प्रकार परिवर्तित हो जाता। जो लोग दूर से बाबारा या गावा में चहल-चदमी के लिये गए थे घरा की ओर भागदौड़ करने लगते। स्थिया घास के भारी बोझ लादे हुए बलियाँ पहाड़ों की ओर लड़कती-सी खिटाई पड़ती। बच्चे स्कूल के रास्ते में जो रोल्कूद में लग जाते या जा चकरिया के झुंडा के लान में दूर करते या जिन्हें सूखी लकड़ियाँ को छिक्कटा करने में दूर होती उन्हें उनकी चिन्तित माताएँ बुलान में जूट जाती और थने माद यात्रिया को निवासस्थान की ओर जल्दी जान का कहा जाता यदि कोई स्थानीय निवासी उनका पास होकर गुजरता।

रात्रि के आगमन पर उस सम्पूर्ण क्षेत्र पर एक अपमानपूर्ण नीरवता का साम्राज्य छा जाता—यहाँ किसी प्रकार की कोई गति या शब्द नहीं सुनाई पड़ता। सम्पूर्ण स्थानीय आवादी जकड़कर बंद किए निवाडा के पीछे हो जाती और बहुत सी जगह तो लोगान नए दरवाजे बनाकर अपनी रक्षा का प्रबंध किया था। जिन यात्रिया का मकाना के भीतर ठहरने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होता वे यात्रिया के निवास-स्थानों में भड़-चकरिया की तरह घिपटकर पड़े रहते थे पर सब के सब चाहें मकान के अंदर ही चाहें चट्टिया में आदमखोर के भय को अपनी ओर बुलान के दर से निस्तम्ब रहते थे।

आठ लम्बे वर्षों की शर्यापि के लिए गढ़वाल के लोग और यात्रिया के लिए आतक मानी यह था।

अब में कुछ उदाहरण दूंगा यह समझान के लिए कि उस आतक के कारण क्या था।

एक चौंठ वर्षीय अनाथ बालक को ४० चकरिया के झुंड की रणवाली के लिए नौकर रखा गया। यह बहुत जानि का था और प्रतिदिन सायंकाल का जम यह वापन आता तो उस भाजन दिया जाता और एक छोट केसर

में बकरिया क साथ ही उम बढ़ कर लिया जाता। यह कमरा नीचे के तल्ले में था। ऊपर दुतल्ले मकाना की एक पक्ति थी। जिस कमरे में लडका और बकरिया रहती था वह लडके के मालिक यानी बकरिया के मालिक के ऊपर के तल्ले के कमरे क ठीक नीचे था। सान पर बकरिया उसके ऊपर खर न रख सके इसलिए लडके न कमरे के बाईं ओर क कान में अपना लिए एक राक लगा ली थी। इस कमरे में बिडबिया नहा थी एक ही दरवाजा था और जब लडका और बकरिया सुरक्षित रूप से अन्दर हा जात ता लडके का मालिक दरवाजा का बंद कर देता और कुडी का देहरी म लगा देता। दरवाजा म एक अरगडा उगा दिया जाता और लडका भीतर स अपनी सुरक्षा के लिए एक पत्थर अडा देता था।

जिस रात्रि को वः अनाथ अन्न माता-पिता स मिलन बमपुर सिधारा दरवाजा नियमानुसार उसी तरह बंद था और मुझे उनके क मालिक की बात में सदेह करन का तनिक भी कारण नहीं मिला। प्रमाणस्वरूप दरवाजा में अटक नख चिह्न थे और समबन दरवाजा का पजा स खोलन क प्रयास में बधरे न अरगड का स्थान स हटा दिया हा और उसके बान उमके लिए यह बः आसान था कि वह पत्थर का सरका दे और भीतर घुस जाय। एक कमरे में ४ बकरिया ठस थ। कमरे का एक काना कुठ अडा मा था एपी अवस्था में बधरे का घुमन फिरने का स्थान नहीं था। य अन्नमान की बात ह कि बधरे न दरवाजा से कमरे के लडके बान कान तक का फासला बकरिया की पीठ पर से पार किया था उनके पेट के नीचे स क्योंकि बकरिया उस समय खड़ी अवश्य हागी।

य मान लना उचित हागा कि लडका उस समय तक सोता रहा होगा जब बधरे न दरवाजा खोलन में बान की हागी। उस समय भी लडका सोता ही रहा जब बधरे कमरे में घुस आया और बकरिया न खडबड़ और गार किया।

घिरे हुए कान में लटक का मारना व बाह्य वधरा उम खाली कमरे के पार—वक्रिया कमरे व बाहर भाग गई था—नाच की आर पहाड़ के तब उत्तर की आर ल गया और तब कुछ दूरी तक बंदी बन खता म हाकर पत्थरा से पूरिन नाले में मूर्योत्तम के कइ घटा था मालिक न अपन मोकर व गरीर का यह अवगण पाया जा बधरे न छाड लिया था। लटक का यह अवगण परमात्मा की उम अनुपम सुष्टि का प्रमाण मात्र था।

यह बात अविश्वसनीय भइ ही मालूम ही पर यास्तत्रिकता यह थी कि वक्रिया व काई चाट-फेंट नही आई थी। खालीस वक्रिया में से एक व भी काई खराब तक नही आई थी।

* * * *

एक पहासी अपन मित्र के यहां हुक्का पीन दर तक बठा रहा। कमरे का आकार इम प्रकार था जैसे एक पडी रखा व कोन पर एक खडी रस्ता समवाण बनाव और कमरे में जो दरवाजा था वह वहा से नहा लिखाई पडता था जहा दोना आत्मी फर्न पर बठ दीवार से पीठ लगाए हुक्का पी रहे थे। दरवाजा बन्द था पर मानल नहा लगी थी क्याकि उम रात तक उम गाव में काई व्यक्ति मारा नही गया था। कमरे में अर्घेण था और मालिक भवान न जस ही अपन मित्र का हुक्का लिया वस हा वह खमीन पर गिर गया और घघकत बामल तथा तमाखू फग पर फग गय। अपन मित्र से यह कहत हुए कि उम अधिक सावधानी से हुक्का लेना चाहिए करना जिस कम्बल पर व बैठ है उममें यह आग लगा दगा आत्मी आग समटन का धागे का झुका और ज्याही उसन एसा बिया वस ही दरवाजा उस दिखाई लिया। तीण कद्रमा अम्न ही रहा था और घूमिल कद्रिका में उमन दना कि एक बधरा त्रवात्र न उसक मित्र का लिये जा रहा ह।

कुछ दिना बाद जब उम आत्मी न उम घटना का मुत्रमे बणन किया तब उमन कहा साहब म मत्य बाल रहा ह जब म आपन कल्या ह कि

मन साम तेन तक की आवाज नहा सुनी । न कोई ध्वनि मेरे मित्र से ही हुई हालांकि मेरा मित्र मुझसे एक हाथ की दूरी पर ही बैठा हुआ था । जब वधरा मेरे मित्र को मार रहा था या लिय जा रहा था तब भी किसी प्रकार की न कोई आवाज हुई न आन्ट । मैं अपने मित्र के लिए कुछ भी नहीं कर सका । इसलिए मैं तब तक प्रतीक्षा की जब तक वधरा कुछ देर के लिए चला नहीं गया और तब मैं दरवाजे की ओर मरका और जल्दी से छुड़ी चगादी ।

* * *

एक गांव के मुखिया की पत्नी ज्वर से पीड़ित थी और उसकी परिचर्या के लिए दो सहेलियां बुलाई गई थी ।

मकान में दो कमरे थे । आहर के कमरे में दो दरवाजे थे । एक दरवाजा बाहरी छान सहन की ओर खुला था और दूसरा भीतरी कमरे में जान के लिए था । बाहरी कमरे में एक सफ़ीय सिंढकी थी जो फर्श से चार फीट ऊंची थी और इस सिंढकी में जो खली हुई थी पीतल का एक बड़ा बतन रखा था जिसमें रोगिणी के लिए पीने का पानी भरा था ।

एक दरवाजा के सिवाय जिसमें बाहर के कमरे में आया जाता था भीतर के कमरे में कोई खुला स्थान न था ।

अहात की ओर जानवाला रास्ता व था और उसकी मजदूती से कुंड़ी लगी थी और दाना कमरा के बीच का द्वार पूरा खुला था ।

तीना स्त्रिया भीतर के कमरे में जमीन पर लट रही थी । रोगिणी का पति बाहरी कमरे में चारपाई पर था । कमरे के उस ओर जा सिंढकी से निकलना था और उसकी चारपाई के निचले फश पर एक तिमन्माती लालतन जल रही थी जिसकी रोशनी भीतर के कमरे में भी थोड़ी सी ही जाती थी । लालतन की बत्ती तब तक जलान के विचार से धीमी कर दी गई थी ।

आधी रात क लगभग जब दाना कमरा क लाग सा रहू थ वधरा बिडकी क सकीण माग स भीतर घस आया। न माऊम कौन से रहस्य पूर्ण डग स उसन पीतल के बत्तन को गिराया नही जब कि पीतल का बत्तन बिडकी में पूरी तौर से समाया हुआ था। आदमी की चारपाई के चारा ओर उसने चक्कर बाग और भीतर घुसकर बीमार स्त्री को मार डाला। सोनवाल उस समय जग जब वधरे न अपने शिकार का बिडकी से बाहर उठाकर ले जात क प्रयास में पीतल क भारी बत्तन का फल पर घडाम स गिरा दिया।

जब लाल्टन की बत्ती ऊपर की गई तब बीमार स्त्री बिडकी के नीचे सिमटी-सिकुटी पडी निहाई थी और उसने गले में चार बड़ कींग के बिहू थ।

एव पठाही न जिसकी पत्नी उस रात का परिवर्मा के त्रिए गई थी इस घटना क विषय में मुझस पहा, वह स्त्री ज्वर से बहुत बीमार थी और उसकी हालत बहुत खराब थी आगका यही थी कि वह मर जाती। इसलिए यह भीमाग्य की ही बात हूँ कि वधरे न अपने शिकार के त्रिए उस ही चुना।

*

*

*

दा गूजर अपन तीस भसा के टोल का एक घरान से दूसरे घरान का लिए जा रहे थ। व दोनों भाई थ। उनके साथ बड़े भाई की वारह वर्षीया लडकी भी थी।

उस स्थान क लिए वे दोनों अजनबी थ। या तो उहान आदमखोर क बारे में सुना नही था या सम्भवत यह बात अधिक ठीक होगी कि उहान यह साबा हागा कि भसा स उन्हें सराग मिलगा।

सडक के निकर और ग्यारह हडार पीट की ऊचाई पर समतल भूमि की एव सकीण टुकडी थी जिसक नीच हसिया क आनार या घदी से

बनाया हुआ खत था। खेत एक चौपार्च एकर के बराबर था। गत बहुत ज़िना से बड़ा पड़ा था। दाना भाइया न अपने ठहरन के लिए वह स्थान चुना और चारा आर मे धिरे जगत् न उहोन खूट घाट खेतों न गाठ लिय और एक लम्बी पक्ति में उनन भसा को बाध दिया। सायकाल का लडकी न भाजन तयान किया और मदन गाया। सडक और भसो के बीच जो सक्तीण भूखड था उम पर तीना न कम्बल बिछाए और सो गम।

रात अधरी थी इतनी अधरी कि हाया हाय दियाई न पन्ता था। बस चारा आर अघकार का साभ्राज्य था। प्रात वाग के लगभग दाना भाई भसा के घट वजन और डरी भसा के फकारन से जग गय। अपन लम्बे धनुभव से वे समझ गए कि भसा की इस प्रकार की आघाज से स्पष्ट है कि बहा काई मामानारी जीव है। दोना न लास्टन जलाई और भैसों को शान्त करन और अगर किसी न रस्ती तोड घाटी हा ज़ो उम बाधन को गए। दाना भाई कुछ मिनटा के लिए ही अपन धयन-स्थान से गए थे और जब वे लौट ता उहान देखा कि लम्बी जिस व माता छोड गए थे गायब है। जिम कम्बल पर वह सो रही थी उम पर काफी मून फग हुआ था।

प्रवाग हात पर लडकी के पिता और चाचा खन क खाज पर बरे। खाज बधी हुई भैसा की पक्ति के चारा आर हाकर मक्तीण खत के पार नीच ढलाव की ओर गया तथा वही पर बघरे न लडकी को ला लिया था।

लडकी के चाचा न इस विषय में बरुण मुद्रा से कहा 'साहब मरा भाई अगुम नधन में पैदा हुआ था क्याकि उमके काई लडका नहीं ह। यही एक लडकी थी। लडकी का जल्दी ही विवाह होत वाग था और लडकी से ही उस आग थी कि समय पाकर उसके लडका होगा जो मेरे भाई का उत्तराधिकारी बनगा। बघरे न उमे पूरी तरह लूट लिया।

अनधरत रूप से मैं एमी घटनाएँ जित सनता ह क्योंकि उस बघरे ने



कमायू की एक नदी और
वहाँ क मनाग्म
प्राकृतिक दृश्य
[प १६

था भी ज्ञान हो जाता ह । पहल पहल जब मनें आत्मखोर के चिह्नो का दखा था तब मनें घट गौर से परीक्षा की थी और मुस मालूम हो गया था कि वह नर बघरा है तथा उनकी जवानी डल चुकी है और आकार में साधारण बघरो से घट काफी बडा है ।

ज्याही म उस प्रात बाल आत्मखार की खोज का घरा म समझ सका कि वह मुझसे कुछ ही मिनट पहल घरा था और मद तथा समान गति से जा रहा था ।

सडक पर उस अबसर पर बाईं यातायात न था पर चूंकि सडक छोट और बड़ माले से घूम फिर कर गई थी और सभवत बघरा दिन में बाहर न घरन के नियम को भंग कर दे इन कारण म हर एक कोन का सावधानी से देखता आग बड़ा । एक मीठ आगे जाकर मनें देखा कि बघरे न सडक छोड़ दी है तथा गाव की ओर की सघन झाडिया के जगल में प्रवण कर गया है ।

जिस स्थान पर बघरे न यात्रा-भाग छोडा था वहा से सी गज पर एक छोटा खेत था जिसके बीचो बीच काटा का एक बाडा था । उस को खेत के मालिक न इसलिए बना दिया था ताकि भेड़ा पर लदान करन बाल लोग घहा डरा डाले और उस खेत की उबरा शक्ति बड । उस बाड में भेंडों और बवरियों का एक झुड था जो गत सध्या का वहा आया था । झुड का मालिक एक स्वस्थ ब्यक्ति था और उसकी मुलाकृति से प्रकट था कि लगभग अर्धशताब्दी से वह तीथ-यात्रा भाग पर सामान डोन का काम करता रहा है । जब म वहा पहुंचा तो वह अहात के दरवाजे से झांकर हटा रहा था । मेरे प्रश्ना के उत्तर में उसन कहा कि उसन बघरे को तो नहा देना पर ठीक सूर्योत्प के समय उनके दो कुत्त भाके थ और कुछ ही मिनटा बाल यात्रा-भाग के ऊपर जगल में फाकड बोला था ।

जब मनें बूढे लदान बाठ म पूछा कि क्या यह अपना एक बकरा

बचन का तयार हूँ तब प्रत्युत्तर में उमन पूछा कि मैं उस क्या चाहता हूँ। जब मन उस बताया कि मैं उस आदमखार के लिए साधना चाहता हूँ तो वह अज्ञाने से बाहर आया द्वार पार भ्रंकर रत्ना मरी मिगरेट स्वीकार की और यात्रा माग की बगुलवाली बट्टान पर बठ गया।

कुछ दर तक हम मिगरेट पीन रह पर मन प्रान का उत्तर उमन अनी कुछ नहीं दिया पर मोड़ी ही दर घाद बढ़ बाला 'साहब आप निश्चय यह ही है जिनके धार में मैंने भदरीनाथ से निकल बाल अरन गाव से लगा कर महा तक मुना हूँ और महा दुख हाना हूँ कि आप अरन घर का छाड कर महा तिरसक काम के लिए आए हुए है। प्रनात्मा जिनन कि इस इलाक में इतनी दया की है वह जानवर नहीं है जिन गान्गी मा छरें या किनी और साधन से जिस आपन या आपस परल जा कुछ कर चुक है मारा जा सकता है। अरनी बात के प्रमाण में आपका एक कथना गुनाऊगा तथा दूसरी मिगरेट पीता रूगा। यह कथनी मुझम मरे पिता न बही थी और यह सर्व विन्ति है कि मेरे पिता न बना शूठ नहा बाला। बहानी इस प्रकार है बात तब की है जब मरा अमनहा हुआ था और मर पिता मुवा था। उस समय एक दुष्ट आमा हमारे गाव में प्रकट हुई थीक उस प्रतापकी भाति जा इस दंग का बदना पहुवा रही है। मव लाग कहन था कि वह एक बधरा था। पुनर स्त्री और उरब अरन घरा में ही मार गए और उन जानवर को मारन के लिए मव प्रयत्न किए गए जैन अब किए जा रहे है। फल लगाए गए माहूर निगानबा पड़ा पर बठ और बघर पर गान्गी और छरें चलाए गए, जब उस मारने के मव प्रयत्न विफल हुए तब मूयान्त और मूयान्त के बीच कोई भी अरन घर से बाहर निकलन का साहस न करना था।

तब मेरे पिता के गाव के पव और पान उडाड के गाव के पवा न एक पचापड करन की आज्ञा दी और जब इच्छु हा गए मव पवा न

पचायत का सर्वाधिक बरखे बहा 'हमलोग यही पर इस आदमखार बघरे से पिठ छानन के लिए नया ढग निकालन को एकत्र हुए ह। तब एक बूड़ा जा श्मान घाट से फौरन ही आया था जिसका नाती पिछली रात को मारा गया था उठा और उसन बहा 'वह बघरा नहीं था जो मेरे मकान में घुसा और मरे बगल में माते नाती को मार डाला बरन वह हमार ही समाज में से वह ब्यक्ति ह जब उस मानव-मास खान की इच्छा होती ह ता बघरे का रूप धर लता है। एसा जीव उन प्रयाना में नहीं मारा जा सकता जिनका अब तक प्रयाग हाता रहा है। वह ता अग्नि द्वारा ही मारा जा सकता ह। मेरा गक उम माट साधू पर ह जा दूट मन्त्रि के निकट आपठ में रहता ह ।

'इस बात को सुनकर बडा गोर मचा और कुछ न बहा कि नाती क दुख में बुद्ध की अबल मारी गई ह। कुछ न जाँर देकर बहा और स्मरण लिलाया कि घुन्डा ठीक बहता ह क्याकि बघरे की मार ठीक उमी समय से गुरु हुई ह जब से साधू गाथ में आया। साधू की यह भी आदत ह कि बघरे की मार के अगले दिन वह धूप में अपनी चारपाई पर पठा साता रहता ह।

जब मीटिंग में शान्ति स्थापित हुई तब मामले पर काफी बिचार हुआ और पचायत ने यह फसला किया कि फौरन ही कोई ब्रदम नहा उठाना चाहिए पर साधू की गतिविधि पर ध्यान रखना चाहिए। उपस्थित लोगों ने अपने आपका तीन दगा में विभाजित कर लिया। पहले दल का काम था कि वह साधू पर तब तक नजर रखे जब तक बघरे की दूसरी मार की आगवा हो। वान यह थी कि नियत अवधि में ही बघरा गाथ में मार करता था।

'राता में जब पहल और दूसरे दल निगरानी पर थे साधू ने अपनी कुटिया महा छाबी।

मेरे पिता तीसरे तलक माथे थ और रात पड़ने ही वे चुपचाप जमन स्थान पर जा बैठे। धीरे ही कुटिया का त्रवाजा धीरे धीरे मुला और माधू उसमें से निकला और रात में विलीन हो गया। कुछ घण्टा के बाद पहाड़ के ऊपर की आर से एक कौयला वनातक की झाड़ी की आर से चामू के सहारे कौयलातीनी उत्पीड़ित आवाज आई और उसके बाद फिर धार घाति छा गई।

उस रात का मेरे पिता के दर के किसी व्यक्ति ने आंस तक न था की और प्राची में जैसे ही उठा न खगडाई ली उ हान देखा कि माधू तीस गति से कुटिया की आर बढ़ा चला जा रहा है। उसके हाथा और मुह से धून बह रहा था।

जब साधू अननी कुटिया से प्रवृत्त कर गया और जब उसने किवाड़ बन्द कर लिए तब उसके रखवाल उसकी कुटिया तक गए और चीखट से लग कुड में जुड़ी लगी। तब मेरे पिता के तल का प्रत्येक व्यक्ति साधू के पास के दर पर गम और सूखी घास का एक एक दर छपर के लीटे और उस प्रातकाल जब सूर्योदय हुआ तब उस कुटिया के स्थान पर बस मुलगनी हुई रात थी और उसी दिन से हमारे का माग भी बन्द हो गई।

‘इस इलाक में अभी तक पहा के अनप साधुओं में से किसी पर भी किसी का सन्दर्भ नहीं हुआ था। पर जब किसी पर सन्दर्भ होगा तब जो तरीका मेरे पिता के समय में व्यवहृत हुआ वह पहा भी काम में लाया जायगा और जब तब ऐसा नहीं होता तब तब गडबाल के लोका का यातनाएँ भुगतनी पड़ेंगी।

“आप मुझसे पूछते हैं कि क्या मैं अपना बरत बदलूंगा? माहव मैं बदला नहीं बदलूंगा क्योंकि विना के लिए घर पास कोई बदला नहीं है। पर अगर मेरी कड़ाती मुनन के बाद भी आप किसी जानवर का उमक लिए बांधना चाहते हैं जिन आप जानमलार धरत ममनन है ना मैं आपका

म एकान्त और नीरव स्थाना में इतना रूठा हू कि मैं शायद ही कल्पना में भी स्वप्न देखता। जो मास मैंने रुद्रप्रयाग में कई बार दिन और रात बैठकर बिना एक अवसर पर ता मैं २८ रात पुली की निगहवानी करने बठा रहा गाव की आर आनवाल रास्ता को देखते भरा तथा पशुआ की लागी को देखते-देखते मैं बना-बनी आत्मभार की कल्पना कर बैठता कि वह बड़ा हल्के रंग का पंगु हू जिसका गरीर बघरे का और सिर दल्य का।

यह भी कल्पना आई जब मैं रात भर बिठा देख रहा था कि दल्य लडवता और हिलता जुलता एक विचित्र जट्टहास के साथ मरी आर आया और उसको उठू बनान के भरे निरपेक्ष प्रयत्ना पर हमना हुआ बढ़ा और उस समय की आगा मैं उसने हाठ चाट कि एक क्षण की असावधानी में जब उस भरे गळ में दात गाड़न का मनोवाछित अवसर मिलता।

यह पूछा जा सकता है कि जब गडवाल के साथ रुद्रप्रयाग के आत्मखोर बघरे से उन्पीड़ित और खतर में थे तब आखिर सरकार क्या कर रही थी। मैं सरकार का वहील नहीं हू इसलिए गवनेमट की आर से कहन का भुझ कोई ठक नहीं हू पर दस सप्ताह उस इलाक में घूमन के बाद—और उन अवधि में मैं सैकड़ा मील पदल चला और भय-ग्रस्त इलाक के अधिवाग गावा में गया—मैं इग वात का दाव से कह सकता हू कि सरकार ने उन खतरे का दूर करन के लिए जो कुछ उसकी शक्ति में था किया। इनामा की घोषणा की गई। स्थानीय आगा का विश्वास था कि वह इनाम नकल रूपया में कम हजार रूपय और दस गाव साथ पुरस्कार में थे। ये इनाम और पुरस्कार गडवाल के चार हजार छाइसेंस-धारिया में मैं प्रत्येक का आदमखार का भावा घातक बनान को काफी प्रेरणामूलक थे। अच्छी ननखदाड़ा पर चुन शिकारी नौकर रख

गय और उनसे चायदा किया गया कि अगर वे सफल हूँगा तो उन्हें विंगप पुरस्कार भी मिलेगा। चार हजार लाइसेंस-धारी तो गन्वाज में थे ही पर उनके अतिरिक्त तान मों से अधिक बन्दूकों के विंगप लाइसेंस इसलिए दिए गए ताकि आत्मसंरक्षण मारा जा सके। लसडाऊन स्थित गन्वाली सनिका को आज्ञा दी गई कि जब वे छट्टी पर जाय तब राइफल साथ लन जाय या उनके अफसरान उनका गिकार खतलन के हथियार लिए। सम्पूर्ण भारत के गिकारिया मे समाचारपत्रा द्वारा अपील की गई कि वे हम आत्मसंरक्षण को पकडन में महायता द। दजनो ही दरवाजनमा कटघरे बनाए गए जिनमें जीवित बकर रख गए। गाद को आनवाल् रास्ता में जिनसे यह आदमसंरक्षण आया-जाया करता था एस पिजड उगाए गए। पन्चारिया और अन्य सरकारी अफसरों का जहर इसलिए बाँटा गया कि जब वधरा किसी मनुष्य का मार तब उसकी लाग में वे जहर डाए हँ। स्वय सरकारी अफसर अपन काम में समय निकाल कर तथा बडा खतरा उठा कर उस आदमसंरक्षण की तलाश में लग रहते थे। इन तब अनक तथा सामूहिक प्रयत्नाया कुल जमा यह नतीजा निकला कि कघरे की पिछली टाग के पत्र की गद्दी में जरा-सी सराग बन्दूक की गाणी से हा गई और उमक एक नाधून की भाग का एक छाटा टुकडा उड गया। दूसरा नतीजा यह हुआ कि गढ़वाल के डिप्टी कमिश्नर न अपन कागजात में दन्तराब किया कि अब एक रिमी बुरे असर की अपेक्षा बधरा ठाठ स अपन जीवन-यापन में उठा ह और जा जहर मानवी लाग द्वारा उमक पट में पहुचा ह उससे उत्तजना ही मिली प्रतीत हानी ह।

सरकारी गन्वा में तीन दिग्बन्ध घटनाया का उत्पन्न ह त्रिन्ट म सार रूप से दे रहा हूँ —

प्रथम समाचारपत्रा द्वारा गिकारिया स जा अपील की गई थी उसक उत्तर में दो युवक बधरा अफसर सन १९३१ में दन्प्रयाग आए। उनरा

निश्चित ध्येय था कि वे आदमखोर का मार। इसका क्या कारण था जा उहाँन माचा कि बधरा ह्मप्रयाग क सग व ब्रिज से हाकर अल्कनदा क एक किनारे स दूमरे किनारे की आर जाना ह म नहीं कह सकता। कारण कुछ भी हा उहोन यह निश्चय किया कि वे अपन प्रयत्नों को उसी पुल पर सीमित रखेंगे और जस ही बधरा रात में पुल पार करेगा व उम मार देंगे। झूठ हुए लोट क रम्मा का पुत्र के एक मिरे से दूसरे तक ले जान क लिए पुल क हर छार पर मीनार ह। इसलिए एक मयक गिवादी नन्ही की बाई ओर की मीनार पर बठा और उमका साथी नन्ही की गई आर की मीनार पर बठा।

इम प्रवाग व उन मीनारा पर दा माम बठ हागे कि एक रात का बाए किनारे की मीनार पर बठ आत्मी न अपन नीच महाराव स होकर बधरे का पुल पर आन र्था। जब तक बधरा काफी पुल पर न आ गया वह प्रनीसा करता रहा और तब एकदम उमन फायर किया और बधरा जस ही पुत्र पर न भागा जाए किनारे की मीनार पर बठ आदमी न ६ कारतूस उम पर दाग लिए। अगले दिन पुत्र क ऊपर छून पाया गया और पहानी पर जिम आर बधरा गया था वहा भी छन मिला चूकि यह खयाल किया गया कि घाव घातक हाग कई जिना तक बधरे की तलाश की गई। कहा जाना ह कि घायल हान क २ माह बाद तक बधरे न कोई मनुष्य नहा मारा।

यह बात मुसम उन लागे न कही जिन लागे न साल फायर स्वय मुन थ और घायल पग की प्राप्ति क लिए जिहान याग दिया था। दाना गिवागिया का और मुझ खबर दन वाला का खयाल था कि पत्नी गाली बधरे की पीठ में लगी ह और ममदन बाद की गालिया में म कुछ उमके मिर में लगी ह और दमी कारण बठ परिधम के माम विस्तृत खत्र हानी रही। मन की छात्र की जा बातें मुय बढाई गई उनस मरी राय

यह हुई कि शिकारी यह साचन में छाने थे कि बघरे को उतारन उसने सिर और शरीर में चोट पहुँचाई है क्योंकि खून की खोज जो मुझ बताई गई उसमें यह ही सम्भव था कि बघरे के पर में ही चोट आई है और बाद में यह जान कर मुझ बड़ी प्रसन्नता हुई कि मैं जिस नतीज पर आया वह ठीक था और धाएँ किनारे की मीनार पर बड़े आदमी ने जो गाली बलाई उसमें बघरे की पिछले पाव की गद्दी में बबल छारा हुई थी और उसका नाखून का एक भाग बट गया था और धाएँ किनारे की मीनार पर बठ आदमी की सब गोल्या खाली गई थी।

दूसरे लगभग तीस बघरे जब दरवाजानुमा कटघरा में पकड कर मारे गए तब एक बघरा पकटा गया। हर एक का विश्वास था कि यह बुख्यात आत्मस्रोत बघरा है। पर हिन्दू जनता उसका मारन के लिए तयार न थी क्योंकि उन्हें इस बात का डर था कि उनकी प्रतात्माएँ जिनको बघरे ने मारा था उन्हें सतायेंगी। इसलिए एक भारतीय ईसाई को बुलाया गया। यह ईसाई तीस मील दूर के गाँव में रहता था और घटनान्तर्गत पर उससे आज के पूर्व बघरा कटघरे में रास्ता खाद कर भाग गया।

तीसरे एक आत्मी को मारन के बाद बघरा अपनी मार के माथ जगल के एक छाँट-से पर अलग से टुकड़ में उठा था। अगले दिन जब आत्मी की तलाश के लिए खोज की गई तब बघरा जगल से जाता हुआ दिखाई पड़ा। पाँदा पीछा किया जान के बाद लगातार बघरे का एक गुफा में घुसना देखा। गुफा का मुँह ढाटा से बन्द कर दिया गया और उस पर चट्टानों के बड़े-बड़े टुकड़ गड़ दिए गए। प्रतिदिन जगल की भौड़ हम दृश्य को देखन जाती। पाँचवे दिन जब लगभग पाँचमी आत्मी बहा एकत्र से एक आत्मी जिगका नाम नहीं दिया जाता पर रिपाट में उसे प्रमाथगारा कहा है आमा और बड़ी घुणापूर्वक उसका कहा इस गुफा में बघरा नहीं है—यह कहत हुए उसका गुफा के मुँह से ढाटा अलग

कर दिए। ज्योंही उमन काँट उठाय त्योंही से ही गुफा के भीतर से बघरा झपट कर बाहर निकला और लगभग ५ दाल्मिया की भीड़ में होकर मज से भाग गया।

य घटनाएँ तब हुईं जब बघरा अस्मिखोर हा गया था। अगर बघरा पुल पर कटघर में मारा जाता मा गफा में ही मुहर लगा दी जाती तो कई सौ आदमी नज़ी मार गए होते और गडवान बरसा की याचना से बच जाता।

आगमन

सन् १९२५ में ननीताल के चालेट थियटर में एक खेल दख रहा था। खेल के अवकाश (इटरब्र) में मुझे हठप्रयाग के आदमखार की प्रथम बार निश्चित खबर मिली कि गठवा में एक आदमखार बघरा है। उस जानवर के विषय में समाचार पत्रों में मनें खबर भी पढ़ी थी। पर यह जानकर कि चार हजार से ऊपर लाइमसवाले गढवाल में है और केवल ७० मील की दूरी पर लंसडाउन में अनक उत्कण्ठित शिकारी है मनें अनुमान लगाया कि बाघ के मारने की उत्सुकता में माना लोगो की घनापल हो और एसी दशा में वही एक अजनबी का कोई स्वागत न होगा। चालेट थियटर में मैं एक मित्र के साथ पय छ रहा था और मेरे आचम की सीमा न रही जब मनें यू पी के तत्कालीन चीफ सक्स्टरी (और बाद को आसाम के गवर्नर) माइकल कीन द्वारा लागा व समूह में आत्मछार के तार में बहुत हुए तथा आग्रह करत हुए सुना कि लोग उस वघरे का मारने को जाय। उस समूह में एक व्यक्ति न मुझसे जो बात की और जिसकी बात में तार्किक हुई उससे मुझ बात हुआ कि माइकल कीन की अपील को लागा न उस्ताह के माय स्वीकार नहीं किया। लोगो न जा बात कही वह थी 'ऊँह उस आत्मछार की शिकार को जाया जाय जिसने सी आदमी मार लिय है।

अगले दिन प्रातःकाल में माइकल कीन से मिलने गया और जा वानें मुझ मालूम करनी थी कर ली। माइकल कीन मुझ ठीक नही बता सक कि आत्मछार का दौरदौरा किस इलाक में है। उहान हठप्रयाग जान और इवत्सन से बात करने की राय दी। घर पहुंचने पर मुझ अपना मंत्र पर इवटसन का एक पत्र मिला।

इवटसन—अब सर विलियम इवटसन और वाद थो यू पी क गवर्नर के परामर्शदाता—की नियुक्ति हाल में ही डिप्टी कमिश्नर के पद पर गढ़वाल में हुई थी और उनके पहले कार्यों में से एक कार्य यह था कि अपने जिले का उम आदमखार के मय से मुक्त करने का प्रयत्न करे। इसी मिशनिल में उन्होंने मस पत्र लिखा था।

मैंने सीधे ही तयारी कर ली। रानीवत घदरी और कणप्रयाग होते हुए मैं दसवें दिन की शाम को नगरामू के निकट डाक बगल पर आया। ननीताल से चलते समय यद्यपि यह पता नहीं था कि इस बंगले में ठहरने के लिए आवश्यक होगा कि मैं परमिट से सुसज्जित हूँ और वहाँ के डाक बगल के रखवाले का यह आदेश था कि यह किसी को वहाँ तक न ठहरने दे जब तक कि ठहरनेवाले के पास परमिट न हो। इसलिए मैं गढ़वाली जो मर मामान के लिए मर साथ थे मरा नौकर और मैं दो मील और आगे कणप्रयाग की ओर का बट जब तक कि हम रात को टिक सकें योग्य उचित स्थान पर न आ सकें।

जब मर आदमी पानी और लकड़ियाँ जिन में व्यस्त थे और मेरा नौकर खाना बनाने का स्थान तयार करने का प्रयत्न इकट्ठा कर रहा था मैंने कुल्हाड़ी उठाई ताकि मैं रात बिताने के लिए कान्ठार झाड़ी का बाड़ा बनाने के लिए काट सकूँ। उस मील ऊपर ही हमें चढ़ावनी लेनी पड़ी थी कि हम आदमखार के क्षेत्र में प्रवेश कर गए हैं। मायकाल का भोजन बनाने के लिए जम ही आगे जल्दी उसके छोड़ी ही देर बाद ऊपर पहाड़ पर स्थित गाँव से एक उत्सर्जित पुकार हमारी ओर आई। हम से पूछा जा रहा था कि हम कुछ मैदान में क्या कर रहे हैं और जहाँ हम थे वहाँ रहे तो हममें से कोई न कोई आदमखार द्वारा मारा जायगा। जब हमको बल्याणकारी चढ़ावनी मिल चुकी और उम चढ़ावनी दिन में उभरने एक बड़ा सतरा उभरा था क्योंकि उम बरफ अबरा हो गया था। माया सिंह न जिसे

कि पाठक पहले ही मिल चुके ह* यह इच्छा सब की आर से प्रगट की
'साहब हम यहा टिकेग क्योकि सम्पूर्ण रात रोशनी रखन के लिए लाल्टन
में ययष्ट तेल ह और आपक पास अरनी राइकू ह ।

अगले दिन हम रुद्रवाग आ गए और हमारा उन आदमियों द्वारा हादिक
स्वागत हुआ जिनको इत्रसल न हमसे मिलन के लिए आदेश दे दिया था ।

* लेखक की 'बमार्बू न आदमखोर' पुस्तक में चीपट न 'गर गीपक
लक्ष पड़िए ।

तहकीकात

म संप्रयाग म मणाह रहा पर म पाठना का वहा के बायक्रम की उन त्तिना की त्तिनचपा देन का प्रयन नहा करुगा क्याकि पत्त तो इतने त्तिना क वात्त उमका उल्लस करना ही कठिन ह और इसम पाठक उस उल्लस म ऊत्र जायग। म ना कवत्त अरनी चचा अपन अनुमवा में स कुछ अनभवों का त्तिन नक ही मीमित रखुगा। कुछ व अनभव मेरे अपन एकाकी त्तिनचपा क मवध में हाग और कुछ स्वत्सन क माधवाले। पर उम उल्लस म पहल म लगा का उम क्षत्र क विषय म कुछ जानकारी कराना चाहना ह जिम क्षत्र में आत्त बग्म नक उम वधर का दोर-गौरा रहा और जिमकी गिकार में मनो दम मणाह विनाए।

संप्रयाग क पूर्व की आर क पहाल पर अजर काई चड ता उमका उस पांच सौ वग मील प्रसंग क अधिकाग भाग का लखन का अवसर मिग्गा जिममें संप्रयाग का आत्मछार अपना मानवी गिकार करता था। यह क्षत्र लगभग दो समान भागा में अलखनला द्वारा विभाजिन किया जाना ह। अलखनला संप्रयाग हानी दुई संप्रयाग क दक्षिण म बहती है और घना पर मन्नाकिनी म वह मिग जाती ह। मन्नाकिनी उत्तर और पद्विचम स आनी त। दो नलिया क बीच त्रिमुजाकार क्षत्र अलखनला क वीए किनारवात्त क्षत्र की अगला कम ऊचा और ढलवाँ ह। इसीलिए दो नलिया क बीच क त्रिमुजाकार क्षत्र में दूमे की अपशा अधिक गात्र ह।

संप्रयाग क पूर्वी आर क पहाड़ पर चडन स ऊच पहाडा की आकृति क आर-आर एक पक्षिया का त्रम दूरी पर लियाई पडता ह वह वृषि भूमि ह। यह पक्षिया मड़वन्ती वष हुए तत्र ह ता कि चौडाई में एक पत्र म लगाकर पषाम और कुछ ख्याग गत्र त। निवामम्यान हर जगह

कास्त की जमीन व ऊपरी नोन पर बन है। मकान बड़ा इसलिए बनाए जाते हैं ताकि आबारा और जगगी पशुआ स खती की रखवाली हो सक। खता के चारा तरफ झाड़िया या बाड नहीं है अपवात् स्वरूप ही भल कहा खता व चारा आर झाड़िया और बाड हा। जमीन पर जा प्राकृतिक हरियाली के भूरे और हरे टुकड दिखाई पडते ह के घास पूरित भूमि और जगल ह। पहाड की ऊचाई से यह भी दृष्टिगाचर हागा कि कुछ गाँव घास स सम्पूणतया घिरे ह और शप सम्पूणतया जगल स घिरे ह माना जन्धान घास और जगल की करघनी पहिन रखी हो। क्षत्र पर नजर बान स सम्पूण भूमि ऊबड-खाव और नठार प्रनोत हाती ह और उसमें अनगिनत गहरे माल और चट्टाना की चाटिया ह। इत इलाक में बेवज दा ही सडकें ह। एक ह्प्रयाग म आरम्भ हाकर क्शरनाथ का जाती ह और दूसरी मुख्य तीथ-यात्रा-भाग बदरीनाथ का। इन पक्तिया क लिखते समय तक दोना माग सकीण और ऊबड-खावड थ और उन पर स पहिएवाला कई बाहन कभी नहा निकला।

ह्प्रयाग व आत्मछार न १९१८ और १९२६ व बीच जितन मनुष्य मार उनकी सख्या गाँवा व नामा के सामन आग दी जाती ह।

इन् बात का मानना अधिक औचित्यपूण ह कि खती स घिरे गाँवा की अपना जगला स घिरे गाँवा में अधिक मनुष्य मारे जान चाहिय। पर अगर बड आत्मछोर गर होना ता यह बात नि सन्ह ठीक बैठती पर आत्मछार बघरे क लिए जा बेवल रात्रि में ही अपना कुत्सित काय करना ह झाडी या राव का हागा या न होना कई मानी नहीं रखता। फिर भी एक गाँव की अपक्षा किथी दूमरे गाँव में बघरे न अधिक मनुष्य मारे—उमका कारण कयत् यह ही ह कि जिन गाँवा में गग सतक और मावधान रह वहा अपेक्षाकृत बघरा कम हत्याएँ कर सवा।

तहकीकात

म रुद्रप्रयाग दम मप्ताह रहा पर म पाठका का बहा के कार्यक्रम की उन त्तिा की त्तिचर्चा देन का प्रयत्न नहा करुगा क्यकि पहल तो इतन दिना के बाद उमका उल्लेख करना ही बठिन है और इसम पाठक उस उल्लेख म ऊत्र जायग। म तो कवल अपनी चर्चा अपन अनुमवा में से कुछ अनुभवा का लिखन तक ही सीमित रखुगा। कुछ व अनुभव मेरे अपन एकाकी त्तिचर्चा क मवध में हाग और कुछ इवत्सन क मायवाले। पर उम उल्लेख मे पहल में लागा का उम क्षत्र के विषय म कुछ जानवारी कराना चाहता हू जिम क्षत्र म आठ दरम तक उम बघरे का दौर-दौरा रहा और जिसकी गिकार में मन दम मप्ताह बिताए।

रुद्रप्रयाग क पूव की आर क पहाड पर अगर कोई पठ ता उसरो उस पाँच सी बग मील प्रदेश क अधिकांश भाग का खन का अवसर मिलगा जिममें रुद्रप्रयाग का आत्मस्वार अपना मानवी गिकार करता था। यह क्षत्र लगभग दा समान भागा में अलकनन्दा द्वारा विभाजित किया जाता है। अलकनन्दा कणप्रयाग होती हुई रुद्रप्रयाग के दक्षिण म बहती ह और वही पर मन्गकिनी म बह मिल जाती है। मदाकिनी उत्तर और पश्चिम से आती ह। ता नदिया क वीष त्रिभुजाकार क्षत्र अलकनन्दा के वीए विनारवा क्षत्र की अपेक्षा कम ऊचा और ढलवाँ ह। इसीलिए दा नदिया क बीच क त्रिभुजाकार क्षत्र में दूमरे की अपेक्षा अधिक गाव ह।

रुद्रप्रयाग क पूर्वी आर क पहाड पर चढन से ऊच पहाडा की आकृति क आर-पार एक पत्तिया का क्रम दूरी पर दिगाई पडता ह वह कृपि भूमि ह। यह पत्तिया मड़वती बघ हुए खत ह जा कि चौगाई में एक गड म लगाकर पवाम और कुछ ज्यादा गड ह। निवामन्यान हर जगह

कामत की जमीन के ऊपरी कोने पर बर ह। मकान वहा इसलिए बनाए जात ह ताकि आबारा और जगली पगुआ स खती की रखवाणी हो सके। खता के चारा तरफ झाडिया या बाई नही ह अपवाद स्वरूप ही भल कहा खता के चारा ओर झाडिया और बाड हो। जमीन पर जो प्राकृतिक हरियाली के भूरे और हरे टफड दिखार्ई पढत ह वे घास पूरित भूमि और जगल ह। महाड की जँचाई से यह भी दृष्टिगाचर हागा कि कुछ गाँव घास से सम्पूणतया घिरे ह और गय सम्पूणतया जगल से घिर ह माना उहोन घास और जगल की कएधनी पहिन रखी हो। क्षत्र पर नखर बालन से सम्पूण भूमि ऊबड-खावड़ और कठोर प्रनीत होती ह और उसमें अनगिनत गहर नाल और घट्टाना की चाटिया ह। इस इलाके में केवड दो ही सड़के ह। एक रुप्रयाग से आरम्भ होकर बंदारनाथ को जाती ह और दूसरी मुख्य तीभ-यात्रा माग बदरीनाथ को। इन पक्तिया क लिखते समय तक दोना मार्ग सबीर्ण और ऊबड-खावड़ थ और उन पर स पहिएवाला कार्ई वाहन कभी नही निकला।

रुप्रयाग क आदमखोर न १९१८ और १९२६ के बीच जितन मनुष्य मारे उनकी सख्या गाबा के नामा के सामन आग दी जाती ह।

इन् बात का मानना अधिक औचित्यपूण ह कि खती स घिरे गाँवा की अपक्षा जगलो से घिरे गाँवा में अधिक मनुष्य मारे जान चाहिए। परअगर बड आदमखार गर होता तो यह बात निःभदेह ठीक बैठती पर आदमखार बघरे के लिए जो केवल राति में ही अपना कुन्मिल काय करता ह शाधी या रोक का होना या न होना कोई मानी नहा रखता। फिर भी एक गाँव की अपक्षा किसी दूसर गाँव में बघरे न अधिक मनुष्य मारे—उसका कारण केवल यह ही ह कि जिन गाँवा में लाग सतक और सावधान रहे वहा अपेक्षाकृत बघरा कम हत्याएँ कर सका।

रुद्रप्रयाग के आदमखार बघरे द्वारा मारे गये लोगो की सूची --
(गांव वार १०१८-२६)

बघरे द्वारा मारे गये लोगो
की संख्या
प्रति गांव पीछ

नाम गांव

६	चापडा
५	काठकी रतूडा
४	विजराकाट
३	नकाट गांधारी बोलडी डडोली कथी भिरमोली गुलाबराय और लमडी
२	बजडू रामपुर मकानी छताली कानी मनाग रीना काई (जोगी) बीरन सारी राना पुनाड तिलनी बाँधा नगरामू ग्वाड मरवाड
१	आसों पीलू भौसाल मागू बजी भरवाडि खमात्रि स्वाडी पलासी काडा धारकोट डगी गनों भगों ववाई बमित भसगाव नारी मटर तमर सत्याण गिबपुरी मान स्यूड कमडा दरमाडी बला बलारुड सोड भसाडी बजनु शीली धारकाट भगाव झाका धुग फवरी बामनकाडई फाग बपगों वामू नाग बमाडी ह प्रयाग ग्वाड काटना भुका कमरा रा पावो भमवाड।

सापिक् योग

मन १९१८	१
सन १९१९	३
सन १९२०	६
सन् १९२१	४
मन १९२२	२४
सन १९२३	२६
मन १९२४	२०
सन १९२५	८
सन १९२६	१४
	१२५
योग	१२५

यह मनो पहले लिखा है कि हृदयप्रमाण का आत्मखार बधरा नर था। अकाली उसकी डल गई था और आकार में ज़येगावृत बडा था। यद्यपि उमर उसकी डल गई थी पर वह बेहद मजबूत था। मासाहागी पंगु के गिवार सलन का स्थान इस घात पर अब बिन रहता है कि उनमें अपनी गिवार का उत्तनी दूर ले जान की बिनती क्षमता है जहा पर वे उम बिना रोक टाक के जा सकते हैं।

हृदयप्रमाण के आत्मखार के लिए सब स्थान समान थे क्योंकि वह अकाली भारी से भारी मानवी गिवार की बहुत दूर तक ले जान की शक्ति रखता था और मरी जानवारी में एक अवसर पर तो वह अपने गिवार का खार मील तक ले गया। इस अवसर पर क्रिमकी से खर्चा कर रहा है बधरे न एक स्वस्थ और पूरी उमर के आत्मी को उसका अरन मखान में ही मारा और दो मील तक उस घन जगल के पहाड की तरफ ररक पर ले गया और फिर नीचे का दूसरी बार जगल की घनी झाडिया में से दो मील और ले गया। इतनी दूर ले जान का कोई कारण भी न था क्योंकि बधरे न उस आत्मी को रात्रि के प्रथम प्रहर में ही मारा था और जगल लिन दापहर से पहले बधरे का पीछा भी नहीं किया गया।

बधरे घ्राण शक्ति हीन होते हैं इसलिए भाग्यमखार बधरा का अपवाद समझ कर आम बधरा का मारना जगल के अर्थ सब पशुओं की अपेक्षा सरल है।

किसी अर्थ पशु के मारने में एतन तरीक़े नहीं बरत जाते जितने बधरो का मारने में काममें लाए जाते हैं। एन तरीक़ा में परिवर्तन इस विचार से हाता है कि बधरा केवल गिकार के शिक से मारा जाता है या लाभ की खातिर। अर्थात् रोचक तरीक़ा शिकार की खातिर मारने का यह है कि उनकी खोज से उनके रहने का स्थान मालूम करके पीछा करके गोरी मारी जाय। अर्थात् शूर तरीक़ा मुनाफे के लिए बाघ मारने का यह है कि जिस जानवर का बधरे ने मारा है उसके मांस में एक छोटा पर अत्यन्त विस्फोटक घम रख दिया जाय। बहुत-से गाव वाला न ऐसा बम बनाना सीख गया है और जब इस प्रकार का बम बधरे के दाँत के सम्पर्क में आता है तो वह धड़के से फटता है और बधरे के जबड़ को उठा देता है। कुछ प्रहारा में तो मौत क्षण भर में ही हो जाती है पर प्रायः अमागा पशु दुःखपूर्ण और तड़प-तड़प कर मौत के लिए बही सरक जाता है। जो ऐसा करता है उनमें इतना साहस नहीं होता कि वे बधरे के खून पर उसकी खोज के लिए जाय।

बधरे की खोज स्थान का पता लगाना पीछे जाना जहाँ तक उत्तम और शिबस्प है वहाँ के आसान भी है। कारण यह है कि बधरा की पांवा की गद्दी बौमल होती है और यथासंभव वह पशुशिकारियों और जगरी जानवारा के रास्ता पर चल्ता है। उनके स्थान का भी पता लगाना कठिन नहीं है। जगल के पशु और पक्षी भी गिकारी के सहायक होते हैं। उनका छिपकर पीछा करना भी आसान है। यद्यपि उनकी श्रवण शक्ति और दृष्टि बड़ी तेज होती है पर साथ ही उनमें कमी है कि उनके घ्राण शक्ति नहीं होती। शिकारी इस लिए अपने लिए वह ही रास्ता चुनते हैं जो उनके लिए सुगम हो। इस बात का खयाल नहीं किया जाता कि हवा किस दिशा से चल रही है।

बधरे की चुपचाप राज और पीछा करने उसके स्थान का पता खलाकर

गिकार के लिए वहा पहुँचन पर राइफल क घोड की अपना कैमरे का बन्दन दवान में अधिक आनद मिलता ह। कैमरे क गिकार में उमे घटा दवा जा सकता ह। जगल में वघरे स दड़ कर बार्द भी मुल्कर और मनोहर पंगु नहा होना। कमरे का बन्दन अपनी तबियत स दवाया जाता ह और उसके रिवाड की शिल् चम्पी कभी कम नहीं होती। राइफल के गिकार में बस एक क्षण घोड का स्वीचना और अगरनिगान ठीक ह तो पुरस्कार की प्राप्ति जिसकी कि सुन्दरगा और मनोहरता दोना ही नष्ट हा चुकी होती ह।

पहली मार

मरे आन से पून रुद्रप्रयाग म इक्टसन न बधरे कं हाँके का प्रबन्ध किया था । अगर यह हाँका सफल हो जाना तो उसमे १५ मनष्या की जानें बच जाती । हाँका ओर के परिस्थितिया जिनके कारण हाँका हुआ उल्लेखनीय ह ।

यात्रा-भाग की एक छाटी दुकान पर एक दिन सायकाल के करीब बन्नी नाथ का जानवाले २ यात्री बने मादे आए । दुकानदार न जब उनकी उर्रत पूरी कर दी तो यात्रिया से आप्रह किया कि वे आग बढ़ जाय और सूचना दी कि आग चार मील दूर चट्टी पर भोजन और सुरक्षित स्थान मिल जायगा । यात्री इस सलाह को मानन को तयार न थ । उन्हान कहा कि वे लम्बा सफर करके आए ह तथा इनन बके ह कि उनसे चार मील न चला जायगा । वे कबल यह ही चाहत थ कि उह भाजन यनान की मुक्ति मिल जाय और साथ ही दुकान स लगे चबूतरे पर सान की आज्ञा । दुकानदार न इन प्रस्ताव का घोर विरोध किया और बताया कि उसकी दुकान पर आत्मखोर प्राय आता ह और खुर् में बाहर सान के मानी हाय मीन का आमन्त्रित करना ।

इन मामले पर गरमागरम बहस हा रही थी कि इतन में ही घटनास्थल पर मयुरा का एक साधू आया जो बदरीनाथ जा रहा था । साधू न यात्रिया का पक्ष लिया और उनकी हिमायत म साधू न दुकानदार स कहा आप अगर इन धर की स्त्रिया का सुरक्षित स्थान दे-ँ तो म आत्मिया कं साथ चबूतरे पर साऊगा और अगर किसी बधर न चाहे घट आत्मखोर हा या चाहे बसा ही लागे का हानि पहुंचाने का साहम किया तो म उसके वान पकड कर दो भागा में चीर कर दो टुकड़ कर दूगा ।

दुकानदार को मजबूरन इस प्रस्ताव स सहमत होना पडा । इसलिए उस दल की दस स्त्रिया न तालेबंद दरवाजे क भीतर एक कमरेवाली दुकान

में धारण ली। दस पुरुष चबूतरे पर एक पकित म लेट गए और साधू उनमें बीच में लेटा।

जब चबूतरे वाले यात्री प्रातःकाल जाग तो उन्होंने साधू को गायब पाया। जिस कमरे पर साधू सो रहा था वह भीड़ डग से इकट्ठा मिला ओड़न की जो आदर थी वह चबूतरे पर खिचड़ा पड़ी मिली जिस पर खून का घाव था। आदमिया को उत्तेजित बड़बड़ाहट की आवाज से दुकानदार ने दरवाजा खोला और वह एक नजर में ही समझ गया कि क्या घटना घटी है। अब मूरज निकल आया तब उन आदमिया के साथ दुकानदार नीचे पहाड़ की खून के स्रोत पर गया। तीन सताक पार एक सीमा की दीवार पर वे पहुँचे वहाँ पर उन्होंने दावार पर साधू को मरा पाया। साधू के शरीर के निचले भाग को बधरा छा गया था।

इस समय खटप्रयाग में इबटसन का कयाम था। वह हम कालिदा में य कि आत्मछार को मार सकें। इबटसन के कयाम के दौरान में बधरे ने कोई मार नहीं की थी इसलिए इबटसन ने निश्चय किया कि बधरे के सम्भावित छिपाव के स्थानों में हाँका किया जाय। वह स्थान अल्बनदा के दूर की ओर की था जिसके वार में स्वामीय छाया का समाल था कि आदमछार दिन का समय वहाँ लेटकर गुजारता है। इसलिए जब बीन यात्री छाटी दुकान की ओर अपना रास्ता नाप रहे थे तब पन्वारीलोग और इबटसन के स्ट्राफ के अन्य सम्म्य पास पहुँच के गाव में घूम कर चेतावनी दे रहे थे कि वहाँ के लिए तैयार हो जाय और हाँका लगले दिन प्रातःकाल होगा।

अगले दिन प्रातःकाल जल्दी ही नाप के बाद अपनी पत्नी और मित्र के साथ जिसका नाम मुझ यात्रे नहीं है इबटसन ने जनन स्टाफ के कुछ आदमिया और लगभग दस सौ हथियारों के साथ खून के पुल से अल्बनदा का पार किया और लगभग एक मील ऊपर के पहाड़ पर गए और हाँका के लिए अपने स्थानों पर बैठ गए।

हॉका अभी शुरू हुआ ही था कि हरकाण साधू के मारन की खबर लाया। हॉक का कोई फल नहा निकला पर हॉका पूरा बिया गया। थाड़ी दर के लिए सलाह-मशविरा हुआ परलस्वरूप इक्टसन दवा से सहित नदा के गहिनी आर ऊपर की बड़ ताकि व चार मील ऊपरवाला पुत्र से नगी का पार कर नदी के दाईं आर बघरे की मार के घटनास्थल पर आ जाय। इक्टसन का स्टाफ गावा की आर बड़ गया ताकि अधिक से अधिक आत्मी दुकान पर इक्टु किए जा सक।

मध्याह्न के उपरान्त तक दो हजार हॉकवाले और कई एक अतिरिक्त बन्दूक इक्टु ही गई। दुकान से ऊपरवाला ऊबड़ खावड़ पहाड़ घाटी से लेकर तलहटी तक छान डाला गया। जा इक्टसन का जानते ह उह यह घतान की खबरत नहा कि हॉक का प्रवच बड़ मुगठित ढग से हुआ था। हॉक के उद्देश्य में असफलता का कारण यह था कि बघरा उस क्षण में था ही नही।

जब बघरा या शर अपनी तबियत से अपन शिकार का खुले में छाड देना ह तो वह इन बात का चिह्न ह कि उस जानवर का उस शिकार से आग कोई लिए घसपी नही ह। अपन शिकार का खान के बाद वह निश्चय ही काफी दूर घला जाता है। वह फासला दो मील हा तीन मील हो और आत्मछोरा के मामल में तो वह फासला दस या अधिक मील भी होता ह। इसलिए जब उस पहाड़ का हॉका हा रहा था तब शायद वह आदमखार दस मील दूर मुख की नील सा रहा था।

बधेरे के स्थान की खोज

आदमखार बधरे प्रायः कम हुआ करते हैं इस कारण उनके बारे में कम जानकारी है।

बधरों का मरा व्यक्तिगत अनुभव अतिसीमित था। वस इतना कि कई बघ पूव एक बधरे से मरी मुठभट हुई थी। यद्यपि मेरा खयाल था कि जानवरा के मांस की खुराक से हट कर मनुष्य और पशुआ के मांस खान से बधरे की आदत उतना ही बदल जाती है जितना एक गर की फिर भी मुझ यह पता नहीं था कि मनुष्य का मांस खान से स्वभाव उसका कितना बदलता है। इसलिए मनें वही बग प्रमाण किए जा अन्य बधरा के भारने में करते जात है। बधरो को मारन का सरलतम तरीका यह है कि उनके मारे जानवर या किसी जिन्दा पशु भट या बकरी को बाध कर उनके लिए बैठा जाय। इन दोनों ढंगों में से किसी का भी प्रयोग करन के लिए यह आवश्यक है कि एक हालत में तो उसकी मारी हुई चीज तलाश की जाय और दूसरे में बधरे का स्थान निश्चित किया जाय।

इसप्रमाण जान का मरा घ्यय यह था कि मैं यत्र प्रयत्न करूँ कि भविष्य में आत्मिया की मृत्यु बधरे द्वारा न हो। मरा यह इंगना नहा था कि मैं इस बात की प्रतीक्षा करूँ कि बधरा किसी आत्मी का मारे और मैं उसकी लाश पर बैठूँ। इसलिये साफ बात यह थी कि मैं आदमखार के स्थान का पता लगाऊँ और जिन्दा जानवर बाध कर उसे मारूँ।

अब मेरे सामने बड़ी भारी कठिनाई पैदा आई। मुझे आगा थी कि समय पाकर आगत रूप में मैं इसका हल निकाल लूँगा। जो मानचित्र भ्रम दित गए थे उनमें पता चला कि आदमखार का दौर दौग लगभग पाच सौ बग मील के इलाके में था। अभी भी देग के पाच सौ बग मील का इलाका किसी भी जानवर की बड़ लन और मार लन के लिए बहुत बड़ा हाजा है और गड़वाल के

इस पहाड़ी और ऊबड़ खाबड़ भाग में उस जानवर का कुछ लना जा रात में ही शिकार खलता था पहली रात में लगभग अमम्भव ही प्रतीत हुआ और यह सब तक अमम्भव प्रतीत हुआ जब तक मनें अलकनन्दा नदी का किनारा नहा किया। अलकनन्दा नदी इस क्षेत्र का लगभग द्वा मम भागां म विभाजित करती ह।

रागा का विश्वास था कि आदमखार के लिए अलकनन्दा नदी किमा प्रकार से बाधक न थी क्योंकि जब बघरे का नदी के एक किनारे की ओर बाई मनुष्य मारन का नहा मिलता तो यह नदी का तर कर दूसरी ओर जाता। म इस विचार से सहमत न था। मरी राय म बाई भी बघरा किमी भी हालत में अपनी इच्छा स अलकनन्दा क बरफ जम ठड पानी की तेड धार में न उतरेगा। मरा विश्वास था कि जब आदमखार नदी के एक किनारे स दूसर किनारे जाता था तो यह झूले क किमी एक पुल स जाता था।

उस इलाक में दा ही मूला क पुल थ। एक कप्रयाग में और दूसरा लगभग बारह मील ऊपर छतवापीरल में। इन दा पुला क बीच एक तीसरा एक छीरें का पुल था। उसी पुल स इबत्सन तथा उसक क और दा मी व्यक्तिमा न हाके के तिन नशीमा पार किया था। यह रस्सिया का पुल जिमका घूटे का छाड़ कर और कोई पग पार नहो कर सकता था अपनी तरह का ही बहुत भयात्माक डाँचा था जमा कि मन पहा कभी नही देखा था। हाथ क घट घास के रस्मे उमर पाकर जो काले पड गए थ और नीचे नदी स उठनवाल कीहुरे स जिन पर बाई-भी पड गई थी नीचे नदी के फनदार पानी क ऊपर दाना बार बध थ। यहा से मी गड नीचे का चट्टान की दो दीवारा क बीच अलकनन्दा हुकारती तड पनी गरजनी उफान-सा लेती जाती ह। बहते ह जगली कुसा स पीछा किए जान पर एक बार फाकड एक बार की चट्टान स दूसरी ओर की चट्टान पर कूड गया था। दाना रम्मा क बीच पर खन के लिए डड हूच स लगा कर दो इच के ब्यास की लकडिया दा का फीट की दूरी पर घास की रस्सी से बंधी थी। इस सड बुरे डाँच का पार करन म एक और कठिनाई थी यह यह कि एक



मन्नाकिनी की मूर्ति का
विशाल मन्दिर है।
इस मन्दिर का नाम

[१३]

मन्नाकिनी और अल्कनन्दा
का संगम

[१४]



रम्सी डीली हाकर कुछ लटकी हुई थी फलस्वरूप वे लकड़ियाँ जिन पर पर रख कर पार करता होता था ४५ क कोण पर हो गई थी। प्रथम बार जब मैंने यह भयानक झुला देखा तो उत्तरन का टक्स बसूल करनवाके से मूलतापूण प्रश्न किया कि क्या इस पुल की कभी परीक्षा हुई है और उसकी मरम्मत हुई है या नहा? यह भी स्पष्ट है कि एक पसे की अणायगी पर टैक्स लेन वा न मूल का पार करन के खतरे की उठान की आज्ञा दी थी। टक्स वा न म मस दानदिक मुद्रा से देखा और कहा 'पुल की कमा पराक्षा नहा हुई न उसकी मरम्मत पर पुल को सब बाल लिया जाना है जब पुल पार करनवाकी क बोस सं बहु टू जाता है। बात सुन कर मुझ कँपकँपी आ गई और पुल पार करन के बाद तक यह भावना बनी रही।

श्रीक का पार करना आत्मखोने के बूने मे बाहर था सब फिर दो ही झुला के पुल रह जाते है और मुझ बिश्वास हो गया कि अगर म बघरे का उनसे आना जाना बंद कर दू तो म उसका अलकनन के एक किनारे ही सीमित रख सकंगा। इस प्रकार बघरे व क्षत्र का इलाका धाया हो रह जायगा।

इसलिए पहला काम जो था वह यह था कि म मालूम कर सकू कि नदी के किस किनारे की ओर बघरा था। बघरे की आखिरी मार यानी साधू का मारा जाना नदी व बाईं ओर हुई थी अर्थात् छतवापीपल व झूल व पुल से कुछ माल दूर ओर मुझ यह भी यकीन था कि साधू के अवगप का छाडन क बाद बघरे न पुल पार कर लिया है। स्थानीय लोग तथा यात्रिया न साधू के मरन से पहले कुछ भी सावधानी बरनी ही पर साधू मरन क बाद लोग की सावधानी बहुत बड़ गई इसलिए उसी क्षण मैं बघरे का दूसरी मार करन मुक्किल था। सूधी दख कर पाठक पूछग कि इसका क्या कारण है कि एक गाँव क आग ६ मीन निम्नाई है। इसका यही उत्तर है कि अनिश्चिन बाल तक सावधानी बरनना असम्भव है। गड़बाल में मकान छाल है उनमें पगाव-बाखान भा भीतर महा है। यह जानकर कि बघरा दस माल की दूरी पर मार कर रहा है तो

काई बच्चा स्त्री या पुरुष पेगाव-याखान की मजबूरी दरवाजा एक मिनट को भी न खाऊ और बघर को वह मौका न दे जिसकी वह कई राता से प्रतीक्षा कर रहा था असम्भव है !

दूसरी मार

कोई फोटो या और कोई साधन बघरे की गिनासत के लिए उपलब्ध नहीं था जिसमें मैं उसके पजा के चिह्नो को पहचान सकूँ। इसलिए जब तक मुझे स्वयं उसकी जानकारी का चिह्न न मिल जाय तब तक मैंने निश्चय किया कि एम्प्रमाण के निष्कर्षों की इलाका व सब बघरा का मैं सदिग्ध आत्मसंशय ही समझू और जो बघरा मिले उसे मारूँ।

जिस दिन मैं एम्प्रमाण आया मैंने उसे बकरे खरीदा। इनमें से एक को मैंने अगले दिन शाम का तीस-यात्रा भाग पर एक मील दूर बाँधा। दूसरे को मैं अल्कनन्दा पार ले गया और घन जंगल के रास्ते में बांध दिया क्योंकि वहाँ मुझे एक बड़ा नर बघरा के पदचिह्न मिले थे। अगले दिन प्रातःकाल जा बकरा को देखने गया तो तभी पाएँ बाला बकरा मरा पाया और बाँधा भाग खा लिया गया था। बकरा निःसंदेह बघरे ने मारा था पर खाया था वह किसी छोटे पशु ने समझकर दधनार में पाई जान बानी बिली न।

दिन में आत्मसंशय का कोई समाचार न पाकर मैंने बकर की लाश पर बैठना तथा किया और तीन बज लाश से करीब पचास गज की दूरी पर एक छोटे पड की छाँव पर बैठ गया। उन तीन घंटा में जब मैं पेड़ पर बैठा रहा तब बघरे की उपस्थिति का पता चिड़िया या किसी अन्य जानवर की बात से आसपास न चला। जब बघरा हुआ मैं नीचे उतरा जिस रस्सी से बकरा बाँधा था उस रस्सी को काट लिया और जंगल की ओर चल दिया। मजा यह है कि बघरे ने बकरे को तो मार लिया था पर रस्सी तोड़ने का कोई प्रयत्न नहीं किया।

मैं पहलू ही घना चुना हूँ कि मुझे आत्मसंशय बघरा के बारे में कुछ भी ज्ञान न था। धरा का तो मैं जानता था। पडे से नीचे जान मैं जंगल के पड़बन तब मैंने अपनी रक्षा के लिए प्रत्येक छन्दे पर ध्यान रखा। यह सौभाग्य ही

काई वच्चा स्त्री या पुरुष पेगाव-पाखान की मजबूरी दरवाजा एक मिनट को भी न खोले और बधरे को वह मौका न द जिम्मी वह कई राता स प्रतीक्षा कर रहा था अमम्भव ह ।

दूसरी मार

काई फाटा या और बाई सावन बघरे की शिनाख्त के लिए उपलब्ध नहा थ जिससे म उसक पजा के चिह्नो का पहचान सकू । इसलिए जब तक मुझ स्वय उसकी जानकारी का चिह्न न मिल जाय तब तक मन निश्चय किया कि रद्रप्रयाग के निकटवर्ती इलाको के सब बघरा को म सदिग्ध आदमखार ही समझू और जो बघरा मिल उस मार्ले ।

जिस दिन म रद्रप्रयाग आया मैन दो बकर खरा । इनमें से एक को मने अगल दिन शाम को सीय-यात्रा भाग पर एक मील दूर बाधा । दूसरे को म अल्कनन्दा पार ले गया और घन जगल के रास्त में बांध लिया क्योंकि वहा मुझ एक बड नर बघरे के पदचिह्न मिल थ । अगल दिन प्रात काल जो बकरा का दबन गया तो नदी पार वाला बकरा मग पाया और घाटा भाग ला लिया गया था । बकरा नि सदेह बघरे न भाग था पर खायो था वह किसी छोट पशु न समवन दवतार में पाई जान वाली जिल्ली न ।

दिन में आत्मखार का कोई समाचार न पाकर मने बकरे की लाग पर बठना तय किया और तीन बत्रे लाय से करीब पचास गज की दूरी पर एक छोट पेड़ की शाख पर बठ गया । उन तीन घटा में जब म पेड़ पर बठा रहा तब बघर की उपस्थिति का पता चिडिया था किसी अन्य जानवर की बात से आसपास न चला । जैसे अपरा हुआ म नीचे उतरा जिस रस्सी से बकरा बंधा था उस रस्सी का काट लिया और बगल की आर चल दिया । मझा मह ह कि बघर न बकर को ता मार लिया था पर रस्मी साइन का कोई प्रमल नहा किया ।

म पहले ही बना चुका ह कि मुझ आत्मखार बघरा के बारे में कुछ भा जान न था । सोरा का ता म जागता था । पेड़ से नीचे जान से बगल के पत्रने एक मने अपनी रक्षा के लिए प्रत्येक क्षनरे पर ध्यान रखा । यह मौनाप ह

था। अगले दिन प्रातःकाल म घण्ट पडा और बेंगले क पात्रक पर मुझ एक यड नर बघरे क खात्र मिल। इन खोजा पर म बापम सघन नाणे तक गया जो जहाँ बकरा मरा पडा था उस रास्त का पार करव जाता था। रात में बकरे को किमी न छया तक न था। जिस बघरे न मरा पीछा किया था वह आत्मस्वार ही हा सकता था और उन तिन जितना ही म चल सकता था उनना ही चण। जिन जिन गावा में गया मनें प्रताया कि आत्मखार नदी के हमारी तरफ ह और मनें उह चतावनी दी कि वे भावधान रह।

उम दिन काई घटना न घटी पर अगठ ही दिन जस ही म गुलाबराय स आगे जगठ का प्रातःकाल बहुत देर तक छानबीन करन क बात नागना कर रहा था एक उत्तजित आत्मी भरे पास दौडा आया और बताया कि बगल के ऊपरवाले पहाड क गाव में आत्मखोर न पिछली रात एक स्त्री को मार डाला ह। स्मरण रहे कि वही पहाड है और वही स्थान ह जहाँ स आत्मखोर क इलाके क पाँच सी दग मील क्षत्र का विहगावनाकन हो जाता ह।

कुछ ही मिनटा में मनें आवश्यक सामान इकट्ठा कर लिया। एक अनिश्चित राहफल एक घडूक कारतूम रम्सी और कुछ मछली मारन की बमी की डोरी और अपन दा आत्मिया तथा उम देहानी क साथ तज पहाड की चढ़ाई की आर चउ पना। हवा में सन्की थी और जान क लिए अधिक स अधिक फासला सीन मील का था पर तज धूप में चार हजार फीट की चढ़ाई में दम फूल रहा था और पसीन में लयपथ म गाव में पहुचा। जा स्त्री बघरे न मार डाली थी उसक पति न सब बात बताई। साथवाल के भाजन क बात जो उहान आग की रागनी में किया था स्त्रीन पीनल क वतन पनीने और चढ़ाई इकट्ठी की तथा उह माजन घोन दरवाज पर ल गई और आत्मी सम्बालू पीन बैठ गया। दरवाज पर पहुच कर स्त्री भीड़िया पर बैठ गई और जैसे ही वह बैठी वैसे ही वतन एक दूसरे से टकरा कर ठनठनात हुए जमीन पर गिर गए। यह देखन क लिए कि क्या हा गया ह मकान में यघष्ट प्रकाश न था और जब आत्मी न उस तुरन्त ही बुलाया

तो उसे कोई उत्तर न मिला। वह जाग भागकर आया तो फौरन दरवाजा भट कर किंवाठ वर पर लिए। उसने कहा अपनी स्त्री के शव की प्राप्ति के प्रयत्न में मैं अपनी भी जान खतर में डालता तो उससे क्या लाभ था? बात तो उसका तकपूण थी पर थी हृदयहीन और राम को मूख पता चला कि जो उस वेदना थी वह अपनी पत्नी के उठ जान से न थी जितनी कि अपने उत्तराधिकारी के खतम हो जान से थी। स्त्री गमिणी थी और कुछ ही दिनों में उसके बाल बच्चा होनवाला था। वधरे ने स्त्री का मार लिया था और उसके गम से दात विगत बालक मरा मिला था।

जिस दरवाजे पर स्त्री का बघर न पकड़ा था वह गाब की चार फुट चौड़ी गली की ओर खुलता था। गली पचास गज लम्बी थी और उसके दोनों ओर मकानों की पक्किया थी। वृत्त के गिरन की क्षणप्रनाहट और उसके फौरन ही बाग आदमा का अपनी पत्नी को चिल्लाकर बुलाना सुनते ही गली का द्वार दरवाजा एक दम बन्द हो गया। जमीन पर वन चिह्न से प्रकट हुआ था कि वधरे ने उस अभागी स्त्री का पूरी गला में खवेडा और तब उसको मारा और वहा से वह पहाड़ के नीचे की ओर सी गड की दूरी पर एक छाट नाल में ले गया जो चारा ओर में ऊंची मड बंदी के खतम से घिरा था। वहा पर वधरे ने अपना भाजन विपा और स्त्री के करणाल्याक अवगप छोड़ गया।

एक तग पुत लगे सत के किनारे पर नाले में स्त्री का शव-अवगप पड़ा हुआ था और सत के दूसरे किनारे पर घागम गड दूर पान रहित कम बडान का अवराट का पड था। उस वेड की गालाआ में घास की कुर्ती बनी हुई था जो जमीन से चार फीट थी और पूरी ऊचाई ६ फीट थी। इसी घास की कुर्ती में मने बडन का निरवम किया।

शव-अवगप के निरवम से एक तग गमना था। इसी रास्ते पर उस वधरे के चिह्न थे जिसने उस स्त्री को मारा था और वे चिह्न विलुप्त हो उस वधरे के पजों के चिह्न से हूयद मिलत थे जिसने पिछली दो रातों का मूल बघरे से रुद्रप्रयागस्थित

पर नाग्य न मेरा साथ नहीं दिया क्योंकि रात पड़ते ही तड़ित-रूप हुआ और सुदूर में बाला की गजन-गजन सुनाई पड़ी और घाँटी ही देर में आकाश आच्छादित हो गया। जैसे ही तूफान की बड़ी-बड़ी बूँदों का प्रपात हुआ वैसे ही नाग में मर्ने पत्थर पत्थर की आवाज सुनी और एक मिनट बाद ठीक मरे नीचे जमीन पर गिरे फूस को काई खराब रहा था। बघरा आ गया था। म तो तूफानी मेह में बठा हुआ था और मरे भीग बपटा म से बर्फानी हवा सरसरती निकल रही थी और बघरा नीचे घाम-फूम में सुस्तपूर्वक बठा था। अत्यन्त खराब तूफान मर्ने दखे ह उनमें म वह भी एक था। जब तूफान अपनी पूरी जवानी पर था तब मर्ने एक लालटन का गाव की आर जात दखा। मुझ उस लालटन ल जानवाल क साहम पर आचय हुआ। कुछ घटा बाद मुझे पता चला कि जिस आदमी न बघरे और तूफान का इतनी बहादुरी से सामना किया वह पौड़ी से तीस मील चलकर मरे लिए एक बिजली की टाच लाया था जिसका देन का सरकार न वायल किया था। तीन घट पहले टाच आती ता काम बन जाता। पर परधात्ताप निरसक होता है और कौन जान कि वे चौदह व्यक्तिमा की आयु जा टोच आनक बाद मरे कुछ अधिक होती अगर बघरे न उनका खून न पिया हाना और फिर अगर वह टोच उचित समय में आ भी जाती ता यह बात ता निश्चित नहीं थी कि म उस बघरे का उस रात मार ही देता।

अधइ गीघ्र ही समाप्त हो गया और मरी मज्जा तक में जाडा घुस गया। जब बाल लुल रह दे तब सफ पत्थर एक दम अदृश्य हो गया और घाँटी दर बाद मर्ने बघर को लाग खान मुना। पिछली रात का वह नाल में ही पडा रहा था। उसी आर से उसन लाग का न्याया था। इसी खमात् स कि वह इस रात को भी उसी आर से आयगा मर्ने लाग के करीब पत्थर रख दिया था। बात यह थी कि नाल में मेह के कारण छान-छान गडग भर गए थ और उनस वचन के लिए बघर न नया स्थान से लिया था और एसा करन में मरे चिह्न का ढक लिया था। इम स्थिति का मर्ने पहल खपाए ही नहीं किया था। पर बघरा क

स्वभाव की जानकारी हान के कारण मुझ मालूम था कि मुझ अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी और पत्थर दिखाई देगा। दस मिनट बाद पत्थर दिखाई दिया। तुरन्त ही उसके बाद मैंने अपने नीचे एक आवाज सुनी और एक घुघल पील रंग की बिसा चीन्हा का कुरी व नाच आत देखा। उसका हलका रंग उसके घुडाप के कारण था पर चलन में वह जा आवाज करता था उसका न मुझ पता था और न मैं अब बता सकता हू। पर इतना मैं बताना कि वह आवाज किसी स्त्री की रेसमी साडा की सरसराहट की-सी थी। यह आवाज खन में ठूँठा के कारण न थी क्योंकि खत में ठूँठा व ही नहीं। न यह आवाज घाम के कारण थी। काफी देर की प्रतीक्षा के बाद मैंने राइफल की नली को उठाया और पत्थर पर निगाना बाधा। विचार यह था कि जिस समय वह पत्थर अदृश्य हुआ उमा समय में फायर करेगा। पर भारी राइफल को तान रहन की भी अवधि होती है। अवधि की सीमा पूरी हो गई तो मैंने राइफल नीचे कर ली ताकि दब करनवाले मरे पुट्टों को कुछ चैन मिले। पर जैसे ही मैंने राइफल नीचे की वह पत्थर दुबारा अदृश्य हुआ गया। अगले दो घंटों में तीन बार यही बात हुई और उबता कर ज़र मैंने बघर का चौथा बार कुरी व नीचे आत सुना ता मैं नीचे बाहर का हुका और एक अस्पष्ट वस्तु पर मैंने फायर कर दिया।

तब पुनः की बधी जिस मैंने खत की सजा दी है इस स्थान पर बचल दा फीट खोड़ी थी। जब मैंने अगले दिन प्रातःकाल जमीन की जाँच की तो दो फुट खोड स्थान के बचल में गांजा का छल पाया और घाट घाल भी मिल जा बघरे की गरदन बचल कर इधर उधर फैल गए थे।

उस रात का फिर मुझ बघरा दिखाई नहा पड़ा। मूय उन्मय हान पर मैंने अपने आत्ममिया का इकट्ठा किया और तब जगार में सदप्रयोग के लिए रवाना हो गया। उस स्त्री के पति और उसके मित्र स्त्री की लाल के अग्रगण्य और गभ से निकल क्षत विधान सात्त्व के अन्वय का दाह के लिए रण गण।

तैयारियाँ

गत रात्रि की असफलता के कारण पहाड़ की खाटी से ह्प्रयाग उतरने समय मेरे चित्त में बड़ी कष्टता थी। प्रत्येक दृष्टि से मैं इसी नताज पर आया कि जीवन में अवसर का स्थान महत्त्वपूर्ण है और गत रात का सयाग न मेरे और गढ़वाल के साथ जो चाल चली उसके न ता गढ़वाली ही अधिकारी थे न मैं।

मैं उस अवसरजन्य हालाकी का अधिकारी था या नहीं पर पहाड़ के लोगों को यह विश्वास अवश्य था कि आत्मसोरा को मारने की परमात्मा न मुझ असाधारण क्षमता दी है। यह खबर कि मैं उस आदमखोर से गढ़वाल को मुक्त करने के लिए आ रहा हूँ मर वहीं पहुँचने से पहले ही पहुँच चुकी थी और जब मैं ह्प्रयाग में कई पड़ाव दूर रास्ते में ही था तब सड़क पर चलनवाज लागाने स्वता में गावा में आने जान वाले लोगों ने मरा उस अटल विश्वास के साथ स्वागत किया माना मेरे मिशन की पूर्ति में उन्हें पूरा विश्वास था। यह ठीक है कि मेरा मिशन जितना ममस्पर्शी था उतना ही कष्टपूर्ण भी। जस जस मैं ह्प्रयाग के निकट आया वैसे-वैसे ही उसकी मुक्ता और भी बढ़ती गई। अगर कोई व्यक्ति ह्प्रयाग में मेरे प्रवेश का देखनेवाला होता तो उसको इस बात पर विश्वास न होना कि जिस व्यक्ति के स्वागत के लिए भीड़ इकट्ठी हुई थी वह युद्ध से लौटनेवाला विजेता हीर न था बरन् एक साधारण व्यक्ति जो अपनी सीमाशा का समझता था कि जिम कार्य की जिम्मेदारी उसने उठाई थी उसकी पूर्ति उसकी शक्ति के बाहर थी।

पाँच सौ बग मील का इलाका ! उन पाँच सौ बग मील का बहुत-सा भाग घन और झाड़ीदार जंगल से आच्छादित था तथा पूरा न पुरा ऊबड़ खाबड़ था। उनमें बड़े शाय में बहा के रहनेवाले शगभग पचास बघरा में से एक विशाल को मारना असाधारण बात थी। उस मुन्दर क्षणको जब मैंने देखा तब अपना

कायमार की दृष्टि से उनना ही कम पसन्द किया। यह स्वाभाविक ही था कि ज़नता मेरी धागाकाओ से सहमत न थी। उनके लिए तो मैं एक ऐसा व्यक्ति था जिसने औरों का आदमत्कार से मुक्त किया था और जो अब उनके बीच में उस आतंक-निवारण के लिए ला गया था जिसके निकलने में वे आठ बरस से रह रहे थे। धर्मिष्ठमनीय भाग्य के साथ अपने आगमन के कुछ ही घण्टों के भीतर मैंने उस आदमत्कार बंधने से अपना एक बकरा मरवा लिया था और कुछ अघरे में टिक कर अल्कनदा के दूसरी ओर अपना पीछा करा लिया था और मेरा विश्वास था कि अल्कनदा के दूसरी ओर उसमें भुगतना बठिन न होगा। इस प्रारम्भिक सफलता के बाद ही बंधने ने उस अभागिन स्त्री को मार लिया था। मानव जीवन की क्षति का राकन का मैंने प्रयत्न किया था पर मैं असफल रहा और मेरी असफलता ने मुझे उमे गात्री से मारने का अवसर दिया था जो कि बिना उसकी भुझ वह अवसर महीना तक प्राप्त नही होता।

यद्यपि यह तथ्य मेरे सामने था कि बंधने की इस बात में प्रसिद्धि थी कि वह अपनी मार पर नही लौटना था और दूसरी कि रात अघेरी और तीसरी कि रात का निकार चलने के लिए रागनी का भर पाम कोई प्रबंध न था तब भी मेरे हिसाब से बंधने का मारने का पंचम फीसली मौका मेरे लिए था। इस बात का निश्चय मैंने तब कर लिया था जब मैं पिछली रात का अपने माग दवाक के पीछे पताइ की चाँदी पर खड़ा रहा था। जिस दिन मैं माइकेन कीन न मिटने गया था और जब मैंने उनका बताया था कि मैं आत्मह्तार मारने गढ़वाल जाऊंगा तब उन्होंने पूछा था कि मुझे किसी चीज की आवश्यकता तो नही है। मैं जान कर कि मेरे पाम रात के निकार का रागनी का कोई प्रबंध नहीं है और मैं बलवत्त से राइफल पर लगनवाली टोर्बे को तार से मगाऊंगा तब उन्होंने कहा 'यह तो एक बहुत ही यूतवम बात है जो सरकार आपसे लिए करेगा।' माइकेन कीन ने वायना किया कि भारतवर्ष में उपलब्ध सबधत्त रागनी का इन्तजाम ही जायगा और वह मुझे राइप्रयाग में मिल जायगी।

रूपप्रयाग में आकर जत्र मुझे मातूम हुआ कि मेरे लिए राइफल पर लगान की टोच नहीं आई तत्र मेरी निराशा की सीमा न रही। पर मेरी निराशा की गुरुता मेरे अधर में क्षण सक्ने की क्षमता में कम हो गई। इसी क्षमता का बूत पर मैंने अपनी सफलता को पचास फी सदी माना था। उस रात का प्रयास पर मेरी सफलता इतनी अव्यवहित थी कि मैं अपने साथ एक अनिरीक्षित बन्दूक और एक अनिरीक्षित राइफल ला गया और जब मैंने घास की कुरी में अपने छिपे स्थान से चारा आर को देखा तब मेरी आगा और भी बढ़ती हो गई और मैंने अपनी सफलता का अवसर को नष्ट फी सदी आंका। बात यह थी कि निगाना लन की दूरी थडी निकट थी और यह भी पक्की बात थी अगर मेरा निगाना सलाली गया या मैंने वधरे को घायल किया ता वधरा निश्चय ही मरने अच्छी तरह बनाए गए छिपे बन्दूक के फटा पर से निकलगा और तब बन्दूक की गाली का निगाना बनगा। पर विधि की विडम्बना का देखिय। सूफान आया। घुप अधरा हो गया। ह्याया हाय लिखाई न पडता था और बिना बिजली की रागनी के मैं असफल हो गया और कुछ ही घटा में मेरी असफलता का समाचार उम उत्पीडित इलाक में फटा जायगा। व्यायाम गरम पानी और भोजन कुछ विचारा पर विचित्र रूप से मरहम का काम करत ह और पहाड का तड उतार से उतर कर मैंने गरम पानी में स्नान किया बरुड किया तथा उसके फौरन बाद ही मैंने अपने भाग्य का कामना बन् कर लिया और गत रात की असफलता पर उचित रीति से विचार करन योग्य हो गया। वधरे के वजाय जमीन में गोरी लगन पर दुध प्रकट करना उतना ही व्यथ था जितना मालू में लडकाए दूध पर अफमोम प्रदर्शित करना। अगर वधरा अल्कनदा का दूसरी ओर नहीं चला गया था ता उस मारन के मेरे अधर और अच्छे हा गए थ क्याकि अब मेरे पास रात के शिकार का रागनी का प्रबन्ध हा गया था। पाठन जानते ह कि पिछली रात हरकारा सूफान का मन्दाबला और वधरे का डर का तानिन भी विचार न करके मेरे लिए विजली की रागनी लाया था।

अब पहली बात जो मुझ करना थी वह यह थी कि मैं यह मालूम करूँ कि बधरा अलकनन्दा के दूमरी आर तो नहा चला गया है और मुझे इस बात का पूरा विश्वास था कि अगर बधरा अलकनन्दा के दूमरी आर जा सकता है तो वह बस एक ही माग से जा सकता है और वह माग या पुल के दायाँ पुल में से कोई एक। बस एक बात इस बात की जानकारी के लिए मैं चल पड़ा। बधरे ने छत्रवापीपल के पुल से अलकनन्दा पार की दृष्टि इसकी संभावना का भी समालोचन नहा किया क्योंकि मरी मारी राइफल की गाली जा उसमें मिट्टी में कुछ ही पीट दूर जमीन में लगी थी और उसमें वह किंगना ही भावित्त हुआ है पर उसके लिए सम्भव नहीं था कि थोड़ा-सा घना में ही वह अपनी मारकी जगह में चौक माल का फासला पार कर ले। इसलिए मैंने अपनी आज्ञा प्रयाग के वास्तुपास ही रखी।

पुल के लिए तीन रास्ते थे। एक उत्तर में दूमरी दक्षिण में तथा इन दोनों के बीच एक तीसरा रास्ता पगडड़ी का था जो रात्रिप्रयाग बाजार से पुल का जाता था। इन तीनों रास्तों को बड़ी सावधानी से देखने के बाद मैंने पुल का पार किया और बजारवासी बागी तीर्थ-यात्रा-मंडक का बापीमाल तक निरीक्षण किया और उसमें बाद में उस पगडड़ी का दवा जिस पर तीन रात पूर्व मेरे बकर का बधरे ने मारा था। इस बात से संतुष्ट होकर कि बधरे ने नदी पार नहा की है मैंने यह निश्चय किया कि दाना पुल का। रात के समय बस करने की अपनी यात्रना का काम में लाऊँ और इस प्रकार बधरे का नदी के अपनी ही आर रखूँ। यात्रना मीथी-नादी थी और पुल के रक्षक के सहायक में-त्रा नौ के बाईं आर पुल के पास रहने के-मरी सफलता निश्चिन थी।

देगन में तो पुल को बस करने की यात्रना बड़ी ही अनुचित और निरकुण प्रतीत होती थी क्योंकि रात्रिप्रयाग तीर्थ मील के पगड में नदी के पाना किनारा के बीच पुल ही मानायात का मान्य था। पर वास्तव में ११वीं बात न थी क्योंकि बधरे ने जा बसू लगाया था उसमें कारण मूसाम्प और मूसाम्प के बीच उन पुल का प्रयाग करने का कार्य व्यक्ति साम्प तक नहीं करता था। पुल इस

तरह बना किए गए थे कि पुल की मीनारों के बीच चार फुट चौड़ी महाराव थी जिसमें गहरे क रस्मे सट हुए थे और जिसमें तस्ने जाड़ कर मट था। उहा महारावामें ठूम कर बाट की झाड़ियां भर दी जाती थी और जितने दिना रात क समय काटा सं पुल बना रहत अथवा म उनकी रक्षा करता उनन म्तिना किसी भी मनष्य न उन पुल पर रास्ता मागन की इच्छा प्रकट नहीं थी।

रुद्रप्रयाग की बाईं ओर की मीनार पर मनें कुल घीम रातें काटी और उन राता की स्मृति हमारा के लिए अमिट ह। मीनार बाटुर निकनी हुई एक चट्टान पर बनी थी और घीम फुट ऊंची थी। उसके ऊपर एक प्लेटफार्म-सा था जा चार फीट चौड़ा और आठ फीट लम्बा था। हुवा की बटन स वह प्लेटफार्म ऊपर चिकना और इकमार हा गया था। इस प्लेटफार्म पर पहुचन के दो ही मायन थे। एक ता लोहे के रस्सा स जो मीनार क ऊपर छटा में हाकर गए थे और चट्टान स लगभग बीस फीट की दूरी पर पहाड़ में जकडकर बंध थे। दूसरा साधन था एक सड़ी-सुसी दास की सीडी द्वारा। मनें सीडी का रास्ता ही पसंद किया क्यकि लोहे क रस्सा पर दबकुर और कानी चौड़ सी पुती थी जा छून स हाथ स चिमट जाती थी और जिमसे कपडा पर अमिट लाग-सा पड जाता था।

सीडी दो असमान बांसा की बनी थी जिसमें पनरी एकडिया रस्सी स डूली बंधी थी और मज्जा यह था कि यह सीडी प्लेटफार्म स चार फीट नीच तक ही पहुचती थी। सीडी क सबसे ऊपरवाट डड पर खड हाकर और ऊपर चिकने प्लेटफार्म पर अपने हाथा की हथलिया क घण स अपने ही बकुर पर प्लेटफार्म पर सुरक्षित पहुच जाना नट की बला का एक रूप था और जितनी ही धार उस बकुर का प्रयाग किया जाना था उतना ही वह कम पसन् आता था।

हिमालय क इस भाग में सम्पूर्ण नशिया उत्तर म शिण बहती ह। जिन घाटिया में हाप्तर के बहती ह उनमें एक हुवा चलती ह जिनकी गति सूर्योदय और

सूयास्त के साथ बदलती है। इस हवा का स्थानीय नाम डाडू है और दिन के समय वह दक्षिण से चलती है और रात्रि के समय उत्तर से।

जिम समय में प्लेटफाम पर अपने स्थान पर जाकर बठा करता उस समय हवा प्रायः निस्तब्ध रहती पर चाडो ही देर बाद जैसे ही सूर्य का प्रकाश क्षीण हो जाता वह हवा चलन लगती और आधी रात के समय तक वह हवा प्रदुषित अधक का रूप धारण करती। प्लेटफाम पर कोई ऐसी स्थान या वस्तु नहीं जिस में पकड़ कर बठा रहना। घणनका घटाने के लिए पेट के बगैरे रहने पर भी—नाकि हवा का दबाव कम है—इस बात का खतरा ही बना ही रहता कि में प्लेटफाम से उठ कर साठ फीट नीचे चट्टानों पर जा गिरूँ और फिर वहाँ से टकराकर घरफन्सी ठही अलकनन्दा की धारा में। पर यह तो स्पष्ट ही था कि साठ फीट नीचे तब और नुकीली चट्टानों पर गिरने के बाद अलकनन्दा के पानी के तापमान का कोई माना नहीं था। पर बड़ी विचित्र बात यह है कि जब कभी मुझ गिरने का डर लगता तब अलकनन्दा के नीचे जल का ही खयाल जाता और चट्टानों का नहीं आता। हवा की अमुविधा के अतिरिक्त मुझ बहने-सी छाटी चाटिया के काटने की बंदना का भी महना पड़ता। चाटिया भरे कपड़ा में घुस जाती और मरी माल के छोट टुकड़े काट उ जाता। जिन बीस रातों में मैंने मीनार पर बँकर पुल की रक्षा की उन दिनों काटा का बहा नही रखा जाता था और उस अवधि में उस पुल से बँकर एक ही जीवित प्राणी निकला और वह प्राणी था—एक गीठ।

जादू

प्रतिष्ठा मध्याह्नक जब मैं पुल पर जाया करता तब मेरे साथ दा आदमी रहते थे। वे दाना आदमी सीढ़ी ले जाते पुल की मीनार पर सीढ़ी गत और मीनार के प्लेटफॉर्म पर बैठने में मेरी सहायता करते तथा मुझे राइफल देने का काम भी सीढ़ी हटाकर करते जाते।

दूसरे दिन जब हम लोग पुल पर पहुँचे तब हममें एक श्वेत तथा ठोले वस्त्र धारी व्यक्ति का देखा। उसके सिर और छाती पर काँची चीज चमक रही थी। उसके पास एक चादो का छ पत्रा सत्रीय था और वह वेल्गनाथ की आर स पुल की ओर का आ रहा था। पुल पर पहुँचने पर वह आदमी घुटनों के बल झुका और सलीव को अपने सामने रखते हुए उसने अपना मन्त्रक नत किया। कुछ देर उस घासन पर रहकर उसने सलीव का ऊँचा उठाया फिर खड़ा हुआ और कुछ बरस आगे बढ़ कर झुका और फिर सलीव को प्रणाम किया। इस प्रकार की प्रक्रिया करते हुए उसने पुल का पार किया।

जैसे ही वह मेरे पास हाँकर गुजरा वैसे ही अभिवाचना उसने अपना हाथ उठाया पर मैं उस से इसलिए नहीं बोला क्योंकि वह ईश्वराधना में निमग्न था। चमकदार चीजें जो उसके सिर और छाती पर दिखाई पड़ती थी वे चादो का सत्रीय थे। मेरे आत्मियान इस विचित्र प्रेरणक व्यक्ति में उतनी ही दिलचस्पी थी जितनी मैंने। और जब उन्होंने उस रूपप्रयोग वाजार का जान कारी छत्र चढ़ाई की पगडंडा पर जाने देखा तब उन्होंने उससे पूछा कि वह आदमी आखिर किस देव का है और कहा से आया है। यह तो स्पष्ट था कि वह ईसाई था पर मैंने उससे बोले नहीं सुना। उसकी भावमयी लंबे घाल और आवनुस जैसी कारी और घनी दाढ़ी को देखकर मैंने अनुमान किया कि वह उत्तरी भारत का रहनेवाला है।

अगले दिन प्रातःकाल सीडी की सहायता से म मीनार से उतरा जोर हाक बगल की ओर जा रहा था जहाँ से समय का वह भाग बिताया करता था जब से निकट और दूर के गाँवों में आत्मसूत्र की तलाश को नहा जाता था कि मनें श्वेतवस्त्र धारी उस व्यक्ति को सड़क से निकट चट्टान के एक बड़े पत्थर पर खड़े पाया। वहाँ खड़े होकर वह नदी का निरीक्षण कर रहा था और जब मन उसमें पूछा कि उस भूभाग में उसका धाना क्या हुआ तब उसने बताया कि वह एक दूर देश का निवासी है और गढ़वाल के लोगो को उस प्रतात्मा से मुक्त करने आया है जो उन्हें सता रही है। जब मनें उससे पूछा कि आखिर वह अपना लक्ष्य की प्राप्ति कैसे करेगा तब उसने बताया कि वह धरती की एक प्रतिमा बनायगा और प्रायतः द्वारा उस प्रतात्मा का उस प्रतिमा में प्रवेश करने का वाध्य करेगा उसके बाद उस प्रतिमा का वह गंगाजी से प्रवाहित कर देगा। नदी उस प्रतिमा को सागर तक ले जायेगी जहाँ से वह आ नहा सकेगी और इस तरह वह प्रतात्मा लोगो का कोई हानि फिर न पहुँचा सकेगी।

उस व्यक्ति की अपनी निर्धारित कार्य-क्षमता के विषय में मुझे तो पूरा संदेह था पर उसने अटल विश्वास और अध्यवसाय की प्रशंसा नित्य बिना से नहा रहे सक्ता। प्रतिदिन वह व्यक्ति मर मीनार छानने से पहुँचे ही आ जाता और शाम को जब मैं फिर वहाँ लौटता तब उसे जुटा ही पाता। धरती की प्रतिमा बनाने में काम की सपत्तियों तोड़ कर जुटाने में रस्सी के वापन में कागज और मन्ना रंगीन कपड़ा चिपकाकर और मीनार धरती की शक्ति बनाने में वह व्यस्त ही रहता। जब वह प्रतिमा लगभग तैयार हो रही थी तब एक रात का जोर का पानी पड़ा और उसके बनाए धरती के कृपा की प्रतिमा उलट गई पर इसमें उसका माहम में कमी नही आई। बड़ी प्रसन्नता से वह काम पर जुट गया और उसके बनाने में फिर उसकी साहाय्य शक्ति जाग्रत हो गई। आखिर वह दिन आ ही गया जब उसका धरती की प्रतिमा तैयार हो गई। आकार में वह घाट के बराबर थी किन्तु भी पवित्र धन पानु से वह मिलती न थी पर मनी की वह उसका विचार से बड़ी सहाय्य।

हमारे पहाड़ी भाइया में ऐसा कौन सा है जिसे ऐसे ठमारा में भाग लेने में आनन्द न आता हो। उबे वास न बाध कर जब वह प्रतिमा एक मकीर्ण पगडढी द्वारा एक छोटे बालकामय घाट पर ल जायी गई तब मौ आदमिया में अधिक उमके माय थ और उन में स अधिकान्त्र रूप ढाल और सुरही बजा रहे थ। बडी सज धज और गान-वाज क साथ वह प्रतिमा नदी-तट पर लाई गई।

वास स मोन कर नदी-तट पर शर की प्रतिमा रखी गई। रूपहूने सतीब व्यक्ति पगनी और श्वेत वस्त्रधारी व्यक्ति न जिसक हाथ में छ फूटी सलीब भी बाटू में घुनन के और यडी त मयता न प्रतात्मा का आवाहन किया और प्रायश की कि वह प्रतिमा में आए और तब नगाड पर घाट पडत ही वह प्रतात्मा गगाजी में विमजित कर दी गई। फूला और मिठाया क पूजा भार का लिए वह प्रतिमा समद्र की आर चट पडी।

अगले दिन जब मनै श्वेतवस्त्र-धारी व्यक्ति को चट्टान पर अनपस्थित पाया तब मनै प्रात बाल गगा-स्नान का आन-आनवाले लागे स पूछा कि शर की प्रतिमा में प्रतात्मा फूकनवाग मेरा भित्र कहा चला गया है वह कहा का रहनवाला है। तब लागे न कहा महकौन बना सवता है कि कोई साधु कहा स आया है और वह किसका सात्म है कि जो पूछ घट कहा चला गया है ?

जिन लोगे न मन उस व्यक्ति क बारे में पूछा और जिन लागे न उस साधु और महामा कहा उनक भाल चदन शचित थ और उन पर तिलक छाप भी थे। क हिन्दू थ।

भारतवष में जहा कोई पामपाट नही है अथवा कोई जानकारी का चिह्न नही है और जहा पर मजहब का इतना मान है—उन लोगे को अपवाद देकर जिन्होने समुद्र-यात्रा की है—भरा विश्वास है कि कोई भी गहवावस्त्र धारी सप्पधारी अथवा चानी का सगीवधारी देग क एक कान स दूसर कौन तक बड़ मज से धूम सकता है। उसक कार्क यह प्रश्न नही करता कि उसकी यात्रा का उद्देश्य क्या है अथवा उन किस निदिष्ट स्थान पर जाना है।

बाल-बाल बचन

म अभी पुल पर प्रहरी बना बैठा था कि इवटसन और श्रीमती इवटसन पौड़ी से द्रप्रयाग आ गए। शकबगले में निवास-स्थान अति सीमित था। इसलिए इवटसन और श्रीमती इवटसन की खानिर मन डाक बगल छात्री किया और मात्रा मार्ग से दूमरी ओर अपना खालीस पौंड का तम्बू लगाया।

द्रप्रयाग के आमपास उम बादमखोर बघरे न प्रत्यक्ष दरवाज और प्रत्यक्ष खिड़की पर अपन नखाके चिह्न अंकित कर दिए थे इसलिए उस बघरे के घिफट मरा तम्बू कोई रक्षा का माधन न था। मने अपन आत्मिया को इसलिए आदेश दिया कि जिम स्थान पर मेरा तम्बू लग उसके चारा ओर कटीली छाटिया का बाडा बना दिया जाय। जो स्थान तम्बू के लिए खुना उसक ऊपर छतरी की भाति एक विगायकाय कटीली नागापाती का पेड था। उस बक्ष की गालायें तम्बू से बढती थी इसलिए मने अपन लोगो को पेड काटन की आज्ञा दी। पर जब पड़ आगिक रूप से बट गया सब मन अपना विचार खल लिया क्याकि मने साचा कि दिन की गर्मी से छाया मिन्गी। इसलिए मने पेड की गालाया का छाटन की आज्ञा दी। यह पड बाड में बाहुर था और तम्बू के ऊपर ४५ क कोण से झुक्ता था।

हम अपन तम्बू में सब मिल कर कुल आठ व्यक्ति थे। सायकाल के भाजन के उपरांत हमन बाड के दरवाज का कटीली झाडी से अच्छी तरह से बन्द कर दिया पर दरवाजा बन्द करने समय मुझ मुराल आया कि आत्मन्तोर के लिए पड पर चढ़ जाना तथा बाड़ के भीतर बूद पड़ना बड़ी आसान बात थी। लेकिन उम सतरे का दूर करन के लिए अब कोई समय न था और अगर बपर से उस रात बचत हो सकी तो मल अवश्य मह पड़ काटकर महा से हटा लिया जायगा।

अपन आत्मिया के लिए मेरे पास कोई तम्बू न था इसलिए मने यह विचार

किया था कि अपना आत्मिया का इवटसन के आदमिया के साथ डाकबगल के सागरपेग में मुला लिया करे। पर मरे आत्मिया न ऐसा करन से इनकार कर लिया। उहान कहा कि तम्बू में उनके लिए मेरी अपेक्षा कोई अधिक खतरा नहीं है। मझ रुद्रप्रयाग में मालूम हुआ कि मरा रसाइया साते में बड़ खरॉट रना था और वह मेरी बगल में एक गड़ की दूरी पर लटा था तथा उसके बाग भरे छ गड़वाली जिनका म ननीताल से लया था मिनट मिकुड पड़ थ। हमारी रक्षापक्ति में सबसे कमजोर स्थान पेड था और पेड का ही खयाल करते हुए म सा गया। चार चत्तिका छिटक रही थी और अचरानि के समय म घघरे के पेड पर चक्कन की आवाज से एकत्रम जाग पड़ा। राइफ्ट चारपाई पर मरी रली हुई थी फौरन ही उस मन उठाया चारपाई से उतरा परा में स्लीपर डाले ताकि जमीन पर पड़ काटे न लग जाय कि इतन में ही अघक पड़ पर एक लुरसट और खटाख की आवाज और फौरन ही उसका बाल मरा रसाइया घबराकर चिल्ला उठा बाघ! बाघ! क्षण भर में ही म तम्बू के बाहर हो गया और बस तनिक सी देर ही हुई मुझ उस पर निगाना लन में जब वह पेड से करीब के बंदी बन खत की मर पर कूट गया। म दरवाजा हलाकर खत की तरफ लपका। खत लगभग चालीस गज चौड़ा तथा बजर था। जैसे ही म घड़ा खड़ा काटदार पहाड़ी और चट्टाना का लस रहा था कि इतन में गीदड की चतावनी की पुकार जल की भाषा में पगली (अलाम) की ध्वनि हुई। वह आवाज पहान के ऊपर थी और उससे म समझ गया कि बाघ मरी पहुष के बाहर है। रमोइय न दा म बनाया कि वह चित्त लटा था और जैसे ही खरौंच की आवाज से आखे खाला बैन ही ठीक ऊपर वपरे का चहरा लिखाई पड़ा। वपरा उस पर कून की तयारी कर रहा था।

अगले तिन पेड काट डाला गया और बाड़ा और मजदून बनाया गया। उम तम्बू में हम बई सप्ताह तक रहे पर फिर हमें कोई खत्का न रहा।

पिशाच पाश

निकटवर्ती गावा से समाचार मिला कि बघरे ने मकाना में घुसने के असफल प्रयत्न किए थे। मार्गों पर मनें जो पगचिह्न देख उनसे मुझ मालूम हुआ कि आदमखोर अभी तक पाम-पडास में ही था और इबटसन के आगमन के कुछ दिनों बाद फिर खबर मिली कि दरप्रयाग से दो मील की दूरी पर और उस गाव से आधी मील की दूरी पर जहाँ म अखराट के पद पर घाम की कुरी पर बैठा था एक गाव में गाय मार दी गई है। उस गाव में घटनास्थल पर मालूम हुआ कि बघरे ने एक कमरवाले मकान का द्वार तोड़ दिया था और भीतर घुसकर कई में से एक गाय को मार दिया और दरवाजे में उस घसीट लाया। दरवाजे में से बाहर न घसितने पर उसने उसे दहरी पर ही छोड़ दिया तथा यथेष्ट अंग खा गया।

यह घर गाव के बीचों-बीच था और निरीक्षण के बाद मालूम हुआ कि कुरीब के मकान की दीवार में छेद करके से गाय को गाव दिखाई पड़ता था। मकान का मालिक मत्त गाय का भी मालिक था और हमारी योजना से वह पूजनया सहमत हो गया। सायकाल के होते ही हम लोग कमरे में बन्द हो गए। हम जो पाथय साथ लाए थे उन खाने के हमने दरवाजे छेद से रातभर देख भाल रखी पर हमें न तो बपरा दिखाई पड़ा और न उसकी कोई आवाज सुनाई दी।

प्रातःकाल जब हमलाग कमरे से निकले तो गांववाले हमें गाव में ले गए। गाय काफ़ी बड़ा था। और लोग न हमें खिन्निया और दरवाजा पर मान्यखार द्वारा अज्ञित पगचिह्न दिखाए। कई बरसा में बघरे ने लगभग प्रत्येक घर के दरवाजे खोलकर या तोड़कर अपना गिकार प्राप्त करने का प्रयत्न किया था। एक दरवाजे में औरा की अपेक्षा विषयरूप से गहरे नखचिह्न थे। यह बड़ी

वधरा एक तस्न क वाट दुमरे को तोड़न का प्रयत्न करता रहा पर विभाजन में कोई बमझार सल्लान मिगा तब उसन रमाईघर छोड़कर गाय मार दी। गाय एक पान में घास के ढेर पर घसी थी। मारन क वाट पधा तोड़ लिया कुछ दूर तक मृत गाय को घसी ल गया तथा कुछ भाग खाकर बाकी वही छाड़ दिया।

पहाड़ क किनारे पर और जहा गाय मरी पड़ी थी उसमे बीम गज की दूरी पर एक साधारण आकार का पड था। पेड़ की ऊपरी शाखा म एक घाम की कुरी वनी थी। इस स्वाभाविक मचान पर इवटसन और मन बटन का निचय किया। इस मचान से समवाण बनाता हुआ नीच घाटी में कई सौ गज का फासला था। कई दिन पहाड़ सरकार न आत्मखार क माग्न में सहायतारूप एक पिगाच-पाग (जिन ट्रेप) भजा था। यह पाग पाथ फट लम्बा था और घड़न में अन्मी पीड़ था। मन अपन जीवन म इस प्रकार की और कार्य करावना चीज नही देखी थी। इसका फैलाव चौबीस इंच का था और उसमें तीन तीन इंच ऊंच लीख दाने य जिममें टा सिप्रा लग थ जिह टा आन्मी लगा स्वत थ।

गाय के गव का छाड़न क वाट वधरा एक चौबीस गज चौड़ी पगडडी पर गया था और तीन पन्नी मट्ट पर स एक दूरर खन म गया था। ऊपरवाट और नीच काठे स्वत क तीन फट भाग पर हमन पाग लगाया। रास्ते के दाना ओर छान छान काना की ढालिया गाड दो ताकि वधरा उसी रास्त म निकल। पाग क एक सिरे पर एक आधी इच माटी जजोर बाध दी जजोर क बीच म तीन इच व्याम का एक छल्ला था। इस छल्ला म स एक खटा गाड कर हमन पाग को जवड दिया। जब सट सब प्रबन्ध हो चका तब त्रीमनी इवटसन हमारे आत्मिया क माय बगल पर लोट गइ और इवटसन तथा म कुरी पर चढ़ गए और बठकर कुरी में एक लकड़ी बाधकर मूखी घास टपेट दी ताकि वह धाड़ का काम करे। आज आराम स बत्कर हम वधरे की प्रताक्षा करत ह। हमें पूरा विश्वास था कि वधरा हम स निकलकर नगा जा सकना।

मायकाल क हान ही आकाग मघाच्छालिन हो गया। चन्मा नी बज म

पत्थ निकलनेवाला न था इसलिए ठीक निगाना उन के लिए हमें विजली की रागनी पर ही अवलंबित रहना था। रागना भारी और पचकार था। इवटसन न इस बात पर ज़ार दिया कि मैं ही निगाना हूँ इसलिए मैंने उस अपनी राइफल की नाट से कस कर बांध लिया। एक घंट के बाद हमें बाघभरा गुर्रांट मुनाई दी और हमें मालूम हा गया कि बाघरा फन गया है। विजली की रागनी का दहन दवान पर हमें बाघरा लिखा पड़ा। यह अपन पिछले परा पर सडा था और उसकी अगली टागा में पाग छटक रहा था। जल्दा मैं जा निगाना लिया ता १५० की गोला जज़ीर की कड़ी पर पड़ी। जज़ीर टूट गई।

सूटा से मुक्त होकर बाघरा खत में बूझा फिरा और पाग उसक भाग घसितता उछलता खला जाता था। उसक पीछे मरी राइफल की बार्ड नाल की गाली पड़ी। हमरु बाद इवटसन की भी ता प्राणघातक गालिया पड़ी पर निगाना सब मारी गए। अपनी राइफल के मरन के प्रयास में मैंने विजली का रागनी के किमी भाग का इधर उधर कर दिया और उनसे काम करना ही बल कर लिया।

बाघरा की मजद और हमारी गालिया की तज़न मुतकर संप्रयाग बाज़ार तथा निकलनेवाँ गावा के लाग भाल्लने और दवागरी की घना मगाए लकर अपन गाव से बाहर निकल तथा उस कबायस्थिन मकान की आर एम जान लग जम पारों निगाना मैं नानियाँ सागर की आर बडी जाता हूँ। वग म दूर रहने के लिए उनसे बिल्लाकर कहना निरमक था क्योंकि गग इतना गार मचा रहे थे कि मैं हमारी काइ बात सुन नहा सकत था। इसलिए बाघ्य हाकर एक खतर का काम करना पडा यह यह कि अघरे में ही मैं नाच उनरा। इवटसन न पट्टाल लर का पप करके प्रवाण किया और रस्मी में लटकाकर मुक्त किया। इवटसन भी नीचे उतर गए और हम दाना बांध की आर चल। खत के बीचा बीच दुगा का एक समूह था। इस बाहान के आकार के खट्टाना के समूह की आर हम बड़े। इवटसन न अपन सर के ऊपर गप कर लिया था और मैं इवटसन के बागवर कंधे में राइफल लगाए खला जाता था। वहीं एक दनाप था। उन

निम्न (depression) में हमारा आर मह किए मुराता हुआ बधरा बठा था । मने ताक कर सिर पर निगाना लिया और बधरा बहा पर ठडा ढाकर लेट गया । गाली लगन क कुछ नी दर बाद हमारे चारा आर एक उत्तजित भीड आ पहुची । लाग आनन् विभोर घ और अपन चिर आनककारी गध के मरन का कशी म ब नाच रहे थ ।

मरे मामन जा जानवर मरा पठा था वह साधारण आकार मे वग था जिसन गत रात एक आत्मा का पकडन क लिए कमरे का विभाजन ताडन का प्रयत्न किया था और चूकि क इस डलाक म मारा गया था जिसमें आत्मस्वार क आनमण थ मह मान लिया गया वह आत्मस्वार बधरा था । पर म यह नही मानना चाहता था कि यह वी बधरा है जिस मन स्त्री की लग पर बत्कर देवा था । य बात ठीक ह कि रात अघरी थी और मने बधर के बाह्य जाकार का ही दत्वा था । फिर भी मझ विवास था कि वह जानवर जिसे लाग बढी तत्परता म एक लट्टु म बाध रहे थ आत्मस्वार बधरा नहा था ।

मून बधरे के साथ कई मी आत्मिया का जटूम डाक वगले की ओर बग । जटूम के मवम आग इवटमन और श्रीमता इवटमन थ और स्प्रयाग बाजार मे आग होकर हम लाग वह ।

उस अपार जलम में म ही एक अकला था जिसन यह विवास नहा किया कि स्प्रयाग का आत्मस्वार बधरा मर गया ह । पर जलम क पीछ जैसे ही म पहाड मे नीचे की ओर उतरा ता मेरी बालपन की स्मति जाग्रत हा गई । मुझ वट घटना या आर् जा हमारे शीतवातीन निवास के निकट घनी थी जिस मन बाद में भी एक किताब में उल्लिखिन पाभा । वह घटना इदियन सिविल सभिम क स्मीगन और वन विभाग क बडबड म मबधिन थी । रल यातायात क प्रारम हान मे पहल की खान ह कि य दाना आत्मी एक अचरी और सुफानी रात का डाक ा जानबाली घाडा गाडी में मुरातावा म बालाडगी जा रह थ । जब व एक माड पार कर रहे थ तब उनकी मुठम एक मस्त हाथी स हा

गइ। पाचवान और दा घाडा का भागन में हाया न बग्घा का पल्ट लिया।
 दूधक क पाम राइफल थी और उदान जब तक राइफल का कम म
 निकाला मभाल और मरा नव स्मिटन बग्घी पर चढ़ गए और बग्घी क एक
 नक्क ली बिना-दूध का निकाला। स्मिटन न नल क लय का जिमन घबला
 प्रवाग निकल रहा था अन्न ऊरर किया और आग बर। प्रवाग हायी क
 माय पर पटना था और बडवण न एक कारगर निगाना लिया। मम्म हायी
 और ववर में बहुत अतर ह। इसके अतिरिक्त एम आत्मा बहुत कम हाग जा
 त्रीडा म पागल बघरे के पाम अपन मिर क ऊरर उप उठाण और अपना रखा
 क लिंग कवल अपन मायी का गोली पर ही मराना करत हुए जाए। उन बघरे
 का जब हमन भाग लिया तब देखा कि बघरे न अपना पजा पिशाच-याग स ताड
 कर मुक्त कर लिया था और बट पाग एक पतला खाल क महार ही टक रहा था।

गत बघों स यह पहली ही रात थी जब मद्रप्रयाग वाइसर के हर एक मवान
 का शरवाडा खुल रहा और बच्च और औरत शरवाडा पर खड रह। जन्म
 की गति घामा थी क्यकि कुछ ही दूर चलन क रात बवर का जमीन पर रखना
 पडता था ताकि बच्च उम दम ल। लारी गयी क अतिम छार पर जन्म तितर
 बिपग हा गया और बघरे का हमारे जान्मी बड ठाठ स डाक बगल पर ल आए।
 अन्न तम्बू पर हाय मुह घान क घाट म डाक बगल पर गैर आया और इवटमन
 थीमनी इवटमन तथा मझमें म्यान् क बहुत दूर घाट तक इस बात पर तब बिनक
 जाना रहा कि हमन जा बघरा मारा ह वह मद्रप्रयाग का बन्नाम आत्मघार बघरा
 ह या नहा। अन्न में बार्ड बिना का बिवााम न लिया मरा कि वह आत्मघार
 बगरा ह या नहा। मरा मत था कि वह आत्मघार बघरा नहा ह और इवटमन
 तथा थीमनी इवटमन का मत था कि वह आत्मघार ह। अत में तप किया कि
 अगल, तिन ता बघरे की म्यान् निबालन और मुत्तान में बिनाया जाया और
 दूनरे तिन पीडी चला जाया। इवटमन का सरकारी काम म जाना था और
 म इनन तिन यहा रह कर यक गया था।

अगले दिन प्रातःकाल से शाम तक पास पड़ास व गावा स बघरे को दखन क लिए जगा क जत्य आत रहे। आगन्तुका न जगा किया कि व आत्मखोर का पहचानते ह और यह मृत बघरा ही आदमखोर ह। इस बात से इवटसन और श्रीमती इवटसन का विश्वास दब हान लगा कि वे ठीक ह और म गत हू। मेरे आग्रह करन पर उहान मरी दो बात मान ली। एक तो यह कि आदमखोर बघरे क मामल में लागा को चेतावनी दी कि वे सावधान रहें और डिलाई न होन दें और दूसरी यह कि व सरकार को तार न दें कि आदमखोर मार डाला गया।

उम जिन हम जल्दी ही सो गए क्यकि अगले दिन सूर्योदय पर ही हम वहां स चट दना था। अभी अधरा ही था कि म उट बैठा और प्रातःकालन घाय पी रहा था कि एकाएक मनें लोगा की आवाजें सुनी। यह कुछ असाधारण सी बात थी इसलिए मनें आवाज जगा कर पूछा कि क्या मामला ह। मझ दखकर चार आदमी मेरे तम्बू के राम्ने पर ऊपर आ गए और बताया कि पटवारी न उट मरे पास भजा ह यह बतान के लिए कि नगी के दूसरी ओर छत्रवापीपल क पुल क पास बघरे न एक स्त्री को मार डाला ह।

शिकारियों का शिकार

इबटसन अपने कमरे का दरवाजा खाल रह ष ताकि प्रात कालीन चाय उनके आत्मी ल आवे । म ठीक उसी समय वहा पहुंचा । पीडी जान का विचार इबटसन न फिलहाल छोड दिया और चारपाई पर बैठकर एक बड़ा नक़्शा फल लिया । हम चाय पीते जाते और अपना याजनाआ पर बात करते जान थ ।

इबटसन का अपने हेडक्वार्टर पीडी म एक बहुत जरूरी काम था और अधिक स अधिक वे दो दिन और ले सकते थ । पिछके दिन मनो तार दे दिया था कि म पीडी और काटद्वार होकर ननीताल पहुंच रहा ह । उस तार को मस खारिज करना पडा और रल क वजाय जिस रास्त म बदल आया था उसी रास्त का विचार किया । विस्तृत वाता क ब्रा म तम्बू म आया और आगा का बताया कि उस दिन मात्रा का विचार त्याग लिया हु तथा चार आत्मी मामान खबर उन आत्मिया क साथ जाय जा स्त्री क मरन की खबर लग ह ।

शामता इबटसन का ह्प्रयाग में ही रहना था । इसलिए कठक क बाद इबटसन और म घाडा पर चड कर उस गाव की ओर चल दिए । इबटसन एक अरब घाट पर थे और मरे पास एक अग्रजी घोडी थी ।

हमने अपनी राइफ़ल और साथ म एक स्टोव एक पट्टोल लप और कुछ खान की सामग्री थी । हमारे साथ इबटसन का माईम भी घाड पर याजिम पर हमारे घाडा का दाना धारा लग था ।

घाडा को हमने छनवापीपल पुल पर ही छाड दिया । जिस रात को हमने बरग मारा था उस समय यह पुर वर नहा किया गया था पम्बल आत्मियार न्हा क दूमरी आग खला गया और पहल ही गाव म उस अपना शिकार मिला गया ।

पुल पर एक पथ प्रत्येक मिला जा हम एक तब चढ़ाई की धारा (ridge) पर ल गया जिनकी दग म काफी घाम थी। तब हमें तब उतार मिला और हम एक गदरी और पेना स भरी नरिया (raven) म घुम जिसम हाकर छोटी नी धारा बह रही थी। वहा हम पटवारी और लगभग बीस आदमी मिले जा स्त्री के गव की रखा कर रहे थ। गव अत्यंत मुदर और सुन्दर लडकी का था। उम्र काई १८-२० वय की होगी। व पट पडी थी हाय वगल म थ। शरीर स हर कपडा फाड कर फक दिया था और पर स लगा कर गदन तक चाट कर बघरे न स्नन पिया था। गलन पर चार बह कीर क निदान थ। अगल हिस्से का कुछ पौड मास खा रिया था कुछ निचल हिस्से का।

पहाड पर जब हम आए तब हमन डाल बजन की आवाज सुनी थी। जो गव की रखा कर रहे थ वे ही डाल बजा रहे थ ताकि हम गग स्थान को समझ सक और बघरे के आगमन का राक सकें। समय मध्याह्न था और यह समावना न थी कि बघरा निकट होगा इसलिए हम लाग करीब गाय में चल गए। अपन साथ पटवारी और रक्षकल भी ल गए। चाय के बाद हम लाग उस मकान को दखन गए जहा बह लकी मारी गई थी। पत्थर का बना मकान था जिहम एक ही कमरा था और बह बधीरार सता के बीच म स्थित था। खतो का रक्बा तीन एकड होगा। मकान में बह लकी उसका पति और उसका छ महीन का बालक घम तीन ही व्यक्ति रहने थ।

इस दुघटना से दो दिन पूव लडकी का पति एक जमीन के मुकम्म म गवाही दन पोडी गया था और अपन पिता को लखमाल की खातिर छोड गया था। जिस रात यह दुघटना घनी उस रात गमा हया कि लडकी और उनके स्वमुर न यालू की और जब सात का समय आया तब लडकी न जा वच्च का दूध पिला रही थी वच्च की स्वमुर क हाया म द लिया और कुडी खाल कर वाहा आई पेगाव क लिए। यह पहल ही निशा जा चुका ह कि भारतीय दहान क मकाना में पेगाव-पावान का काई मुविधानक प्रबंध नहा ह।

जब बच्चा मा की गाल में दादा की गाल में पहुँचा तो उसने राना गह किया। एमी हाज़न में यति काई आवाज़ बाहर से हुई भी होगी तो खमुर का सुनाई नही पड़ सकती थी पर मरा विश्वास है कि बाहर काई आवाज़ हुई है ना होगी। रान अचरी थी। कुछ देर प्रतीक्षा के बाद खमुर ने अपनी पुत्रवधु का आवाज़ दी। काई उत्तर न मिलने पर उसने उस फिज़ पुकारा तब वह उठा और जगल में दरवाज़ा बंद करके चटखी लगा ली।

घाम का पानीवरम गया था और स्थिति की पूछी तम्बीर इस बात में समझाना आसान ही है। मह के बंद होने के छोड़ी देर बाद ही बघरा गाव की ओर से आकर पतवाली चट्टान के पीछे छिपने गया था। यह स्थान दरवाज़ के बाई ओर में लगभग तास गज की दूरी पर था। यहाँ पर वह कुछ समय के लिए रुक रहा होगा। सम्भवत आत्मी और लडकी का बात ख सुनना रहा होगा। जब लडकी ने तार खाला तब वह उससे काई ओर का बठा होगी और आंगिक रूप से उसको पीठ बगरे की ओर रही होगी। बघरा चट्टान की ओर घूम कर सरक आया होगा और मकान के बान तक—लगभग बीस गज—पेट के बल भरक कर आया होगा और मकान की दीवार के निकट तक भरक कर लडकी का उमन पीछे में पकड़ लिया होगा और चट्टान तक उम घमाएँ ल गया होगा। बहा से जब लडकी मर गई होगी या सम्भवत जब आत्मी ने आत्मकित हाकर पुकारा होगा तब बघरे ने उमे ऊपर उठा लिया होगा और ऊँच उठान हुए त्रिसस उमके हाथ पर भी जुत खत में न छुए वह उम एक यत्न से दूसरे खत का ल गया जहा में १८ फुट की निचाई की एक पगडडी जाती थी। एक निचाई में बघरा लडका का मह में लिए खूँसा होगा। लडकी का वजन लगभग पौन ग मन होगा और बघरे की शक्ति का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि जब वह उम गलत पर लडका का मह में दबाए हुए खूँसा तब उमने लडकी के शरीर के किमी भी भाग का जमान में छुन नहा लिया।

पगडडी का पाठ करने के बाद बघरा मीषा आब माल तक पहान की ओर

गया और वहां जाकर उसने लड़की के सब कपड़े फाड़ फेंके। लड़की का धाड़ा माग खाकर उसने उसके बंध हुए माग को जमरून जसी हरी घास से आच्छादित घाटी में पड़ा छोड़ दिया। शब के ऊपर छत्ररोनमा एक पेड़ था जिसके ऊपर घनी लताएं छाई हुई थीं।

लगभग चार वज्र सायकाल हम राग लाग पर बैठन गए और साथ में पट्टाल लप और विजनी की रोगनी भी उत गए।

यह तो स्पष्ट ही था कि बंधरे ने लड़की की तलाश में आनखाल रागा का शोर सुना था और वह शोर भी सुना था जो शब की रक्षा के समय बाजों का हो रहा था। इसलिए अगर बंधरा शब पर आया तो बड़ी सावधानी से आयागा। हमने इसी कारण शब के निकट न बैठन का निश्चय किया और शब से लगभग साठ गज का दूरी पर घाटी के दूरी ओर एक पेड़ पर बैठन की व्यवस्था की।

य पेड़ कम बड़वार का बाग का पेड़ था और पहाड़ी से बाहर की ओर करीब करीब समकोण पर खड़ा हुआ था। पट्टाल राग का एक खोखल में छिपा कर और चीड़ की पतली सूखी पत्तियां से ढका कर इवटसन ने पेड़ की गाम के एक बाहर निकलनवाट टूठ पर आसन बनाया। वहां से लड़की का शब अच्छी तरह दिखाई पड़ता था। मैं पेड़ की पीठ पर बठा मरी पीठ इवटसन को आर थी और मह पहाड़ी की ओर। इवटसन को निगाना लना था और मरा काम प्रहरी का था। विजनी की रोगनी खराब हो गई थी सभवत उसकी बटरी खत्म हो गई—और हमारी योजना यह थी कि हम तब तक बर रह जब तक इवटसन निगाना लन के लिए देख सकें। तब हम पट्टाल लप का सहायता से गाव चले जाय जहां हम आगा थी हमारे आत्मी आ गए हंग।

आसपाम की जमीन देखन का हमारे पास समय नहा था पर लाग न बनाया था कि जहां शब पड़ा था उसके पूर्व की ओर मघन वन है और बंधरा भगण जान पर उसी आर चला गया था। अगर बंधरा उसी निगा से आया तो इवटसन उसके घाटी में आन में पूव ही देख लेंगे और उस पर निगाना रना

आमान हो जायगा क्योंकि उनकी राइफ़्ल पर टेलिस्कोपिक साइट लगी हुई थी जिससे ठोक निगान तो पड़ता ही था पर उससे मध्यावेला में कुछ आध घट अघरे तक दिखाई भी पड़ता था। जब सकलता और अमफ़ता में एक मिनट के प्रकाश से ही फ़ा पड़ जाता हो तब आध घट के प्रकाश की सुविधा मिगना बहुत महत्वपूर्ण है।

उच्च पर्वतशिखरा के पाछे जगमगाना सा मूय मुह छिपान रगा मानो वह उम सुन्दरी के दाव को दख कर लजाता और सवुचाना अपना मुह छिपान जा रहा हो। कुछ ही मिनट के लिए वहा छाया रही होगी जब एक काकड़ भागना और चिखलाना हुआ उसी ओर मे आया जिस आर हमें सधनवन बनाया गया था। पवत चोटी पर आकर काकड़ रुका कई बार चाला और दूसरी आर को खला गया अन्तत उसकी आवाज मुदुर क्षत्र में समा गई।

निस्मदेन काकड़ वघरे स आतन्नि हुआ था और यद्यपि यह समभव था कि उम क्षत्र में और भी वघरे रहें होंग, फिर भी मरी आगा बल्लरी लहलहान लगी और मनें जब मुड कर इवटसन का देखा ता मानूम हुआ कि उनके रग पुट्रो स आगा प्रस्पुटित हो रही ह और उनके दोना हाय राइफ़्ल पर थ।

प्रकाश बहुत क्षीण हो रहा था पर बिना टेलिस्कोपिक साइट क भी निगान क लिए बर काफी था कि इतन ही में तीस गज की दूरी पर एक ठीठा (pine cone) शाशिया स अलग हाकर लडकता आया और मरे परा क पास पेड स टवगया। वघरा आ गया था और समवन खतरे की आगवा मे वह एक एम म्यान स मिहा खलावन कर रहा था जहा स गव क धारा आर का पहाड उम अच्छी तरह दिखाई पड सक। यह हमारा दुर्भाग्य ही था कि एसा करन में हमारा पेड ही दाव की सीपी पक्ति में पगता था। मरे गरीर का भाग ता किमा तरह त्रिगार् नया पडना था इसलिए स उमरी नजर स वच मकता था पर पड क ठू पर बर इवटसन को यह निचय रूप स ही दख मकता था।

जब मरे लिए निगान लन का खरा भी प्रकाश न रहा और जब अघरे में इवटसन

की टैलिंग फॉरिक् साइट भी किसी काम की न रही तब वधरे का पड की ओर जाने मुता। अब तो कुछ काम करने का समय था इसलिए इवटसन स मनने अपनी जगह आन क लिए क्या ताकि म लप उगा त। जमन उप था जिम पट्टा मरुम कहत ह। इसने रागनी ता काफा हाती थी पर वह इनता भारी और त्रिडि इनता लवा था कि जगल म वह लास्टन का काम नहा करता था।

म इवटसन म कुछ ऊंचा हू और मनने मुझाव पेग किया कि म लप त चलूगा पर इवटसन न कहा कि थ उप का बहुत अच्छी तरह ले जायग और माथ ही यह भी क्या कि वे अवन तिगान की अपेक्षा मरे तिगान पर अधिक अवतित हें। वस हम चल पड। आग आग इवटसन थ और दाना मभल हुए हाथाम राइफल का घाम पीछ म चल। पड म पचास गड की दूरी पर एक चट्टान पर बैठत हुए इवटसन का पर फिपल गया और लप का नीच का हिस्सा चट्टान म जाग म टफरादा और पट्टामरुम का मटल धूल म नीचे गिर गया। बती के मिरे म प्रगित नील ली की एक किरण पटाल म छ गई और उमस जा तज रोगनी हुई उसम हम अवन परा की मभाले रखत म सकल हुए पर सवाल यह था कि इनती रागनी कब तक मिलेगा। इवटसन का मत था कि वे उदक फटन से पूव तीन मिनट तक और ल जा सकत थ। पर तीन मिनट जिमम आव मील की चट्टान जिममें धार चार तिगावतनी पलनी थी चट्टाना और कटागी झाडिया से बचना पडता था नया क बराबर समय था। इसक अतिरिक्त चट्टाना और झाडिया म ही बचना न था बरन आत्मभार म पीछा किए जान का भी प्रश्न था जैसा पीछ मालूम हुआ कि आत्मभार न हमारा पीछा किया था। वह स्थिति आतकजनक ता थी ही पर माथ ही उमन स्थिति का क्या तब बल लिया था कि गिकारी क स्थान म हम स्वय गिकार क स्थान में आ गए थ।

प्रत्येक व्यक्ति क जीवन में कुछ घटनाएँ एसी होती ह जा स्मृतिपत्र पर अमिट छाप छोड जाती त। समय का हर पर स्मरणगमित की क्षीणता तथा विस्मृति का गम एसी घटना अथवा घटनाआ का मिटा नहा सकत। मरे

लिए उस अवगी रात में उस पहाड़ की चगई एसी गी एक घटना है। अन्तता गन्वा जत्र हम पहाड़ के ऊपर पहुँच तब भी हमारी बठिनाइया का अन्न नहा हुआ क्योंकि माग में भसा के गटन के गडन वन में और हमें यह भा नहीं मालूम था कि हमारे आदमी कहा है। बसा कीवड में स्पटन ता कभा अदृश्य घटाना में ठाकर खात पर अत में हम कुछ पत्थरा की मीनिया पर आ गए जिन पर पर रखत हुए हम रास्त में ता हट गए पर मीथ आ गए। इन माडिया पर चढ़ कर हम एक हाते में आण जिसके दूसरी आर दरवाजा था। जब हम मीडिया पर आए थे तब हमन हुक्क की गडगुडाहट मुनी थी इसलिए मनें दरवाजे पर ठाकर मारी और भीतर के लागा का दरवाजा खालन का कया। पर भीतर से काई उतर नहीं मिला तब मनें न्यासलार्न का एक बक्स निकाला और उसे हिला कर चिल्लाकर कहा कि अगर एक मिनट में दरवाजा नहा खुला ता मैं छप्पर में आग लगा दूगा। इस पर भीतर से एक उत्तजित आवाज आई कि आग न लगाई जाय दरवाजा खुल रहा है। पहले भीतर का दरवाजा खोल फिर बाहर का। इधरसन और मैं दा ही उगा में भीतर पहुँच गए। भीतर का दरवाजा हमन धर कर दिया और पीठ लगा कर बैठ गए। हमारे में सब उम्र के १२ या १४ प्राणी थे—पुण्य स्त्री और बच्च। हमारे आरम्भिक सभा अनिमन्त्रित प्रवण के बाद लागा के हाग हसाम ठीक हुए तब उत्तम दरवाजे का जल्दी न खालन के लिए शमा चाही और कहा कि वे सब आत्मस्यार बघर के कारण इतन आनखिन है कि उनमें जरा भी साहस नहीं रहा है। यह पता नहा कि आत्मस्यार कीन मी आहनि का कारण कर ल इसलिए रात में प्रत्येक ध्वनि का वे आगवा की दृष्टि में मुतत थे। जया तब उनका नय था हमारी उनर साथ पूरी महानु मृति थी क्योंकि जिन समय इबतमन फिसल कर गिर पड़ और मन्टल टूट गया और कुछ मिनटा बाद मुग गरम लप का फटन में बुमा लिया उस समय में मनें समझ लिया था कि हम में से एक या दाना गाथ गीतन के लिए जीवित न रहेंग। हमें बताया गया कि हमारे आत्मी मूर्यान्त के समय हा

आ गए थे और व पहाड़ के किनारे ही एक मकान में ठहरे ह। दो मजबूत आत्मियां न हमें रास्ता खतान की इच्छा प्रकट की पर हम जानते थे कि उनका अदेरे दाबिम करन के माने उनका मौन का सौपना हागा इसलिए हमन उनका निमंत्रण स्वीकार नहीं किया। यह स्पष्ट था कि हमारे साथ जान की जा स्वीकृति उहान दी थी व स्वतंत्र व पूरे गुरुवकी जानत हुए दी थी। धनवान देन हुए हमन उनसे यह ही चाहा कि वे रागनी का प्रबंध करे। कमरे की लाज लाज के वाए एक सड़ी लाटन पंग की गई जिसका गीगा चटखा हुआ था और बड़ी जार से उस हिनाया गया तब मालूम पडा कि उसमें तेल की कुछ बुद्ध ह। लाटन जलाई गई। मकानवाला के सयकन आगीवाले के साथ हम निकल और जसे हमारे पर बाहर हुए वमे ही लटाक से दरवाजा बंद कर लिए गए।

रास्त में भया के लाटन के और गडब मिठ और छिपी चट्टान पर धुधली रागनी की सहायता में जिन सीडिया पर पहुचन का आलिंग मिला था पहुच गए। ऊपर पहुच कर एक हान में आए जिसके दाए बाए दरवाजा थे। प्रत्येक कमरे का दरवाजा पूर्व बडा बन्द था और प्रकाश की किरण भी नहीं थी।

जब हमन आवाज लगाई तब दरवाजा खला और कुछ सीडिया चढ़न के वाए हमऊपर के तलके के बरामदे में पहुच जा हम और हमारे आत्मियां के लिए सुरक्षित रख गए थे। जब हमारे आत्मी हमसे राइफल और लप ले रहे थे तब न मालूम कहा न एक कुत्ता आया वह दहात का एक साधारण कुत्ता था। हमारी गानें मूध कर वह उन सीडिया की आर बहा जिधर से वह आया था पर तुरत ही एक आनखिन और डरी आवाज में भौंकन हुए वह हमारी आर गौटा। उसके मन वाल खड हुए थे।

जा लाल ने हमें भी गई थी वह हात में आत ही बुझ गई पर हमारे आत्मियां न उसकी एक सही वहिन भी लाल ने हमारे सामन कर दी। यद्यपि डबटसन न उसे काफी इधर उधर किया और मन राइफल समाल ली पर आठ फट नीचे भी उससे नहीं दिखाई पडा।

कुत्त के दस्तन से बघरे की गतिविधि का पता चलता था। जब बघरा हात से बाहर हो गया तब कुत्त ने भौकना बंद किया और वह बैठ गया पर उसकी नज़र उधर ही रहा और एक एक कर गुर्राँ लता था।

जो कमरा हमारे लिए खाली किया गया था उसमें खिड़की नहीं थी। कमरे में सुरक्षित रहने का एक ही तरीका था वह था शरबाजा बन्द करना पर ऐसा करने से वायु का आना बिल्कुल रुक जाता। इस कारण हमने बरामदे में सान की हाँ तय की। कुत्ता कमरे से स्वर्गीय मालिक का था और बरामदे में स्टैन का आदा था, क्योंकि वह हमारे परा पर आराम से लेट गया। कुत्त से हम सुरक्षा की भावना ही गई और नम्बरवार रात भर जगते रहे।

गई थी मुक्किया न मकान स लीस गज की दूरी पर था। उन लागा क अनराध पर मने ननीनाल-धाधा म्यगिन कर दी तथा म पिताच पाग लकर उनक गाव आया।

मल्लिया का मकान कान्तवाली जमीन स घिर हुए एक ऊंच टीठ पर था। मकान पर पहुचन क लिए एक पगडगी थी जा ललली जमीन म हाकर गई थी। वहा पर मुझ आत्मस्वार के नख धिह्ल मिले।

मुक्किया न मुझ धागी के दूररी आग आत लख लिया था अन ताज दूध की बनी गरमागरम चाय मझ तयार मिली। मन जब इस पीष्टिक जीर मीठ पेय को पिया घरह की छात्र स मझ मूर पर बठ कर तब मल्लिया न मझ तरवाज की हालत लिखाई जिसे दो रात पहरे वधरे न ताइन का प्रयत्न किया था। मुक्किया न मझ यह भी बताया कि वधरा अपन प्रयास म अवय्य सफर हा गया हाता अगर उससे मकान म नए तपने न होत क्याकि उसन तलना वा तरवाज म मजबूनी से अहा लिया था। मल्लिया गठिया राग मे पग-सा ही था इसलिए उसन अपन लडक का मरी गाय लिखान का मज किया और मकान म हमारे लिए स्थान किया।

मन गाय की लंग को दखा। गाय जवान थी। वह जानबरा क रास्त से कुछ ऊपर मराट जमीन पर पगी थी। पिताच-पाग लगान क लिए वह उचित स्थान था। गाय की पीठ जगगी छात्रिया की आर थी उसक त्वर एक फट ऊंच मँह क महार थ। तान ममय वधरा मड पर बरा था और उसन अरत पाना पज गाय की लाना लगा क बीच म रख लिए थ। गाय की टागा न बीच की जमीन का पार कर और मिट्टी हटाकर मन पाग का वहा लगा लिया जना वधरे न पज रख थ और उस हने पलिया म डक लिया। चाही मिट्टी छिडक कर उस पर सूखी पलिया छात्र ल। हड्डिया क लकड गाय की टागा क बीच में वमे क धैमे ही रख दिए। चाहे हजारा ही आत्मी लंग दखन जाने पर व य नग वता सकेन थ कि लाग छई गई ह या वहा एक घानक पाग लगा ह। पूरा नया मनोपजनक प्रबंध करन क वा म लौट जाया और मल्लिया क मकान

और लाने के बीच एक पेड़ पर बैठ गया। उस समय अगर पाग में फम बघर पर निगाना लाने की आवश्यकता होती तो उस सकता था।

सूयान्त के समय कल्या तानरा का एक जाड़ा अपने पाँच बच्चा का लेकर आया। बहुत देर से म उहें देख रहा था। वे एकत्र आतकित हुए और सड़वडात हुए पहाड़ की ओट में भाग गए। कुछ ही मकिया बाद एक बाकड़ भागता आया भरे पड के नाच खडा चिल्लाता रहा और भाग गया। फिर कुछ नहा हुआ। जब पड के नीचे अधरा हा गया और म अपनी राइफल की साइट नही देख सका तब पड के नीचे उतर आया और रबर के जन पहिनकर गाय की आर बडा।

मभिया के मकान से १०० गज का दूर पर घाटा का रास्ता जाता था। घाटा का ऊपरा पहाण की आर एक बडा बट्टान थी। जब म हम खल म्यान पर पहुँचा तब मुझ एसा लगा कि भरा पीछा किया जा रहा है और यह निश्चय करके कि स्थिति का पता चलाने रास्ता छान कर ना बरूम बड कर नरम और गीली जमीन पर बट्टान के पीछे गट गया। भरी बखल एक नौ आँव गाय की लाने की आर था।

दस मिनट तक म उस गीली जमीन पर पडा रहा। जब प्रकाश विस्तृत गायब हो गया म माग पर आ गया और बडी मावधाना म मुभिया के मकान तक आया।

रात में एक बार मभिया ने मुझ मेरी गहरी नास म जगाया और बताया कि उसने शरवाड पर बघर के शरावन की आवाज सुना है और अगर दिन प्रात काल जब मने शरवाडा लाग तब मुभिया के मकान के सामने धूल में आत्मचार के चिह्न पाए। नलचिह्न पर म घांटी का आर गया तो देखा कि धरन न टाक बनी काम किया था जो मने किया था। उसने ठाक उमा जगह माग छाडा था जग मने छाडा था फिर रास्त पर आकर मकान तक भरा पोला किया था और मकान के कर्ष बरकर भी पाए थे।

मवान छान्न व यान् बधन रात पर बापिन गया और जैस ही म उसकी
 वाज पर लग का आर बडा बसु ही मरी आगाता हलान लगी क्याकि
 उम समय तक म यह नहा समझ मका या कि आत्मस्तार आठ वय आदमिया
 व सम्पक व कारण किना भक्कार हों सवता ह ।
 मनें रास्ता छड दिया और ऊच स्थान मे गाय की लाग की आर बडा
 और घाडी दूर म देवा कि लाग गायव थी और वह स्थान जहा पाग दवा था
 ज्या का त्या ही था कवल दा पगचिह्न थ ।

एक फट ऊची मड पर बठ वर जसा बधन न पहला रात का क्रिया था अब भी
 अपन अगल दा पज गाय की टागा में रख लिए पर इस अवसर पर उसन उनका
 फेला कर एक दूसरे म दूर पिनाच-माग व र्व लीवरा पर रख दिया । अगर
 नीवर खुल जाते ता पाग व दोना जवडा म वहू आ जाता पर वहा म पाग मसुरी त
 रह वर उमन अपना मोहन पाया । उनके वाच व चारा आर घमा और
 गाय के शव को पकड कर गलाय का बात्तार झाडी म स माला और पहाडा
 व नीच लडका दिया । लाग लगभग पचास गज नीच बाँस के एक पीध म र्वका
 वर रख गई । अपन रात व काम स मनुष्ट हाकर बधरा द्वारा के माग पर चला
 गया । एक मील तक म उमके वाजा पर गया पर वाच में उमके वाज न मिने ।
 बधन की लाग पर फिर आन की काई आगा न थी फिर भी अपना आत्मगाति
 व लिय मनें गाय के शव म पात्नियम साइनाइड काफी मात्रा में डाला । ईमानगारी
 का वात तो यत् ह कि उम समय भी म उहरे देकर मागन की बान से घुणा
 करता था और अब भी करता ह ।

प्रात बाल म गाय व शव का दहन गया और जाकर देवा ता शव व उम
 सत्र भाग का बधरा ला गया ह जिमम मन उहरे रखा था । मुझ इस बान का
 पूरा विश्वास था कि विप मिथिन गाय व मान को उम आत्मछार न नहा गया
 ह वरन किमी अय रास्ता चलते बधरे न । गाँव में लौट कर मनें मुनिय.
 स कहा कि काई बधरा विप मिथिन गाय व मान का था गया = ।

परम उसकी खाल के लिए रुकूंगा नहा। हाँ म मी रूपया उम आमी का दूगा वा उम खाल का ताकत पत्रवारा का दगा। एक महान वा उम रूपय की माग की गई। पत्रवारा का खाल कई दिन पहलू लेती गइ थी।

सामान वाधन में देरी नहा लगा और म अपना ननीताल-यात्रा का रवाना हा गया। जस ही हमाराग एक सकाण पगाडा म छत्रवापोपल पुल का बार उतरे वस ही एक बड़ी घामिन भज म रान्त का पार बरता शिवात्ता। वर हाकर म उम दवन लगा और माधामिह न जा मर पीछ पाछ थ कहा वह तनिए प्रनामा जा रही ह जो आपकी असफलता के लिए जिम्मेदार ह।

गन्धाल छाड कर ननीताल आन और ग्रामीणा का एक प्रवार म वात्सव्यार के निपुद कर आन की बात पाठवा का हृदयहानता-मूण प्रतात हूइ हाणा। मज भी वह एसा पनीत हुई। समाचार पत्रा म बुरा आलाचना भा हुई ब्याकि उन तिन भारतीय समाचार पत्रा में बधर की बचा प्रनिम्न रहा करती था। अवन बधाव म म इमा बात का आग्रह करगा कि बाद भी धाय जिनम गिधिस्ता और यकावत अधिक बड अनवरतरूप म अनिचिन काल तक नहा बिया जा सकया। जिन सप्ताह मने गन्धाल म बिनाए उनमें म अनक सप्ताह के खौरामा घट इमा काम म बिनाए। रात भर पडा या सचाना पर बर रहता सुबह अनगिनत माला पत्रा खला सुदूर गावा में जग बग भा आनमणा का पना लगता जागा अतक गकपगा की रागा में कपवारक म्याता पर वर रान म मरी घागीरिब छमना मामा पर पहुच गई थी और मुस एमा जगहा पर भा लगाना बरना पहा जग आव सपत्रन ही बधन पकड सजाता। पर यकावत म अत्र अधिक छमना नहा रह गई था। घना म उन सडवा पर घूमा करता जा कवल मर तिग हा गती था और बधर का ता काई गक-टाक थी नहा। अत घन का धावादन का जिनता भा बला मुस आती था मने बाकी नहा गया पर बधर अपना रागया मरवारा के माथ राइफ की रागा म बचना ही रना। क बचना नो नहा गला वरन रात में मरा पाछा

भी करना था। मम दाना में और मिचौली-भी होना रहती। प्रातः काल
 में अपने गन्ता पर उमड़ खोज देवता। भगवान की कृपा से वह मम पक
 न सवा। मरा अनुमान कि वधरा मरा लगातार पीछा कर रहा है ठीक था।
 विमा व्यक्ति की मम बात का पान होना कि रात्रि व समय उमका पीछा
 नियमितरूप से आत्मखोर उम पकड़ने के लिए कर रहा है हीनत्व भावना पदा
 कर देता है और स्नायवा पर जार डालता है। लगातार इस प्रकार पीछा
 करने में घकावट कुछ कम नहीं होता।

पारान्त्रिक और मानसिक घकावट होने में मद्रप्रयाग में मरा टिकना कोई
 हिनकर न होता और गायद में अपनी जान में भी हाथ धो बैठता। मम बात
 का जानता था कि जा काम मन ठ लिया है उमे छोड़ने से अवधारवाले मरी
 पट आलाचना करेगा। साथ ही में यह भी जानता था कि जो कुछ में कर रहा
 है वह ठीक है। इसलिए गढ़वालिया को यह आश्वासन दिलाकर कि में शीघ्र
 ही लौंगा अपने मुद्दर घर की आर पल लिया।

अकाल और मनोरजन

१९२५ के पतझड़ के अंतिम दिना में मैं अपनी अस्फूर्ता के क्षण रत्नप्रयाग का पक्कर और हतात्माह हाकर छाड़ लिया और १९२६ के शरद के प्रारंभ में नवीन स्फूर्ति और नव आशा में फिर अपना काम करने के लिए रत्नप्रयाग लौट आया।

आत्मसुख की इस दूसरी यात्रा में मेरा गन्वा-यात्रा काटदार तक तो रुक न हुई और बहा में पीड़ा पड़ल गया। और इस प्रकार मैं यात्रा के आठ दिन बचा लिए। पीड़ी में रत्नप्रयाग के लिए इन्टरमन मर माथ हा गए।

गढ़वाल में मैं तीन महोत्सव गन्वाकर रहा और इस बीच आत्मसुख ने दय आश्रमिया का मार डाला। इस अवधि में अंधे का मारन का आश्रमिया का न कोई प्रयास नया किया।

इस नये आश्रमिया में मैं अंधे का अंतिम शिकार एक छाया बच्चा था और रत्नप्रयाग में हमारे आन स नानि पड़ल अंधे ने उम अलकनन्दा के बाण शिकार मारा था। इस मार की खबर हमें मार द्वारा पीड़ा में मिल गई थी और हमने बहा अशामभव धीघ्रानिगाध पन्चन की काणिग भा की। पर हाक बगल पर पड़ल ही हमें पत्तारा में मात्त हुआ कि अंधे ने पिछले रात लडके का सम्पूर्ण गवागप खा लिया है और कोई भी चाज उमन एमी नया छाड़ी तिम पर हम गाय बर सके।

रत्नप्रयाग में शार माल का दूरी पर आधोरान के समय एक गाव में यह लडका मारा गया था और यह शभव नहा था कि बिना शत्रु भाजन प्राप्त करने के बाव बरने न नया का पार किया है। इसलिए हमने अरन आन पर फोरन ही दाना मूट के पुला का बर करने का प्रयत्न किया।

गत गालवा में इन्टरमन ने सूचना सबी बरन हा कारगर व्यवस्था का था।

इस इलाके में अगर कोई बुद्धि वरुण गाय या बार्न जादमी मारा जाता या जवरदस्ती दरवाजा बालन का प्रयत्न किया जाता तो इस बात की खबर हमें सूचना व्यवस्था द्वारा मिल जाती। इस प्रकार हम आदमखोर का कागजकारिया के सम्पर्क में रहे। हमारे पास सक्काही शूरी खबर और अपवाह आत्मखार के कथित आक्रमण के बारे में पत्रों जिसके कारण लोग का भीना यात्रा करनी पड़ी। पर यह कोई आश्चर्य की बात न थी क्योंकि जिस क्षेत्र में आत्मखोर आदमिया को मारता है उसमें हर व्यक्ति अपनी ही छाया सज्जता है और रात में हर आवाज आदमखार के ही मध्य मधी जाती है।

इसी प्रकार की एक जनशक्ति कुडा गाव के गल्ट नामक निवासी के विषय में है। कुडा अल्कनदा के किनारे रुद्रप्रयाग के सात मील की दूरी पर है। एक दिन सायंकाल का गल्ट अपने गाव से एक मील दूर अपनी छान में जानबारा के साथ रात बिताने चला गया और जब उसका लडका अगले दिन प्रातःकाल छान पर गया तो लडके ने अपने पिता का कमल छान के दरवाजे में आधा भालर और आधा बाहर लटका पाया और पास की गोश जमीन में उस बिचड़न के चिह्न भी मालूम हुए और उसकी करीब आत्मखार के पजा के चिह्न भी थे। गाव लौटकर उसने हाथों में बताया और गाव के लगभग ६ आत्मी गल्ट की लाल की तलाश में गए और चार रुद्रप्रयाग हम खबर देने भजे गए। इवटसन और मैं अल्कनदा के घाई जाते वाले पहानी क्षेत्र का हाका करा रहे थे और उसी समय के चारों आत्मी आए। मगर विचारम था कि वरुण नगा के हमारा आर ही था और गल्ट के बचने द्वारा माने जाने की बात निराधार है। इवटसन ने चार आत्मिया के साथ एक परिवार का इस आदेश के साथ कुछ भजा कि वह खुद न गयी कर और हम वापसी में रिपाट दें। अगला ही नाम का हम पटवारी की रिपाट मिला और लाल के दरवाजे के बरतों की गान्धी मिट्टी में अपिल बजरे के पत्र का रेखाचित्र भी मिला। रिपाट में यह भी कहा गया कि समीपवर्ती इलाके की लाल भर लगता हुआ रंगी और दाँतों आत्मी रंग रहने पर भी गल्ट का कोई

बेवगव नहामिग अत तलागी जारा रनी जायगा। रेखाचित्र में छ वृत्त थ।
 भानरा वृत्त एक प्स्ट व बराबर वग था उमक चांग आर ममान दूरी पर पाच
 और वृत्त थ जो पाय व प्पा व बराबर थ। मत्र वत्त कम्पास म बनाए गए थ।
 पाच त्रिज्वा द्वाद ठीक उम समय जब इयटसन और म पु व मीनार पर बरन जा
 थ एक क्राधिन व्यक्ति व ननुत्व म एक जठम बगल की आर आया। क्राधिन
 व्याकत बड जार म थ रहा था कि उसन एमा कार् अपराध नग किया जिसक
 कारण उम गिरफ्तार करके क्प्रयाग गया जा रहा थ। वह क्राधिन व्यक्ति गल्लू
 था। हमारे गान किण जान पर उमन अपनी क्तानी मुनाई। एसा मान्म हुआ
 कि त्रिम रात वह अपन घर म जा रहा था और त्रिम रात उसके मारे जान की
 खबर था, गल्लू का उडका आया और उमन बताया कि उसन एक वत्त की जाडी
 क लिए ?) अण कर लिए ह। गल्लू न कहा कि व ७) स अधिक के
 नहा थ। गात्रा कमाई व इम प्रकार दुग्प्रयोग म गल्लू का क्तना प्राध आया कि
 छन में रात विान व वा वह जग्नी उग और म मील दूर एक गाव म जग्ना
 उमनी लडकी रहती थी चला गया। अनन गाव कु म लीन पर पत्वारों न
 उम गिरफ्तार कर लिया। गल्लू न पूछा कि आखिर उमका एमा क्या बमूर
 थ त्रिम कारण गिरफ्तारा हुई। म हाम्य था वह कुछ थ वा नी समझा
 पर जब व अनलिदन समन गया तव उपस्थित लागा की मानि थ लूव हमा।
 त्था उम इम धान पर थी कि गडवा व पटवाग जम महत्त्वपूर्ण व्यक्ति, त्रिम
 पति व अधिकार भी प्राप्त ह उम पाच त्रिज्वा तब तलाग करत थ और वह
 व ग म म मील दूर मोज करता रहा।

इसके बाद क्प्रयाग व झूला पुल की मानार पर त्रिम पर प्रदुपित थापु
 निर्मित था करता थी पत्ता क्तना पम नहा था। उबडा और वत्त मीत्रू
 था थ इमति मीनार व महाराज में उमान एक प्स्टफाम बनान का आया थ।
 इम प्स्टफाम पर पाच रात तक जठनक इयटसन क्प्रयाग में रहे इम गग बड।
 इयटसन व पाच जान व वा वपरे न एर कुना धार बकर और म गाग

मारा। कुत्ता और बकरे तो जिन रातों का मारे उहा रातों का खा लिए गए थे। पर म प्रत्येक रात की छाया पर दा-दा रात बठा। पहली रात की छाया पर जब म दूमरी रात बैठा हुआ था वधरा आया और ठीक उस समय जब म अपना रातफल उठा रहा था और विजयो की बत्ती को जलान ही चाहा था एक स्त्री करीब क ही मकान में—धानी म जिस मकान में बठा था उससे ग मकान म घम स चारपाई म बूदी। वह निचाड सोलना चाहती थी पर दुर्भाग्यवश उसन वधर का मगा दिया।

इस अवधि में कई आत्मो नयी मारा गया पर एक स्त्री और उसका दुधर्महा बच्चा बुरी तरह घायल किए गए थे। जिस कमरे म स्त्री अपने गिण्टु के साथ सा रही थी उस कमरे क द्वार का बधरे न गाल डाला और उसकी बाह पकड कर उस बाहर घसीटन की चांगिगी की। भाग्यवश स्या दिल की मजबूत और बहादुर थी उसके हाथ ठीक रहे और बहोशा नयी आई और जब बधरे न उस फा पर घसीट कर सल दरवाज स बाहर निकल कर घसीटना चाहा ता उसन फौरन किचाड बल कर लिया। उसकी बाह बुरी तरह घायल हा गई और छानी पर कई गहरे घाव हा गए और बच्च क सिर म एक घाव था। इस कमरे में म गी लिन बठा पर वधरा नया आया।

माच क अन्तिम दिना म एक दिन म जेठारनाथ-यात्रा-माग पर एक गाव में घूमन क घाट लौट रहा था तब जम ही म उस स्थान पर आया जहा महक मलाकिना क बिल्कुल निबट म जाती इ-जग म वार फीट का जल प्रपात ह-मने कई आत्मिया का जल-प्रपात न पाम एक घट्टान पर नयी क दूमरी ओर का बठ देवा। उन म पाम एक लम्ब घाम म लगा तिकोना जाल था। सडक का छाड कर म प्रपात की आर की पाम वाली घट्टान पर ब गया। उस दिन म काफी घूमा था इसलिए आराम करन और तमापू पीन की तबियत भी था और साथ में मह भी लुया था कि क आत्मो क्या कर रह ह उन देखू। फौरन ही एक आत्मो मदा हुआ और उसन प्रपात के नीच गिरनवाले जगणार पानी की

आर उत्तजित हाकर सकन किया। उसके दा साधिया न लम्बे वास मे लग जात का प्रपात क पास कर दिया। महाशर मछलिया का एक बडा समूह जिसम पाच पीड म लगकर दस पीड तक की मछलिया था प्रपात से बूदन का प्रयत्न कर रहा था। उनम स एक जो लगभग २५ पीड की हागी प्रपात म अलग बनी और जब वह पानी म दुवारा बूटना चाहती थी तब उन लोगो न बडी दक्षता से पकड लिया। जाल से मछली निकालन और छावडी म रखन के बाद जाल का फिर उसी तरह रख कर फिर मछली पकडी गई। लगभग एक घट तक म इस समाग का दक्षता रहा इस बीच म उहान चार मछलिया पकडी। ये सब एक ही आकार यानी दस पीड की थी।

जब म पिछली बार ह्प्रयाग आया था तो डाक बगल के खोकीदार न बताया था कि हिम-जल के आगमन से पूव बसत म अकनदा और मन्किना ननिया म मछला का निवार बहुत अच्छा होता ह। इसलिए भय की धार म बसा म मछली मारन के सब सामान म सुसज्जित होकर आया था। मरे पास बहुत सडिया १५ फनी नामन (Salmon) मछली मारन का बसा थी अच्छी डारी थी जा २५० गड लम्बी थी। विभिन्न प्रकार के बाट निरक्षिप्त इत्यादि सामान मरे पास था।

बघर की आसमसारी की कोई खबर नहा आई था इसलिए म जलप्रपात पर यमी और डारी स्वर पहुचा। पिछले दिन की भाति मछलिया प्रपात म नही बूट रही था। नदी के दूर किनारे पर बठ लग आग सेंक रहे थ और हूक्का पी रहे थ। हूक्का का गरम एक हाथ म दूदने हाथ म जारी थी और ब बडी उमुकता मे मन दन रहे थ।

जलप्रपात क नीच तीस म चालीस गड छोडा एक तालाब था जिसक दाना आर बट्टान की लीवार थी। तालाब लो लो गड लम्बा हागा और जमी म खडा था यानी तालाब के ऊपरी किन पर बहा म वह लो गड तक स्थिर पन्ता था। इन गुन्गर और आकषक तालाब का पानी स्पटिक का भाति साफ था।

तालाब के सिरे पर चट्टान पानी में बाँध लगभग १० फुट ऊँचा समकाल
सा बनाता थी और बीच गड़ तक इसी ऊँचाई के बाँध करीब सौ फीट तक वह
दुल्हा भी थी। तालाब के भरी आर में पानी के धरातल तक पहुँचना सम्भव
नहीं था। साथ ही मर स्थान में किमी मछली का पीछा करना यानी रम्मी
हालात्क जगह घटना अभिप्रेत नहीं था। ऊपर पेड़ और झाड़ियाँ थी और
तालाब के अन्तिम भाग की तरफ टूटती फलित धारा का अलकनदा में संगम था।
वही में किमी मछली का इस तालाब में पकड़ना मठिन और खतरनाक था। पर
पुल के पार जाया जा सकता था अगर मछली काट में पकड़ जाय। पर अभा
ना मने डारी और काटा ही नहीं मभाल था।

मरी तरफ तालाब में पानी बहुत गहरा था और वह जल्दा बलबुल बनाना हुआ
गिर गया था। धरातल उमका माफ था और तह त्रिषार्थ देती थी जिस पर
चर मछली फीट तक पानी गहरा रहा था। उस साफ धरातल पर हर पत्थर
त्रिषार्थ रहा था इसमें तीन पीड़ में दस पीट की मछलियाँ धीरे धीरे धार की
ओर बढ़ रही थी।

म इन मछलियाँ का बाँध फीट ऊपर बैठा देख रहा था और हाथ में दो इंच चौड़ा
काटा था। इतने में अगल-अगुलतार मछलियाँ एकदम निकल जिनके पीछे
तीन बड़ महागर थे। मन फौरन हाँ काटा पकड़ दिया पर निगाना ठाक न लगा
और पानी के दूसरी आर जा लगा। पानी में काटा जस ही गिरा वस ही नायक
मनाज़त उम मुह में दे लिया। ऊँच स्थान पर बठ कर पारी में नील देन और
खाचन में थम पत्ताहू पर मरा निमहा काटा मछली के महु में जकड़ गया था और
मर काट का महुन की उमम काफी दक्कन थी। एक क्षण ता बड़ समझ हा नहीं
मना और पानी में समकाल बनानी मझ मरु पेट दिगानी खड़ी रही। तब
उमन गिर इधर उधर हिलायी और नायक लकन खम्मच में भर गई और
धार की आर नज़ा में दोड़ी और अपनी दोड़ में आम पाम की मछलियाँ
का टरा लिया।

पहला दोड़ म महागर न गगभग सौ गज रम्मा मरा वमी म खच गी और याडा एक कर पचास गज का और सपाटा लगाया । अभी रम्सी बाकी था पर वह तालाब के माड पर पहुच गई थी और ताणाब क खतरनाक किनार पर भी । पर रम्सी में डींग देकर फिर कभी तानकर मन मछरी का मुह ऊपर धार की ओर कर ली लिया । एसा करन क बाद मन उसको धीरे धीरे माड कर किनार सखाच करसो गज लम्बी जल रागि म जिम म लय सक्ता था ग जाया । ठीक मने नाच एक चट्टान आग का निकली हुई थी और नदी से सटा स्थिर पानी (back water) बन गया था । आव घट की कठिन लडाई क बाद महागर उसम खिच आई । म मछलीको उसस्थान पर तो ले आया था पर सट हुए चट्टान का पार करन का कोई मौका न था तब मनने सोचा कि डारा काटना ही पडगा इतन ही म मरे ऊपर छाया पडी । चट्टान क ऊपर म खन हूण नवागन्तुक न पूछा कि बडी मछला फस गई ह और अब म क्या करन जा रहा ह । मन बनाया कि चट्टान के ऊपर ता मछरी का खालना सम्भव ह नगा ता डरी ही काटना ठीक ह । उमन कहा अरे सहव प्रतीक्षा कीजिए म अपन भाई का लन जाता ह । उसका भाई आमा ता मनने देवा एक लम्बा पतला दुबला नचकआ जमा आपापाग एक पट्टेरा ह । उसक हाथ गावर म सन थ, वह स्पष्टतया अपना गानाल का साफ कर रहा हागा । मनने उमन कहा कि पहल नती म हाथ साफ कर आओ ताकि चिकना चट्टान पर फिसल न जाओ । जब तक वह लम्बा-पतला लट्टवा हाथ धान गया तब तक मनने उसक छाल भाई म परामग किया । जहा हम सड थ वहा कई डच बीडी एक तरार टडी मडा पाना क टकड वाल पत्थर पर छ डच चाडा हाकिर बल हो गई था । हाथ धाकर लट्टवा भी आ गया । अन म याजना वनी कि छाग भाई पत्थर का चट्टान पर जायगा और यहा भाई दरार में जहा तक जा सकगा आपगा और छाग भाई का हाथ पकड लगा । म चट्टान पर लट लट बड़ भाई का हाथ पकड लूगा । मनने याजना कायरण म लान म पूव पूछा कि क लगना भी जानत ह ता दाना न हू

कर उतर दिया कि वे बचपन से ही मछली मारने और नदी में तरत ह ।

योजना के सफल होने में एक बठिनाई यह थी कि म दा वाम एक साथ नहीं कर सकता था बल्कि बम्बी भी एक हाथ से पकड़ रहा और आदमी का हाथ भी पकड़ रहा । पर कुछ खतरा तो उठाना ही था इसलिए मन बम्बी को रख कर डारी का पकड़ लिया । जब दांतो भाई अपने अपने स्थान पर जम गए तब म चट्टान पर लवा गत गया और वह भाई का हाथ पकड़ लिया । उसके बाद मन धार धारे मछली का चट्टान की तरफ खाया । ऐसा करने में म डारी का कभी तो अपने वाए हाथ से पकड़ता और बम्बी दाता से । इसमें तो कोई गड़बड़ ही नहीं थी कि वह लड़का मछली पकड़ना जानता था क्योंकि जैसे ही मछली ने चट्टान छोड़ बैस ही छड़क न मछली के एक गलफ में अगूठ का और दूसरे में अगुठिया का घमड़ कर मछली का मजबूती में पकड़ लिया । अब तक तो मछली खिचाव में आती थी पर जब उसका गला पकड़ा गया तब उसने पछ में इधर उधर तड़पना शुरू किया और कुछ क्षण तो ऐसा लगा कि हम तीनों ही तरा ऊपर नदी में गिर जायेंगे ।

महागर के नीचे के होठ के घमड़ में काट की तीना नाके गजरी घूम गई थी और जब मन काटा निकालने के नीचे के होठ का काटा तो दाता भाइया ने बड़ ध्यान में उसे देखा । अब काटा निकल आया तब उन्होंने उसे अच्छी तरह देखने की आज्ञा वाली । एक ही क्षण में तीन नाकवाला काटा उन्होंने पहले बम्बी नहीं देखा था । वाली हुई पीनल का एक बकल डारी का डवान का काम करता था । काटा में क्या खारा लगाया गया था ? मछलिया पीनल का क्यों खाना पसन्द करती ? क्या मछलिया पीनल को खाना पसन्द करती है या किमी दूसरे मूख खार का ? जब उन्होंने सब चीज अच्छी तरह देख ली तब मन उन्हें जब तक म दूसरी मछली पकड़ता है बचने का कहा ।

नालाब में सबसे बड़ा मछली प्रपात के नीचे थी और स्फनिल पाता में महागर के अलावा बड़ी बड़ी गछ मछलिया भी थी । गूछ मने खार का बहुत अच्छी

पकड़ लेनी है पर पहाड़ी नदियाँ म नत्र फीसदी डारी इसलिए टट जाती है कि जब वे काट में फस जाती हैं तब वे तालाब का तह में बैठ कर अपना मिर चट्टान के नीचे कर लेती हैं। वहा से उन्हें निकालना कठिन काम ही कभी कभी असमभव भी होता है।

जहा मनें पहला मछली पकडा या उमस और अच्छी जगह वमा म चारा फेंकन की नहा थी। इसलिए मन दुबारा उसी स्थान पर अपना आमन जमाया। हाथ म वमी पकडा डारी फकन की नयारा की।

मनें पहला मछला पकडी या इसके कारण मानी उम ढांग देन आर खचननमा चट्टान में म मछला निकालन के कारण तालाब के तह का मछलिया तिनके वितर हा गए था पर वे धार घोर वहा गीत रुडा थी। फीगन हा दाना भाइया न उत्तजिन हाकर अपना अगनिया नीच का धार का आर का जहा गंग पानी गरु होना था। वहा एक बरुत वरी मरली थी। डारी फवन म पहल ही वरी मछली लीटी और विलीन हा गई। पर घाडा दर वात हा वर फिर तिराई पडी और छिछल पानी में आ गई। मन चारा फका पर डारी भीगन के कारण वर कुछ छाला पडा। पर जब नवारा फका तब टीष फिका और उचिन समथ पर फिका माना जहा म उम गिगता चान्ता था वही गिरा। एक मकिड का प्रताक्षा के वात ताकि काट म लगा चम्पक डूब जाय मन चारा का पटना घर किया। जम हा घाड याड झटव म म उमे मौचन लगा मन्गार मछली आण का वडी ओर काण मडवनी म उनके मह में फस गया। बड आर म वर उछला पानी म बाहर गिरी और फिर एकत्र उछलकर पानी म गिरी और फिर उमस हाकर नरी का धार के राय गीडन लगा। नरा बिनार के दूर के आत्मा इस मव विघाकलापका उतनी श्री राचवता म मय रर थ त्रिवन गाना भाई।

जम हा डारी निकलता जाती थी नना भाइया जा मरे दाना भाग मड व आप्त किया कि म मछली का तालाब के अतिम मिर नव न जान दू। एमी

वान बन्ना ता आसान न पर बिना डारा क ताइन का खतरा उठाए किमा भा महानगर की पहली उमत्त दोड़ का रावना मभन नन्। भाग्य मरे साथ था या मछली दोस्त न डग्ली थी नहा ता मर पाम चक्क म कवण पषाम गज डारा और रह गई थी। मगुठा रसा हानावि उसन भयकर लडाई नन् छोडा माह क आर का विवी जोर अत म भट्टान क नीच वाण नन्ी क स्थिर पाना म चण गर्।

इस दूसरी मछला का निजालना उतना कष्टग्रन् नहा था जितना पहला का क्याकि हम म मे हर एक अवन अवन स्थाना और कामा का अब समझता था।

दाना मछलिया का लम्बाई एक मी था तकिन दूसरी मछला पन्नी की अपक्षा कुछ अधिक भारी थी। बडा भाई बड ठाठ क साथ मछला का मिर पर रण कर अवन गाव ल गया और छान भाई न मुझम प्राथना की वि उस भर साथ डाकगले चलन की आज्ञा मिण जाय और वह स्वय मछली और बसी कर चन्गा। इस समय मझ अपन उचपन का शान आई। भर एक भाई था जा मछली की शिकार मन्ता था और इमलिए जब उस लक न मझम प्राथना की ता उमव यण वहन की आवकता ही नन् रही। सान्त्र अगर आप मण मछली और बसी क चणन का इजाजत न और आप जरा मझ से कुछ दूर पीछ चण तो बाजार म और सडक पर मिन्न वाल आन्मी यही माचग वि इतना बडी मछली तिम उतान कमी ल्वा भा न हा मन ही पकडा न।

नरुरे की मौत

इबटमन पोड़ी स ३१ मार्च को लौट और अगले दिन ही प्रात काल जब हम कलक कर रहे थ हम रिपोर्ट मिली कि हद्रप्रयाग स उत्तर पश्चिम की ओर एक गाव के निकट पहली रात को बघरा निरतर बालता रहा। यह स्थान उस जगह से लगभग एक मील दूर था जहा हमन पिशाच-याग में एक बघरे का मारा था। गाव स उत्तर की ओर आध मील की दूरी पर और दिगात् पवत की बगल में एक बहुत बडा क्षत्र ऊबड़ खाबड़ जमीन का था जिसम बडी बडी चट्टान और बिकराल गुफाए और गहरें सुराक्ष थ। स्थानीय आदमिया का कहना था कि वहा उनकें पुरख ताबा निकाला करते थ। इस सम्पूर्ण क्षत्र में अरक्षित जगत् था जा कटो कहीं ता बहुत घना था और कहां बगरा जा पहाड की बगल में गाव ने ऊरबाटे पुस्तदार खतो से आध मील तक फैला था। मुझ बन्त दिना से इस बान का धरु था कि आत्मतार बघरा जब कमी हद्रप्रयाग के निकट हाता था तब इस स्थान को छिपाव के लिए प्रयुक्त करता था और म प्राय यहा पर एक ऊब स्थान पर चर कर बैठे करता था ताकि म उस ऊबड़ खाबड़ क्षत्र म बघरे का प्रात काल चट्टान पर बडा पाऊ ब्याकि गीतना म बघरे घुव लन के बड़ आदी हाते ह और बघरे मारन का यह बडा ही सरल तरीका है। एम समय बघर को मारन के लिए मिया दा बाता की जम्मत ह एक ता ठाक निगाना और दूमरा मत्र।

समय म पहल लव करके २७५ बार की राइफल लेकर हम चल पड। माथ में इबटमन का एक आत्मो था जिनके पास घोड़ी रम्मा थी। गाव में हमन एक जयान बगरा मरीला। स्मरण रह मनें जितन भी बकरे मरील थ उन मयका बघर न अब तक मार दिया था।

गाव म एक अमम बकगीया का माग उम ऊबड़-खाबड़ जमीन का जाता था। वहा म बह बाई आर का मुडा था और लगभग मी गज पन्नाड़ की बगल में

जाकर पहाड़ की बगल की ओर पहुँच जाना था। पहाड़ का बगल में हाकर जा रास्ता जाना था उसका माग इक्का दुक्का झाड़िया में अच्छान्ति था और उसने नीच के उतार की तरफ छोटी घास थी। माग के मोड़ पर जमान में हमने मजबूत खूटा गाँव और उसमें बकरे को बाध लिया। यह स्थान भरक्षित जगल में दस गज नीच था। हम पहाड़ के नीच का एक मो गज दूर चल गए— जहाँ बड़ी-बड़ी चट्टानें थीं उनमें पीछे हम लाग छिप गए। बकरा बड़ा ही चिल्लानवाला था। दस या समझिए कि मन जितने ज्यादा चिल्लानवाते बकरे देखे हैं उनमें से वह एक था। जब तक उनका पना और बंधक मिमियाना जारी रहा तब तक हम उसका दखन की जरूरत ही नहीं थी क्योंकि वह इतनी मजबूती से बधा था कि बधरा उसको रस्ती तोड़ या खँटा उखाड़ कर नहीं जा सकता था।

सूय आग के एक लाल गाँव के समान बेलारनाथ में ऊपर हिमाच्छादित पर्वतों से बकल एक हाथ दूर मालूम होता था। ऐसा मालूम देता था कि शिवजी की दखनजटाएँ पर्वत श्रृणियों के रूप में फली हैं और बेलारनाथ उनका भाल है और उस पर रत्नवर्ण सूय का गाला तिलक के समान अंकित है। यह दृश्य हमें तब दिखाई पड़ा जब हम चट्टानों के पीछे बैठ गए। आध घंटे बाद जब कुछ छाया-नी हुई बकरे ने गवतम मिमियाना बन्द कर दिया। चट्टान की बगल में रागकर और घाम की धिक में मैं मनमें देखा कि बधरा कनौती किए हुए ऊपर झाड़िया की तरफ दायर रहा था। जैसे ही मैंने देखा बकरे ने अपना फिर हिलाया और जहाँ तक रस्ती जा सकता था वह जाकर पाछे का लिचा।

बधरा निश्चितरूप में आ गया था पर वह बकरे पर झपटा नहीं था और झपटने से पहले ही बकरे का उसकी आगमन का पता चल गया था अतः यह स्पष्ट था कि बधरा बहुत ही चौकन्ना था। इवटसन का निगान में निगान में अपेक्षा कृत ठीक रहगा क्योंकि उनकी राइफल पर टैलिस्कोपिक साइट लगी थी और जैसे ही वे ऊपर राइफल उठाईं मनें उनमें कहा कि वे सावधानी में झाड़िया की

आर दखें जिधर बकरा देख रहा ह । मुझ विचाम था कि अगर बकरा वधरे का लख मक्का ह—मव ग एम ही थ—ना इवटमन अपन टलिम्बाप म म वधरे का जहर देख सकग । कई मिनट तक इवटमन न अपनी आख टलिम्बाप पर गाए रखी फिर हिलाया राइफल रख दी और मसस अपनी जगह आन का कहा ।

बकरा उमी आमन और ठीक उमी स्थान पर खडा था जिस पर मन उम पहल दसा था और उमी स लिंगा मिला कर मन टलिम्बाप का मिलाया । आख की पुतली का हिलना और वधरे की मूछ की बाल तक का हिलना उरुस दखा जा सकता था । पर मझ भी कुछ नहा लिखाई दिया ।

जब मने अपना आख टलिम्बाप म हटाई ता प्रकाश बडा तडा म क्षण हा रहा था और बकरा पहाड का सपदी में घबरा-भा लगता था । हमका बड़ी दूर जाना था बहा मवना खतरनाक भी था इसलिए खड हाकर मने इवटमन म चलन का कहा । बकर न जब म मिमियाना बल किया था तब म कोई आवाज नहा की थी । आग आग आत्मी फिर बकरा और पाछ हम दाना गाव का चल गिए । बकरा कभी रस्मी म वधा नहा था इसलिए रस्मी पकड कर ल जान में बड़ी आपत्ति की इसलिए मने आत्मी म कह लिया कि रस्मी माल द । मग अनुभव यह ह कि जब बकरा जगल में बाधा जाना ह तब मालिन पर याता डर म या साधिया क अनाक क कारण कुत्त की तरह पीछ पीछ चलना ह पर इस बकरे की ता घब्र ही निराला थी । जम ही आत्मी न रस्मी निकाला कम ही वह मुडा और आग रास्त पर भाग गया । इनन अच्छ चिल्लानिवाल बकर का छाइ दना अच्छा नही था । बल यह काम फिर भी कर सकता था । इमक अनिश्चन कुछ ही घं पूव हमन उमकी खामी कामत अग की था इस लिंग लाग उमक पाछ पीछ तडी म चल । माड पर बकरा बाए का मुडा और नडर में आगल हा गया । बकरे क पीछ माग पर जान हुए हम गग पहाड की बगल पर पहुंच जहा पर पहाड का एक बडा भाग घाम म आच्छाति था । बकरा कना

खिखारि न पडा इसलिए हमन निश्चय किया कि उसन गाव व लिए काई पगडडी पक- सी हागी इसलिए हमनाग पीछ का लोट पड। म आगे आग था और जैमे ही हम सी गज माग के आधी दूर पहुँचे हाग मन एव सफ- सी चीज माग पर पडी देखी। स्मरण रहे कि माग के ऊपर झाडिया और नीचे घास थी। प्रकाश बिलकु- नही था। तब यस्तु की ओर सावधानी से बहत हुए मनो दखा कि बकरा माग में पहुँच और मर ख पडा ह। एते क्षान्त पर रहेन स ही यह पहाड़ पर नीचे लटकन से बच सकता था। उमने गल से खून बह रहा था और जब मनो अपना हाथ उस पर रखा ता उसके पुट्ट अब भी फट- रह थ। नि सदाह यह आदमखोर का ही काम था। क्याकि दूसरा काई बधरा इस तरह माग म नही ख सकता था। मार कर मानो बधरे ने कहा यह जीजिए जनाव अपना बकरा अगर आपका इसकी जगत ही। धूकि अधरा ह आपका दूर जाना ह इसलिए हमो दखना ह कि तुम में से कौन गाव तक पहचता ह।

म नही ख्याल करता कि हम में से तीना आदमी जीवित गाव पहुँच जात धगर भर पास दियामलाई का पूरा बकम न हाता। इवटमन उम समय तमाखू नहा पीते थ। एक त्रियामलाई जलाकर सावधानी से देखकर कुछ चलकर फिर दूसरी जला कर इमी प्रकार त्रियामलाई को जलाते सावधाना म चलते ऊबड़ खाशड माग म गाव के करीब आग जहा मे हम गाववा- की आवाज दे सकन थ। वुलान पर व हमारे पास रागनी लकर आए।

बकरे का हमन का छाड दिया था। जब प्रात काठ म वहा लौटा ता आत्म खार बधरे के चिह्न गाव तक देख और बकरा वमा ही अछता पडा था।

साइनाइड जहर

बकरा दखन के बाल जो गत रात मारा गया था उसे ही स डाक बेंगल का गैर रहा था वैसे ही मुझ सूचना मिली कि रत्नप्रयाग में मरी उपस्थिति की सूचना जल्दतरत है क्योंकि धारमखोर द्वारा गत रात्रि का एक आदमी मार दिया गया है। मुझ समाचार देनेवाले यह नया बता सके कि वधरे न कहीं मार की है। पर धारमखोर के खोजा में स्पष्ट था कि हम लोग का गाथ तक पीछा करने के बाद वह मार्ग तक बकरे तक गया था और फिर माइ पर दाहिनी ओर को मुड़ गया था। इसमें मन अनुमान लगाया बाल में मरा अनुमान ठीक निकला—कि हममें से किसी का मारन में असफल रहन पर वधरे न आग पहाड़ की ओर अपना शिकार प्रान्त कर लिया था।

मैंने इवटसन को नन्दराम नामक व्यक्ति से जान करत पाया। नन्दराम का गाथ उस स्थान से लगभग चार मील था जहाँ हम गंग बल बैठ था। उसी गाथ से आध मील ऊपर और गहरी नगिया के दूसरी ओर गविया नामक अस्पष्ट जाति के एक आदमी न जंगल का एक टुकड़ा साफ कर लिया था और मकान बना कर आनी था परन्तु तथा बच्चा के साथ रहता था। मूय निकलन पर उसी प्रातः काल का नन्दराम न गविया के मकान की ओर से आवाली एक स्त्री की करण प्रकार सुनी, झिल्लाकर पूछने पर नन्दराम का बताया गया कि आधा घण्टा पहले मालिक मकान का आदमखोर उठा ल गया। इस समाचार को सुनकर नन्दराम भागता हुआ डाकबेंगल पर आया था। इवटसन न अरबा और विगादनी घाटिया के समझाई और अच्छी तरह खाता खाकर हमलाग कर लिए। नन्दराम पय प्रत्यक्ष के रूप में चला। पहाड़ पर सुनने की थी नहीं बस बकरा और गाथ भसा का भाग था। विलासनी घोड़ी का मरनाक माला पर चलन में बड़ी कठिनाई हो रही थी इसलिए घाटिया का हमन धारित कर लिया और अप भाग जा तब चढ़ाई का या पाल ही पार किया। जंगल में उर्वान स्थान

में स्थित मकान में आकर हमने दो दुखी स्त्रियों को देखा। उन द्विचारी स्त्रियों का अब भी यह ही विश्वास था कि मकान का मास्टर गायद अब भी जीवित था। उन्होंने हम जगह बनाई जहाँ मकान के दरवाजे के निकट गविया बठा था जब वधरे ने उस पकड़ा। वधरे ने उस अभाग आदमी की गर्दन पकड़ी थी और इस प्रकार वह कोई आवाज भी नहीं कर सका। मौ गज सचड़न के बाद उस मार डाला था। तब उसने धात वह उसे चार सौ गज दूर एक छोट गन्द स म ले गया जिसके चारों ओर घनी झाड़ियाँ थी। स्त्रियों के रोने धान और नन्दराम के चिल्लाने की आवाज से वधरे की शांति भंग हो गई थी और वह गविया का केवल गला जबड़ा कथा और जाध का एक हिस्सा ही खा पाया था।

शव के निकट जहाँ से वह लिखाई पत्र सूँध कोई पत्र पता न था जहाँ से हम शव को दब सके। इसलिए उन तीनों स्थानों पर जहाँ से उसने शव को खाया था पोस्टमियम साइनाइड रख दिया। सूँधि घाम हो रही थी इसलिए हम गंग एक पहाड़ी पर बैठ गए। वहाँ से हम उस गन्द को देख सकते थे जहाँ वह शव पड़ा था। वधरे ने मदे घनी झाड़ियाँ ही में था और यद्यपि हम अपने स्थानों में दो घंट छिपे पत्र रखे पर हमें आत्मसंयत दिखाने न पड़ा। शाम होने पर हमने वह लान्टर्न जलाई जो हम साथ लाए थे और डामबगल का लौट आए।

अगले दिन प्रातः काल हम बहुत जल्दी उठे और उमी स्थान पर दुबारा बैठ गए जहाँ से गहड़ा लिखाई पत्र था। जब हम बैठ तब उजाला शरु ही हुआ था। हमें न ता कोई चीज लिखाई थी और कुछ न आहट सुनाई पड़ा। सूर्योदय के एक घण्टे बाद हम लाग लाग पर गए। वधरे ने उन तीनों स्थानों का छुआ भी नहीं था जहाँ हमने जहर रखा था। उसने दूररा कथा और टाग ब्याह की लाग का वह सचड़ ले गया था और झाड़ियाँ में उसे छिपा लिया था।

इस स्थान पर भी कोई पेड़ नहीं था जहाँ बैठकर हम लाग देख सकें और वहाँ वहम के बाद यह तय किया कि इवटमन तो नीचे गाव की ओर जहाँ

आम का पत्र हू वही मकान बना कर रात बिताएँ और मरणा से चार सौ गज पर बर जहा हमने आत्मखार के पहलू दिन खोज देना था। बठन के लिए जा पेड़ मने चुना वह बुराम का पेड़ था जिसे गोगा न पहले मही जमीन से १५ फुट काट डाला था। कष्ट स्थाना से मजबूत साखाए फूट पडी थी और पुराने ठठ पर का गाम्वाआ से घिरा था मज्ज आराम और छिपनवाली जगह मिल गई।

मरे सामने बनाच्छादित ढलवा पहाड था जिसके नीचे छोटे वासो की झाडिया थी। पहाड पर पूव और पश्चिम की ओर जानवाली एक पगडडी थी। बराम का पड इस पगडडी से २५ फीट नीचे था।

पेड़ के अपने बठन के स्थान से मुझ पगडडी के २५ गज बिना किसी रकावट के दिखाने पड़ते थे। पगडडी मरी चारों ओर का एक नरिया में होकर जाती थी और उस घराम पर आगे नरिया का पार करती थी और मरे दाहिनी ओर का भी लगभग सीधे सी गज आगे झाडिया के जरा नीचे से जाती थी जहा लाग रखी थी। जहा पर माग इस नरिया को पार करता था वहा उसमें पानी न था पर ताम गज नीचे और मरे पकड़ नीचे तीन सार गज पेड़ की जह म छाट-छाट गडड थे जहा से एक पाना की धारा बहती थी जिसमें गाबवांग की पीन का पानी मिश्रण था और सती का आवपागी भी होती थी।

माग के व २५ गज जितना म बिना किसी रकावट के देख सकता था एक रास्ता समकाण बनाता हुआ मिला था। यह रास्ता मज्ज ऊपर तीसरी गज की दूरी से जंग भविद्या माग गया था आरंभ था। इस माग के सीम गज ऊपर एक मात्र था और उस बिन्दु से छोटा ढलाव नीचे के रास्ते की आरंभ था जंग में ऊपर से ढलाव शुरू होता था और नीचे के माग में मिलता था उतना भाग मुझ नया निर्वार पड रहा था।

पत्रमा का स्वच्छ प्रकाश पत्र टूजा था इसलिए टीस का चारों ओर नया थी इसलिए भगव बघरा मममाग या मकान से नीचे का तरफ का भाग ता मुझ बचने के आसान निगाना बाम से चालीस फुट का दूरा का ही मिश्रण जायगा।

म इवटसन को पहचान के लिए थोड़ी दूर गया था और सूर्यास्त से पूर्व ही पल पर बैठ गया। कुछ मिनट बाद तीन बत्ती तीतर-एक मगगा और दो मादा-पहाड़ के नीचे की आए और सोत पर पानी पीकर जिधर से आए थे उधर ही चले गए। आन और जान म के मरे पेट के नाच से गडरे से। उहान मस वि-बुल ही नहा देखा था अतः यह मिड्ड था कि मरा छिपन का स्थान बहुत ही बढ़िया था।

रात्रि का प्रारंभ तो निस्तब्ध था। लेकिन आठ बजे रात की दिशा में एक काकू न बोलना शुरू किया। बघरा जा गया था और मस विश्वास था कि वह लान पर उन दो मार्गों में से किसी पर होकर नहीं गया जिनको मैं देख रहा था और उमरी प्रतीक्षा कर रहा था। कुछ मिनटों तक काकू बोलता रहा और फिर वह चप पड़ गया और उसके बाद दस तक फिर शान्त रहा। फिर उसने बाद काकू डाला। स्पष्टतया बघरा दो घंट लान पर रहा और यह समय उसने पेट भरने का काफी था और उमन कई बार काफी जहर खा लिया होगा। जहर खान के लिए काफी मौका इसलिए था क्योंकि दूसरा रात को लान में खूब अच्छी तरह से जहर डाल लिया गया था और लान के भीतर बहुत स्थानों पर साइनाइड दाब के रखे गये थे।

बिना आविष्कारण में पहचान का आन का अपने सामने देखता रहा। बत्ती का प्रकाश खाना सेज था कि मैं खला जगह पर घास के तिनके तक का देख सकता था। दो बड़े प्राण वात मजान की आर में आनवाले रास्ते पर मन बधरे की पछले मनी। मन ऊपर से आनवाले और नाच से आनवाले रास्ते पर सूखी पतिया छिंका दा थी भाकि बघरे के आन की मस कुछ सूखता मिल जाय। वह इन पतिया पर लापरवाही से जा रहा था और चुपचाप चलन का उमन जरा भी प्रयास नहीं किया और मैं बघरे की कुछ ही सचिंसा में अपनी नजर के सामने देख कर गाना रख सकता। बघरे की लापरवाही की खाल में मुझे आगा हुई कि बघरे की हालत कुछ ठीक नहीं है।

माग के माग पर बधरा कुछ रुका और तब रास्ता छोड़कर बलाव में घुस गया। नाच माग में चला गया और वहां जाकर भी वह कुछ रुका।

म विना कुछ गति किए घटा तक अपने घुटनों पर राइफल रख बैठा रहा और चूँकि मुझ विश्वास था कि बधरा निश्चित माग पर अवश्य आवगा मनें यह तय किया कि उसको मैं अपने सामने से निकाल दूँ और जब राइफल उठाने की गति की भी ऐसन का मौका न होगा तब मैं जहाँ चाहूँगा वही गाली रख दूँगा। कुछ मक्खियाँ एक मैं मार का देखता रहा जोर मझ मही आगा थी कि साँसाओ की आड से मुझ उसका फिर दिखाई देगा। पर जब मेरे म्नाभुया का तनाव बहुत बढ़ गया तब मैं उनके बूँत की आवाज सुनी। वह रास्त से कूद कर आडा मेरे पड की ओर आरहा था। एक क्षण के लिए तो मुझ आभास हुआ कि किसी रहस्यमय ढंग से उस मेरे पड पर बैठने का पता चल गया है और अपने अंतिम शिकार के स्वाद की पसंद न करके वह दूसरे मानवी शिकार का पिकर में है। पर उसक रास्ता छोड़ने का कारण मुझे पकड़ना नहा था सात पर सीधा पहुँचना था, क्योंकि पीरन ही मैं उसक पानी पीने की एपलप आवाज सुनी।

पहाड पर बधरा की खाल की गति से और पानी पीने के ढंग से मुझ विश्वास था कि बधरा न बिप म्ना लिया है। पर मझ इस बात का कोई अनुभव नहा था कि साइनाइड बिप के अक्षर करता है और मुझ यहाँ भी पता न था कि जहर का पूरा असर कब होगा। पानी पीने के दस मिनट बाद तब जब मैं यह आगा कर रहा था कि बधरा सात पर मर गया म्ना मनें बलाव के दूँरी आर जान हुए उमर पत्रा की आवाज सुनी। जब यह निर्दिष्ट माग पर आ गया तब उमर के चरण की आहट दल हा गई और वह पहाड के बगल की आर चला गया।

किंगो भी समय पर जब बठ माग में नाच आ रहा था बलाव में हाकर निकल रहा पहाड में मरी जा के पाम में निकला जब पानी पी रहा था, तब खापिभी में जा रहा था मनें उस बिल्कुल नहा देगा। यह बात घात मयाग से हुई है।

घाह बंधरे न जानबूझ कर की हा पर यह निश्चय है कि बंधरा जाणियो की थाड म ही रहा जहा चरमा का एक भी किरण नहा पडुवती थी ।

बधरे पर निगान लन की अब काई आगा न था पर मर निगान की काई बात नहा था खगर माइनाइड जहर उतना ही बाग्ग है जितना ननीता में डाक्टर न कता था ।

गग गग म पड पर बैठा ही रहा । रास्ता देखता रहा और आवाजा को सुनता रहा । मरका हाते ही इवटसन लाने । हम लोग न एक एक प्याला चाय बना कर पी और मन उभरे रात की सब बात बना दा ।

गग को देखन पर मालूम हुआ कि बंधरे न उस गग के घाह भाग को खाया है जिनका दो रात पहले खाया था । जिस भाग को उसने खाया उसम विष की पूरा एक सगक रची थी । मरू अतिरिक्त विष की पूरी ल और सुगक उसम खाठा थी एक बाण बध से दूसरी पाठ से ।

अब बंधरे की नलाग करना आवश्यक था । इसी उद्देश से पटवारी जा इवटसन के साथ आया था आन्धिया का इकट्टा करने चला गया । दोपहर के बराब पटवारी दा मौ आन्धिया का ठेकर भाया और इन आन्धियो से हमन पण्ड का यह सब भाग जिधर बंधरा गया हाका करके छान डाला ।

जहा बंधरे न पानी पिया था वहा से आधा मोल की दूरा पर और वहा से मीघी पक्ति में जहा से मन बंधर का जात मुना कुछ बड़ी चट्टानें एक बहुत लम्बी और बड़ा गुफा थी । बाप के घमन के लिए वहा ययष्ट स्थान था । इस गुफा के दरवाजा के निकट बधरे न उमीन खगची थी और वहा पर उमन उल्टी बरक आत्मा के अगूठ भी निकाल लिए थे कयाकि आत्मी के अगठा का वह सावुन ही निगल गया था ।

पन्ना की बगल से स्वदमेवबगण बड़ी नत्रियन से पत्थर लान और उम गुफा का मरू बन कर लिया और उसका हम तरह बात कर लिया कि अगर उममें बंधरा हा था किमा तरह निकल नही सकता था ।

शमल तिन प्रातःकाल में उस गुफा पर एक मृत्त का जाली का तार लगा और रात की तम्बू गाड़ने का खूटिया। कुछ पत्थरों का हटाने पर गुफा के मह पर मनें घड़कूती में तार लगा दिए। उमक वान् दस तिन तक में गुफा की प्रात और साय तेवत आता रहा। इस अवधि में जालमखोर की किसी मार का खबर नहा मित्री। इसलिये मरी जाणा बलवता हा गर्म कि दुबारा रत्नप्रयाग आन पर मम कुछ मकत जहर मिलेगा कि आदमखोर बधरा गुफा में मर गया ह। दसय दिन जब म प्रात काल गुफा पर आधा तब भी ज्या की स्या ही बल मित्री और जब म लौट कर डाक यगत् आया तब डबटसन न मक्ष यह खबर दकर स्वागत किया कि पाच मील दूर एक गाव में पिछली रात का एक स्त्री मार डाली गई ह। वह गाव रत्नप्रयाग से यत्रानाय यात्रा भाग के ऊपर लगभग एक मील ह।

मह स्पष्ट था कि साइनाइड उक्त पत्र के लिये उचित विष नहा नू जिम्मेवार म मुन रखा था कि वह मलिया और कुष्ठता से पनपना तथा उत्तजना पाता ह। बधरे न साइनाइड जहर साया था इसमें भी सदर नहा कि वह गुफा में घसा था क्योंकि उमक बाल गुफा में लग था जहा उमका पीठ का सम्पर्क गुफा में हुआ था।

गाय साइनाइड की अति अधिक मात्रा से कुछ अमर न हुआ हा और दस भा सम्भव ह कि पहाड में कहा दूर गुफा का दूराग मह भा हो। कुछ मी हा मर लिये अब मह कोई आन्तम की बात नहीं था कि गन्वाल्या की जा आठ दस में बधरे के निबटनम सम्पर्क में रह हा यह धारणा हा जाय कि बधरा चाट प्रताम्मा हा चाहे जानवर पर उममें अनाधारण आन्तमौनिक गक्ति अवश्य ह और बिना अग्नि श्व की सहायता से उतकी उमस मक्ति नहा हा मकता।

नदूसत

व्यक्तियोग के लिए महान् खनधात्री खबर बड़ी तात्पर्यगामी होती है और गढ़वाले में पिछले दस दिनों में यह खबर पायी गयी कि बंधन को जहर दे दिया है और गुफा में मूढ़ दिया है। ऐसी दशा में यह स्वाभाविक ही था कि लोग अपनी सतर्कता में डिलाई कर दें। बंधन भी विषय के अमर में चेतन कर गया निकास पाकर पहिल ही व्यक्तियोग पकड़ ही लिया जो सतर्कता में डिलाई दिखा रहा था।

मं गका से जल्दी ही आ गया था इसलिए भरे मामल सांग दिन पडा था। काल के बाद हम सांग तयार हुए राइफले साथ ही और स्त्री के मारे जान का खबरवाले गाव का पता दिए। सांग भाग पर तेज सवारी के बाद हमन पहाड के लिए आडा रास्ता पकडा। उस रास्त पर एक मील आग जहा सांगारा रास्ता गाव के रास्ते से मिलना था जमीन पर सघप के चिह्न थे और जमीन खून में रंगवण था। भूतक के रिश्तेदार और मयिया हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे और उहान यह जगह बताई जहा बंधन मंत्री का पकडा था। जब वह दरवाजा बंद कर गयी थी तब ही बंधन ने आश्वोषा था। वहा से बंधन लगभग सौ गज तक पीठ के बल उसे खाल ल गया था। वहा जाकर उसने उसे रस दिया और एक तीव्र सघप के बाद उस मार डाला। गाव के सांगान स्त्री का घसीटना और उसका चीखना सुना था क्योंकि वह अपनी जान बचान के लिए बंधन से सघप कर रही थी पर गाव के सांग खन डरे हुए थे कि कोई नहा पहुचा।

जब मंत्री मर गयी तब बंधन ने उस ऊपर उगामा और एक खुली नरिया का पार कर बज्र जमान में ले गया और फिर वहा से पहाड के ऊपर लगभग दस मील गज की दूरी पर। बिचडन के चिह्न नहीं थे पर खन के सांग स्पष्ट थे और उसमें हम सांग कुछ समतल जमीन पर पहुच जा चार फुट चौड़ी और बीस फुट लम्बी था। जमीन के इस सखीण लड के उपरी आर एक अफुग समकोण

बनाता हुआ पुस्ता था जिसके ऊपर एक छोटा पेड़ था और इस सजीव भूखण्ड के नाच की आर पहाड़ का तंज उतार था जिस पर जगली गुलाब की झाड़ी थी जो पड़ तक आ गई थी और पेड़ को दाब लिया था। इस सीध खड पुस्त और गुलाब की झाड़ी के बीच हनट्टी सी की हुई लाश पड़ी थी। लाग कोई छत्तर वर्षीया बुढ़िया का था। सब कपड फाटकर फक हुए थे और नग्न षण पर ऊपर से गुलाब की पत्तियों बिखारकर गिरी हुई थी। क्या प्रकृति न उस घूदा को गाद म लकर पुष्पाजनी बढाई थी? अथवा उस उमर पर जिन्दगा और मौत म कोई फरक नहीं है इस वान के लिए गुलाब की पंखडिया स्वय गुलाब म विदीण हुकर षढावे के म्म में उस पर आ पडी थी ?

दयनीय मार के लिए बघरे का अपन जावन से हाथ धोन पहग। पाठ परामग के वान इवटसन ता आवश्यक सामान लेन रुद्रप्रयाग बले गए और म इधर-उधर दवन गया कि क्या दिन के प्रकाग में बादमखोर से सम्पक सम्भव है। पदम का वह भाग मरे लिए नया था इसलिए पहला काम मरे लिए यह था कि वासपान के स्थानों की म पडता कर लू। गाव म ही मन यह जाच कर ली था कि पहाड नरियास चार म पाच हजार फीट तक ऊचा गया ह और पहाड की चानी के दो हजार फीट चौड और घन वाम से आन्डात्ति ह। उसके नीचे आध मील की चौडाई तक छाया वाम का मुला फलाव ह और घास के नीचे छम्पूट भरदित जगल।

जगल और घाम के बिनारे की आर रहने हुए म पहाड का बगल के चारा आर गया और अपन सामन मने एक ढलाव पाया जो आधा मील तक यात्रा भाग के चारा आर पैला था। किसी समय पहाड यहां से टूटकर गिरा हागा जिसम यह बन गया था। इस ढलाव से आग जा ऊपर के सिरे पर भी गज चौडा था और नीचे जहा वह सडक से मिलता था तीन मी गज चौडा था। इस ढलाव के अग्न जमीन चला थी। इस ढलाव का जमीन नम थी। इस नम जमीन पर काफी बड पड थे और पदा के नीचे घनी सारिया था। ढलाव के ऊपरी सिरे

पर एक लटकती सी चट्टान की चोटी थी जो उचाई में धाम से चालीस फीट हाती और ाम्बाई में करीब सौ गज। इस चाटी के बीच में एक गहरी कुछ फीट चौड़ी दरार थी जिनमें होकर पानी टपक रहा था। चट्टानों के ऊपर छटपुट जंगल की एक पक्ति थी फिर घास। मनें इस जमीन का सावधानी से देखा। मरा विश्वास था कि बघरा इसी ढलाव में बही लटा है पर मनें यह नहीं चाहता था कि बघर का मर अस्तिव का पता चल। हा सुविधा के हिसाब से उस मरा पता चर जाना ता कोई खान नहीं थी। अब यह जानना आवश्यक था कि इस खान का ठीक ठीक पता चल जाय कि बघरा कहा लटा है। यह जानने के लिए मनें रात पर फिर लौट आया।

गाव में हम बता दिया था कि स्त्री के मारे जान के बाद ही प्रकाश हो गया था और स्त्री का मारने उमे चार सौ गज ल जान और थोडा सा भाग खान में लान का छिपान में इतना समय जरूर लगा होगा कि दिन काफी चढ आया हो। जिस पहाड पर लान पही थी वह गाव से पूरी तौर से लिखाई नेता था और दिन निकलने पर लान के स्थान से गाव की बहल पहल लिखाई पत्ती थी। इसलिए बघरे ने दयामभव अपन का छिपाव के स्थान पर ही रखा होगा इस अनुमान में और कम भी कि कच्ची जमीन पर खान नहीं मिल सकत थ म उघर चला जिघर मर विचार में बघरा गया था।

जब म आधा मील गया होगा तब गाव अदृश्य हो गया और वही न म ढलाव की ओर आ गया था कि बघर के खान मिलने से बड़ी खुशी हुई। काम काम पर मुझे उसके पदचिह्न मिले क्योंकि झाडियां के नीचे जहा जमीन मलायम थी वहां बघरा पटा पडा रहा था। इस जगह का छोटने के बाद उसके खानों से प्रगट होता था कि चट्टान की चांती से लगभग पचास गज की दूरी से यह उस ढलाव में धगा था।

आप घर तक में कहा पडा रहा जहा बघरे ने आराम किया था और इस आगा में अपन सामन पडा और झाडियां के इस ढलाव का दपना रहा कि बघरे की

धानी-सी ही गतिविधि से मझ उसका स्थिति का पता चल जाय ।

म कुछ मिनटा में ही इस देसभाल म रहा हूंगा कि सूखी पत्तिया म हरकत हुई और मरा ध्यान उधर गया । दीघ ही मेरी नजर म लो मतभया पभा आए जो पत्तिया में कीड़े टटाल रहे थ । जगल म जहा तक मामाहाग पधवा का मवध हू वहा तक इन पशिया म वढ कर और कई मुखविर नहीं ह । मझ आगा था कि वा म इन पशिया के जाड से बघरे का स्थान मालम करन में मुझ मदद मिल्गा । बघरा उस डलाध में हू इस बात क प्रमाण क लिए न ता वहा कई गति हा हुईन एमी कई आवाज ही सुनन का मिली पर मरा पूरा विश्वास अब भी था कि वह वहा ह और एक प्रकार से निगाना लन पर असफल होन पर मन उम पर दूसरी तरह से निगाना लन की मोची ।

खल म आए बिना बघर का लीटन क लिए दा ही स्वाभाविक माग थ । एक ना पहाड क नीच यात्रा माग का आर और दूसरा ऊपर । उम नीच हावन म मरा कोई लाभ न था पर अगर म उस ऊपर चला सका ता बह निश्चय ही चट्टान की खोली वाला साठियों की रक्षाप्राप्ति के लिए चट्टान की खानी का त्तरार में म प्रायगा । बघर क एसा करन से मुझ निगाना लन का मौका मिल्गा ।

जहा मन में माचा था कि बघरा होगा वहा मन में निमान म उसके आर पार चलना गुरु किया । कुछ काम खल्वर म कुछ ऊंच पर हा जाता था । चट्टान की त्तरार पर नजर रखन का आवश्यकता न थी क्याकि कुछ ही फीट नाच मतभया थ और बघर का गति का अपना आवाज म बना देने । म अभी लगभग चालास गज ऊपर का आग पीछ हल्वर बढ़ा हूंगा और दरार से कुछ वाई आर का दम गज हूंगा कि मतभया आवकित होकर ऊपर उध और बाध क एक छोट पड म जाकर बट गए । उत्तमिन होकर व पेड की गालावा में फूल ल्य । उहान स्पष्ट और चतावती देना गर किया । पहाडा में मतभया क अत्राम की आधी मोल तक सुना जा सकता ह । राइफल का ममालकर धीरे धीर म आग बड़न लगा । जमीन रातनी और गाला थी मरा आल्य दरार पर था । म लो

ही धार पर चला था कि खबरमाल क जून रफ्त गए । जब म मतुन्न कर ही रहा था कि बघरा त्तरार क ऊपर बूदा और कठजी तीतरा के एक झडवा उडा गिया जो मरे सिर पर तम्त-स चर गए ।

मरा दूसरा प्रयास अनफल रहा । यद्यपि मरे लिए बघर का घर कर बहा कसना आमान था पर एसा निरर्थक हा था क्याकि घट्टान की रार अशुभ्य रहना और म जब तक समलता तब तक बघरा बहुत नीचे निकल जाता ।

इवत्सन और मन खुंगी गरिया म दा बज मिलन का तय किया था । समय से पूव ही व हत्प्रयाग से लौट जाए सामान भी ले जाए । सामान में भोजन चाय पुराना पट्टोमकम लथ अतिरिक्त राइफल्, मछली मारन की रम्मी साइनाइड का दधट मात्रा और पिगाच-पाग थ । मन निश्चय किया था कि आवश्यकता पडन पर पट्टोमकम म ल चलूगा ।

पानी की स्वच्छ धारा क निकट लख छाया एक एक प्याला चाय पी तब शव की ओर गए ।

शवकी स्थिति का म महा कुछ वणन दूगा ताकि पाठक को हमारी गतिविधि और वाट की घटनाआ का समझन म सहायता मिल सके ।

लग्न जमान क समतल भूखण्ड के किनार पर गरिया के पाम पक्षी थी । जमान का यह भूखण्ड धार फीट चौडा और क्षीम फाट लम्बा था । आसपाम काई अच्छापेन न था जिम पर मवान बना सके इसलिए हमन बन्दूका क पर विष और पिगाच पाग पर ही अवलंबित रहन का निश्चय किया ।

सबसे पहले हमन लग्न में जहर डाला । समयाभाव के कारण बघरे न लग्न बहुत धाडी खाई थी और हम भगसा था कि अबकी बार वह जहर काफी खा जायगा । म लग्न क ऊपर झका यह अनुमान लगान क लिए कि बघरा कितना झडगा और इवत्सन न अपनी २५६ और मरी ४५ भारी राइफलोको दा पीघा म अटका गिया ।

बघरा जिम तरफ से भी चाहता लक्ष पर आ सकता था । पर उसका

स्वाभाविक मांग यहाँ आन के लिए बर ही था जिस से म पीछ छोड आया था अथवा समतल भूमि का लगभग १५ फीट का भूखण्ड। इसी भूखण्ड पर हमन विगाच पिगाच-पाण का गगना शुरु किया। सबसे पहल हमन जमीन से मूया पना और तिनके उठा लिए।

जब हमन जमान से काफी उम्बा चौडा, गहरा और छाटा गडडा खात लिया तो खुदी मिट्टी को पहले दूर हटा दिया तब हमन उसम पिगाच-पाण को रखा तब मजबूत स्प्रिंग को जो दाना का बर करत थे दबा दिया। जिस काट से वह खुलना उसे भां सभार कर गगा लिया। तब सारे पाण को हमन हरी पत्तिया से ढक कर मिट्टी छिडक दी। अत म सूखी पत्तिया घास के तिनके टोक उस तरह जमे वे यहा पड थे रख दिए। इतनी सावधानी से पिगाच-पाण रगाया गया था कि स्वयं हम गंगा को मालूम करना कठिन था कि वह कहाँ है। तब मरी मछली पकानेवाली रस्सी टार्न गई और राइफल के कीन पर बाध कर घट का चक्कर लगाकर गाँव के दस फीट तक ले जाया गया तब फिर दूसरी राइफल तक ले जाकर घट से बाध कर घाट से बाध लिया गया। रस्सी काट दी गई और टोक तनाव से रस्सा खींचो गई।

अनिम बार दृष्टि डालन पर हमें मूया कि अगर यधरेन घाग ओर चक्कर बाट और हमारा आर से गया तो वह राइफल्स और पिगाच-पाण गाना मे बच सकेगा। यम हमन एक देहानी को मन्त्र मगान भजा। मन्त्र मे एक पुत्र गहरे पाच गड्ड समतल भूमि पर अपनी ओर किए और उनम बटा झाडिया गाड़ दी। पेडो का गाड़ कर उर खुद खुदा ताकि व मजबूत हो जाय और स्वाभाविक प्रताप हो। अब हमें विश्वास हो गया कि छूह जमे पाण का छाड कर और बिगो तरंग का यथा पाण बिना मरे गाँव का स्थान नहा जा सकेता। राइफल्स के पांड उगार कर हमलाग गाँव को लीट आण।

गाँव मे पचाम गड और उग स्थान पर जमे हमन जमीन का खून से लपगय पाया था उन बड़ा आम का पड था। गाँव से हमन नमन मगाण और इमा

पेड पर मचान बनाया और मीठी गंध देनेवाले पराल को बिछा लिया। हमारा इरादा वही रात विद्या का था ताकि वधरा पिशाच पाग म फसे तो हम मार लें।

सूयास्त के लगभग हम मचान पर जा बैठे। मचान काफी लंबा था और हम दाना लट सकते थे। मचान से शव का दूरी नरिया म हाकर दो मी गज की थी। मचान क धरातल से पाव मी फुल ऊंचा था।

इवटसन का आगका थी कि उनकी राइफल से लग टैलिम्बापिक माइट से निगाना ठाक न लग हमलिये उहान दूरबीन उठा ली और मन २७१ बोर की राइफल भर ली। हमारी योजना थी कि इवटसन तो पहाड के उस भाग का दखल जिधरसे हम वधरे के आन की आगा कर रहे थे और म पहाड के चारो ओर देखूगा। मरी राइफल पर तीन सौ गज की साइट लगी थी और मन तब किया था कि म निगाना जहर लूगा। जब इवटरून शोका के रहे थे तब म तमास पी रहा था और सामन पश्चिम से धीरे धीरे पनाहा की बढ़ती छाया को देख रहा था और जब सूर्य की किरणें अनी कूचा से पवत गिन्ग को रक्तधण कर रहा थी इवटसन उठ और राइफल उठा ली कयाकि वधरे के आन का समय हा गया था। अभी रोगनी के पनाहीस मिनट बाकी थे। इम बीच हमन दंड ध्यान म पहाड की घग का दवा। इवटसन न दूरबीन में और मन आखा से परमात्मा न मझ तेज निगाह दी ह। वहा से म पग और पदी की गतिविधि को अच्छी तरह देख सकता था।

जब निगाना लेन के लिए दयष्ट प्रकाश नहा रहा तब मनने रात्फल रख दी और इवटसन न भी दूरबीन का केम में रख लिया। वधरा भागन का एक मौका निकल गया पर अभी तीन और मौक थे इसलिए हम इतात्माह नना हूए। अधरा पडते ही धारिग हुई और इवटसन से मनने कानाफमा की कि आज का काम सब चौपट ही रहेगा कयाकि अगर मेंह के जठ के अतिरिक्त बाज न पिशाच पाग का नहा घला लिया ता मछगा मारन को रम्सी ता सिफुड ही जायगी और राइफल चट जायगी। कुछ देर बाद इवटसन न मुझसे समय पूछा। मरे

पास रेडियम डायल की घड़ी भी और मनें बना दिए कि पीत आठ बज है। म समय बता ही पाया था कि इतन ही में राव की ओर से क्रुड और क्रूर दहाड की आवाज आई। हमारी खुशी का ठिकाना न रहा। वधरा वदप्रयाग का वति कुन्यात वधरा आखिर पिताच पाग में पस ही गया।

इवटमन तो मचान से घटाम म बूढ़ ही पठ और म एक गाल पकड़ कर बूढ़ और भाग्य की ही बात थी कि हमन हट्टी पमग नही तोरी। यत म छिपा पैट्रोमकम लप लाया गया। इवटमन जब उस जलान लग ता मनें वधरे क धारे में आगवा प्रगट की कि वधरा पिताच-पाग स गायन निकल गया। मरे प्रति इवटमन का प्रत्युत्तर वाजिब ही था वह यह तुम घोर निरागावादी हो। पहले कहत हा कुछ वृदा से ही पिताच-पाग और राइफल चल जायगी और अब चुनि वधरा गार नहा मचा रहा इसलिए यह निकल गयाह। म इमा तरह सोच रहा था और मेरा यही आगवा थी क्याकि जब पहले हमन वधरा पमाया था तब निरंतर गुरांता रहा और यह वधरा थोड गम्स न था वुरा तरह गान हागया था।

इवटसन सब लपा क मामग में विगपन ह। याड़ी ही दर में उहान पैट्रोमकम जला लिया और पप कर लिया। सकाआ का हटाकर हम ऊबन गावड जमीन में जली जली गए। अब इवटमन को भी वधरे की चर्पी म आगवा हुई। हम वरून समल कर चल। मछनी मारन की डोरी स वचत डूग और मम्भावित प्राधिन वधरे की आर हम लाग के ऊपर स आए। जब हम ऊच पुत पर आग तो हमन जमान में छद दगा पर वहा पिताच-पाग नहा था। हमारा आगा कुछ हरा हुई थी पर पैट्रोमकम क तड प्रकाग म पिताच-पाग लिखाई पडन ल्या। उमक दा वद और रानी थ। म्थी का गव पुत म ग्या त्थी पडा था और एक नडर में ही मानूम हा गया कि उसका काफी भाग गायो जा चुका है।

हम लोट कर थामक वृग को आर जा रं थ। हमार विचार इतन मं थ कि

उनका व्यक्त नहीं किया जा सकता था। पेड के पाम पहुँच और मधान पर चढ़ गए। अब जागन की कोई आवश्यकता न थी इसलिए अपने ऊपर कुछ पराल डालकर हम सो गए। रात ठण्ठी थी बिस्तर हम राण नहीं थी इसलिए पराल ऊपर डाला था।

सूरज के पहली किरण के निकलने ही हमने आम के पेड के नीचे जाग जाग पानी गरम किया और कई प्याठ चाय पी गए। अच्छी तरह ताप कर हम राण की आर गए। माथ में पटवारी इवटसन और मरे आत्मी और कुछ गाव के आदमी थे।

म यहा यह बना दू कि हम दो थे और हमारे साथ पटवारी और कई आत्मी और थे। पर अगर म अकेला ही होता तो म वह बात बतान में मनाच करता जो अब बतान जा रहा हू।

बूढ़ा का कातिंग अगर मौजूद होता और अगर उसने हमारी पिछली रात की तयारी देखी होती चाहे वह जानवर होता चाहे अन्य तो यह समान म कठिनाई हाती कि अपनी और बरसानी रात म मौत या गिरफ्तारी का वह कैसे बचा सकता था। मँह मद्यपि हल्का पडा था तबभी वह जमीन की मुलायम करन के लिए काफी था और हम पिछली रात की उसकी गतिविधि को समझ सक।

वधरा उगी और म आया था जिधर से जान की हमें आगा थी। समतल भूखण्ड पर आन पर उमन उमके नीचे ऊपर चक्कर लगाए और तब वह राण की आर उन ओर से आया जहा हमने मजबूती से झाडिया गाड दी थी। इन झाडिया में म सीन का ता उसने उखाड फेंका था। इस तरह से उमन जान के लिए एक छोड़ा शस्ता बना किया था और तब राण की पकडकर उमन फट दा फट राइफण का तरफ पाचा इस तरह से उसने मछली मारनकी डारी का डील का दिया। एसा करन के बाद उमन साथ का खाना गुर कर लिया। मान समय उमन डागे से समक नहीं होन दिया। स्मरण रहे डारी सब से बधी थी। हमने मनी की राण के तिर या गान म जहण रखना जरुरी नहीं समझा था।

इसी को उमन पहले छाया तब बड़ी सावधानी से शरीर के उन सब भागों को खाया जो जहर का सुगर्वा के बीच में था।

अभी भूख बुझा कर बघरे न गव का मोंह से अपना रखा फरन के लिए छोड़ दिया। मूस इसी बात की आगका थी कि बघरा ऐसा करेगा और उसन बसा ही किशा। मोंह के पानी ने बोंग स अच्छी तरह स लगाए पाग के छेद को नीचे दबा दिया। उमी के नीचे उसका घोड़ा था। उस ही पाग पर हाकर बघरा जा रहा था स्प्रग ढीले हो गए और पाग न दोना दाते उसकी पिछड़ी टाग व घुटनो के जोर पर पड। सबसे बड़ी धुपटना यही हुई बमोकि रुद्रप्रयाग में पिगाव-पाग रान में वह गिर गया था और उसका एव तीन इची दात टूट गया था और बघरे की पिछड़ी टाग के घुटन का जोर दाता में ठीक उसी जगह फसा था जहाँ एव दाता टूटा था। अगर दाता बना होता तो बघरा फम जाता और निकलन की कोई सम्भावना न रहती। एव दात के अभाव के कारण पाग की पकड इतनी लो थी कि वह अस्सी पीड के पाग का गड्ड में स निकाल लता पर दस गज तक जाकर बघरे न अपनी टाग टिका ली। पाग में बघरे के बाल और खाल का एक टुकड़ा था।

बघरे का यह व्यवहार किनना ही अविचसनीय मान्य हो पर जो जानवर आठ बप में थापछोर रहा हा उसमें एसी आगा करना आचय नहा ह। खुली जमीन को बचाकर, आड में होकर, धव पर आगा और हमार द्वारा रखा हुई बटींग शादिया का एना गव का सावधानी से अपनी ओर खीचना और गवके उग भाग का छूना तक नहा जिममें हमन जहर हाल गिया था सब एमी बातें थी जा अस्वाभाविक और असाधारण थी।

मरा विभाग ह कि मनें जा पाग व मरन की बात कही ह यह ठीक ह। यह भी विनित्र ही बात ह कि बघरे का पाग व ऊपर टीत उमा समय टिकना जब कि मोंह व पानी व बास में वह घल पसा।

पिगाव-पाग का माल कर और बद्धा व रिक्तता के आगमन का प्रतीका

के बाल हम संप्रयोग छोट पने । अपन आत्मिया की हम बहा सामान लान के लिए छोड़ आण थ । रात के किमी समय बधरा श्राम क पड़ के पास आया था क्याकि हमन उसके स्वाज बहा पाए जहा बडिया क खून से जमीन लपपय हो गई थी । इन मोजा पर हम लोण यात्रा माग तक आण और आग चार मील तक सडक ही पर डाक बगल क पाटक तब जहा पाटक के एक स्तभ क नीच उसन जमीन क्षगची था । यहा मे बह एक मील और आग गया जेरे मित्र लदेरे न डरा जमाया था और जहा उसके बकरे का बधरे न अकारण ही मार टाग था ।

मुझ उन पाटका मे जिहान दुनिया के किमी भाग में शिकार खला ह यह कहन की आवश्यकता नही कि इन सब असफलताआ और निराशाओ के बाल म हतो तसाह नहा हआ धरन् उस दिन की आगा करन लगा जब म विष और पाग फेंक कर अपनी राइफल का ठीक निशाना लकर उसके शरीर म एक गोली रग दूगा ।

साधुवानी का पाठ

म कभी भी उन गिकारिया मे इस धारणा म महमत नहा रहा हू कि बड अथवा
तरताव जानवरा की गिकार के असफलता क कारण उनकी दास-मजूवा
सिंह ह ।

गिकारी क विचार, चाह यर आत्मावादी हो अथवा निरागावादी उस
जानवर का कामप्रणाती पर कोई असर नहीं डालते जिसे या तो मारन या
काटा लन की बह बडा प्रनीसा करता रहता ह ।

हम हम बात का भूज जाते ह कि जगली जानवरा की घ्राण और श्रवण
गक्ति विचारकर उन जानवरा की जा अपनी इहा गक्तिया म भोजन और
मुरक्षा पर निर्भर ह सभ्य आत्मी का घ्राण और श्रवणगक्ति स बहुत अधिक
बनी-बूढा जाती ह । हमार लिए यह बडा मूखना का बात होगी—युक्तियुक्त तो
हाया ही नहा—अगर हम मान ल कि अपन गिकार का गतिविधि का हम
नया दख सकत ता जिसका गिकार हम करना चाहत ह वह भी हमारी
गतिविधि को नहीं जान सकता । जब हम जानवरा क गिकार क लिए बैठन
ह ता हमारा असफलताआ का मूल कारण यह होता ह कि एक तो हम जानवरा
की गहब यद्धि का गलत अनुमान लगात ह और दूसरे एक निश्चिन अवधि तक
बिना कोई धाराब विण बर नया सकत । मासाहारा जानवरा की सीध श्रवण
गक्ति का म एक उपाहरण इसलिए दया ताकि लाग इस बात का अच्छा तरह
समझ ल कि उनम सम्पक कतन समय साकधानता का बिना आवश्यक्ता ह ।
यह धरा हाल का ही अनभव ह ।

साव महान क गर तिनका बात ह । उमान पर मूवा पतिया की चणई-मा

* अजर करे न चाकरी पछी कर न काम
गाम मजूवा बर गए सबक दाना राम ।

जगली सूअर का शिकार

यूना लदेरा काटलार सानी पर कुछ न्य स जा पदूचा था। वह हरिद्वार से गुड और नमक का लानन वतरानाय स परं गाव का कर रहा था। उसकी भडा और बकगिया क झूठ पर कुछ अधिक लग था और अतिम पडाव कुछ दूर था। इमलिए सप्रयाग क पडाव पर उसे कुछ देर हो गई और इसी कारण वह बाड क कमजोर स्थाना की मरम्मत नहीं कर पाया था। उसके कई बकरे बाड क बाहर निकल गए और उनमें स एक को बघरे न प्रात काल स कुछ पूव सडक क निकट ही मार डाला। उसके कुत्त भौंके थ और वह जग भी गया था। पर वह बाहर तब ही निकला जब उजला हो गया और बाहर निकल कर देमा सा उसका सबसे बढिया बकरा सडक पर मरा पडा था। बघरे न मारन क बाद उमे छत्रा तक नगा था।

बघरे क गत शाम के व्यवहार न य स्पष्ट कर दिया कि जब बघरा आत्मखार हा जाता ह और एक लम्ब अरम तक उसका सम्पक आत्मिया स हा जाता है ता बघरे का स्वभाव कितना बल जाता ह।

यह मानना उचित ही हागा कि पिशाच पाग में पकड़ जान और इस गड तक खास कर उसके निकल जान से बघरे का धक्का लगा था और वह आतंकि भी हा गया था। उसकी बूढ़ देहाड इस बात का प्रमाण था। आगा ता यह बरनी चाहिए थी कि पाग स मकत हाकर वह किमा एकात स्थान म आवादी से मया सभव दूर कुछ प्रयास करगा। बरा वह तब तक रहगा जब तक उस भूख न मनाव। यह भी स्पष्ट ह कि कई दिन तक उम भूख नहीं सता सकती थी पर गमा करन क वजाय वह बूढ़ा का लाग क निकट ही रहा। हमको मचान पर खडन देवन के वा उसन हमें सान का मौका लिया और हमारी जाच करन आया। यह मोनाग्य का बात था कि इवटसन न मचान की रक्षा के लिए यह



वृद्धा लतेरा

सावधानी बरतते कि उसके चारों ओर जालीदार तार लगा दिया। आदमखोर बघरा के लिए यह कोई नई बात नहीं है कि वे उन आदमियों का मार डालते हैं जो उनका मारने के प्रयत्न करते हैं। इन पक्षियों के लिखने के समय मध्यप्रदेश में एक आदमखोर बघरा मारा हुआ है जिसमें विभिन्न समयों में चार हिन्दुस्तानी शिकारियों को मार कर खा लिया है। अब्सीरी समाचार ने मुझे उस बघरे का मिला है उनमें पता चलता है उनमें अब तक चारों ओर आदमी मारे हैं। चूंकि उनकी यह आदत है कि वह अपने भावी कानिष्ठा को ही मारता है इसलिए वह बड़े बड़के और शांति में रह रहा है और अपने भोजन में मानवी मांस के अनिश्चित पालतू जानवरों और जंगल जानवरों से भी काम लेता है।

आम के पेड़ के पास आम पर बघरा मांस के मांस पर बहातक आया जहां से दा रास्ते फूटने है। वहां से जहां हमने जमीन को खून से लथपथ पाया था वह दीर्घ और मुड़ा और एक माल तक उस रास्ते पर गया और वहां से चार मील तक यात्रा मार्ग पर और फिर वहां से अपने इलाके के अति घन क्षेत्र में। संप्रदाय धारक वह बाजार की मरक गली में होकर गया और वहां से आगे आगे मील जाकर डाक मरक के फाटके की जमीन को खराबा। गत रात्रि के महान सत्क की चिकनी जमीन को मुलायम बना दिया था। मलायम चिकनी जमीन पर बघरे के सोज स्पष्ट रूप में अंकित थे। चिह्न में स्पष्ट था कि पिनाच पाण्डे में पसल से उस कोई चीज नहीं लगी है।

बल्क के बाद में डाक बगले के दरवाजे में उमर खाना पर चला और लहर के डर तक आया। मडक के मांड में लड़े के लहर में मी गज के दूरों में बघरे ने घाट में बाहर निकल बघरा को देखा था। मडक के बाहर भाग में भाग में भाग का पार करने पहाड़ में रंग भर चरक बकर का घोड़ा किया और मार दिया। मारने के बाद उमर बघरे का मृतक नहीं पिया और मडक पर लौट आया। बांगर बाद के भातक बारा के घमा के और मरक बघरा का लहर के दा कुत रना रहे थे। छोटे पर मडकून जरीर में व मडकूना से मृतक से बघ थे। व

वड काठे शक्तिगाली कुत्त जिनका हमारे पहाडो म नदरे रखत है उही अथो में भइ रक्षानवाल वसे कुत्त नहा ह जम यट प्रिन्त और घोस्य म हाते ह । सफर में तो य कुत्त आत्मी के पीछ चरते ह पर इनकी ड्यूटो तब प्रारम्भ हाती है जब डरा पड जाता ह और अपनी ड्यटी को वे वहुत अच्छी तरह अदा करते ह । रात के समय वे जगला जानवर से डरे की रक्षा करते ह । दा कुत्त मित्रवर वधरे को मार लत ह । दिन में जब मालिक मन् वकरी चरण जात ह तब वे सब माल का रक्षा करते ह । एसा उल्लख मिलता ह कि एक वार एक आदमा आया और बोरा उठान का प्रयास किया । कुत्त उस पर टूट पड जोर मार डाला । मने वधरे की बहा से खाज ली जहा उमन बकरे का मार कर मडक पार का थी । उनके पीछ म गुलावराय तक गया जहा एक गहरा नाला मडक को पार करता ह । वधरा उसी के सहारे ऊपर चला गया था । आम क पेड से इम नाले तक वधरे न लगभग आठ मील की दूरी पार की हागी । यह लम्बी और देखन म निरयक यात्रा अपनी मार की जगह म एसी ह जिनको कोई भी साधारण वधरा किनी भी हाऊन म नहा करता । कोई भी साधारण वधरा उस बकरे का नहा मारता अगर यह भूखा न हा । नाल से एक चौपाई मीन आग धूँडा लत्रा सठक क किनारे एक चट्टान पर बठा अरन शर को चरा रहा था जो खुल् में पहाडी पर चर रग था । बडदा बठा ऊन काने रहा था । जब उमन अपनी तकरी और ऊन अपनी चौडी जब म रखली तब उसन मुझसे एक स्मिगल गी और पूछा कि क्या म उमके डरे के पाम होकर आया ह । मन कहा म यहा होकर आया ह और तब आया ह कि प्रतात्मा न क्या किया ह । मने यह भा कहा अवका वार जब हरिद्वार जाआ ता कुत्ता का किमी उठबगिया का म आता । मण्ट था कि कुत्त माहमी नहा ह । मुनवर उसन स्वावृत्तिसूचक मिर हिलामा और कहा माहव कभा कभी हम पुरान खुरान भी गलती करत ह और उनक लिए हम भुगतते ह । गत रात का मने भी अपनी गलता से सबसे बगिया बकरा खो दिया । मरे कुत्त गर के समान माहमा ह । गढवाल भर म वे भव गच्छ

है। आपका यह कहना कि वे उँटवरिया का वचन योग्य २ कुत्ता का अपमान करना है। मरा डरा सडक क करीव है। मझ इम यान का धागवा या कि रान में कारणपन नाई धागमा निकग ता व नुषमान पहुचा सकत ह इसलिए मने उँहे बाह व बाहर जजार म बाध लिया। नताजा आपन दय हा लिया। माह्य आपकुत्ता का दोष न द क्याकि वकरा वचान में उँहान इतन। जार लगाया कि उनक टान क कालर उनका गरदन म इतन घम गए ह कि घावा का अँठा हान में समय गगया।

हमारी बातचीत क दौरान में गगा क दूमरी ओर एक जानवर प्रगट हुआ। उसक रंग और आकार स पहले ता मने उसे हिमालय का भूरा भाग समझा पर जब वह नदी की ओर पहाड क नीच म आया तब म समझ सका कि यँ एक जगल सूअर ह। सूअर क पाछ गाव क कुन पड थ और उनक पाछ गाव क आदमिया का एक समूह था जिनम स हर एक क पास छोटी-बडा लाठिया था। सबसे पीछ एक बन्दूकधारा आया। यह आत्मी जस ही पहाड की चाटी पर आया और उमन हथियार उठाया तो हमन घोग घुआ देखा। उमक पाडा देर वाँ टम्मदार बन्दूक की घाय की आवाज सुनी। बन्दूक की मार में कवल लक्रे और आत्मी थ। कोई गिरत नहा देखा इमस ह्य समझ गए कि बन्दूकवाँ का तिगाना खाला गया ह। सूअर क सामन घामगर ररक था जिन पर कहा कहा झाडिया थी। घाम की ररक के नीच अमम जमान थी और घना झणिया पा जा नदा-नट पर पली थी।

ऊँह-आवड और अमम जमान पर सूअर का माथा फिर गया और सूअर और कुत साथ साथ झाडी में विगान हा गए। जगल ही भण एक कुत का छाइ कर जा शयान-समूह का सतरव कर रग था सब कुत झाडिया में म बाहर आ गए। जब लडक और आत्मी वहा आए ता उँहान कुत्ता की झानी में फिर घुमन की ललभारा पर कुत झानी में घुमन का तयार नहीं हल। घायल उँहान यह दय लिया हागा कि सूअर अपना काप म क्या कर रहना ह। तब

बन्दूकधारी आए। ँहक और आत्मी उसे घर कर खड हा गण ।

हमारे त्रिए जा नली क इस पार ऊब स्थान पर बठ थ सम्पूण दृश्य मूकचित्र के समान था । नदी पार जो धार गुप्त हो रहा था वह नदी की धार की आवाज स दब जाता था । हम जो कुछ सुनार्थ पडा वह ठम्मा बन्दूक की आवाज थी ।

शिकारी महाणय झाडी म घुसन क लिए उनन हा राजी थ जिनन कि क कुत्त । फौरन ही शिकारी महाणय अपन साधिया स हट कर एक घट्टान पर जम गाण माना रह रहे हा मन थोडा काम किया ह अब तुम कुछ करके दिखाओ । कुछ कुत्ता की तो पीटा भी गया पर उनम म एक भी सूजर म मकावला करन झाडी म नही घुमा और बन्दूकधारी तो अलग बठ ही गए थ । इस पर लडका और धाधमिया न झाडी पर पत्थर फकन गुरु किए ।

जब पत्थर फिक रहे थ तब हमन देखा कि सूजर झाडी के नीच बिनारे स निकला वालू पर आया कुछ तेज कत्मा के दाए नामन आगया कुछ देर खडा रहा फिर धाग बडा फिर रुका और उसके बाद एक दीड ँगा थर नली म कूद गया । सूजर बिगपत्तर जगली मूअर-बढिया तराक गाने ह । यह धारणा गलत ह कि थ तरन में खुरा म गगा काट लते ह ।

नली की धार तेज थी । जगली सूजर स बढकर और वाई भ्रमा पण नहा ह । जब मनें अतिम बार सूजर को दखा तो एक चौघाई मील तक धार म वह गया था पर वह बडी तेजी और मजबूती म तरना हुआ हमारी ओर आरहा था और मुझ विश्वास ह कि वह सुरभित पहुष गया हागा ।

साहद कया सूजर आपकी राहफ्त की मार के भीतर ह? लभे न पूछा ।

हा' मन जवाब दिया 'सूजर मार के भीतर ह पर मार म गडवाल म अपना राहफ्त सुअर मारन नग लया ह जा जीवन रक्षा के लिए भाग रहा ह पर उसे जिनम तुम प्रतामा कहत हा और जिनम म बधरा कत्ता ह ।

'अबनी ही खान गयो उनन उत्तर दिया अब तुम जा रह हो और अब हम गायद कभा न मिग्य इसरित मरा आगार्वान तेन जात्रा और

अपनी ही बात रखो उसने कहा और अब तुम जा रहे हो और अब हम जायत कभी न मिलेंगे इसलिए मेरा आशीर्वाद उत जाओ और समय ही बनायगा कि हममें से कौन ठीक था।

मुझ अफमास ह कि मैं उस लन्दे से नहा भिना। वह बड़ी शानवाला बूझा था—स्वाभिमानो और मना प्रसन्न निवाय उस अवस्था के जब बघर उसने बकरा को न मार रह है और कुत्ता का कोई सन्निध निगाह स न देखता है।

पेड़ पर से पहरेदारी

अगल जिन इवटमन तो पोड़ी का लौट गए और उसके दूसरे जिन प्रातः काल जब मैं रघुप्रयाग के पूर्वी आरु का गावा का निराक्षण कर रहा था मुझे एक गाव से बाहर जाते हुए आत्मखार के बिल्हू मिले। उन गाव में गत रात का आत्मखार न दरवाजा ठाढ़ कर घर में घमन की कागिण की था। उस घर में एक बच्चे की बुरी खांसी थी। कुछ मीला तक खाना पर चलन के बाद वे मात्र मुझे पहाड़ की बगल में मिले जहाँ कुछ दिन पहले इवटमन और मैं एक चिल्लानेवाले बच्चे पर बैठे थे जिसका बाद में बच्चे ने मार लिया था।

अभी देर नहीं हुई थी और यह सम्भावना थी कि इस ऊबड़ खावड़ चट्टान पर बघरा वहाँ घुप लाना न मिले जाय। मैं बाहर का निकलती हुई एक चट्टान पर लट गया जहाँ से बहुत दूर तक दिखाई पड़ता था। पिछले रात में वस्तु गया था इसलिए वायुमंडल में कुहामा हट गया था और बच्चे के साथ अच्छी तरह मालूम पड़ते थे। साफ दिखाई पड़ता था और बाहर निकलने चट्टान से दूर इतना मुश्किल था जितना कि दुनिया के किसी भाग में हो सकता है जहाँ कि पहाड़ तईस हजार फीट ऊँच खड़े हैं। ठीक मेरे नीचे अलकनन्दा की अनपम घाटी थी और अलकनन्दा एक समकील उपहल घाट के समान टंडी-मंडा बह रही थी मानो वह घाटा घाटी में भीतर और बाहर हाकर निकल रहा हो। नदी के पार पहाड़ पर गाव बिन्दुआ के भाति अंकित थे—किसी में एक ही छप्पर के मकान और अनके एक लम्बी प्लॉट की छतवाले मकान थे। मकानों की ये कतार वास्तव में व्यक्तिगत निवासस्थान हैं। वे एक दूसरे से मट कर बनाए गए हैं ताकि सर्वात्म्य काम हो और स्थान भा काम धिरे। यहाँ के निवासी गरीब हैं और गढ़वाल में प्रत्येक फुट कृषि योग्य भूमि की आवश्यकता है।

पहाड़ों के परे ऊबड़-खावड़ चट्टानों की छाटियाँ थी जिनके नाच घानेवाले और प्रारम्भिक वन में हिमवत दहाड़ते हुए गिरते हैं। चट्टानों की छाटियों के

ऊपर और आग हमंगा जमी रहनधानी बरफ ह जो नीगम्बर में इतनी साफ लिखाई पड़ती ह माना सफ पट्ट म से उसे किसी न काट लिया हा। इससे अधिब सुन्दर और गान्तिपूण दक्ष कल्पनातीत ह। हिम पवता के दूसरी आर मूयाम्त के होन पर वह सब क्षत्र जिसे म देख रहा था आतक प्रसित हो जायगा जैसा कि वह गत आठ वर्षों से रहा ह। किसी मनष्य के लिए यह सभय नहा ह कि वह उस आतक की कल्पना कर सके जब तक कि उसे भुगतना न पड।

म उम चट्टान पर गो घट लेटा हुआ जत्र दो आत्मी वाजार जाने हुए मरी आर से निकले। व एक मील ऊपर पहाड पर स्थित गाव के निवासी थ। उतान मुझ बताया कि सूर्योत्थ स कुछ पहल उतान बघरे का इम लिंगा में बालते मुना था। मनें बकर पर बैठ कर बघरे का निगाना लन की सम्भावना पर बान की। उस समय मरे पास काई बकरा नहा था उतान गाव से एक बकरा लान का वायना किया और कहा कि सूर्योत्थ स दो घटा पट्ट के आ जायेंगे।

जब जादमी चल गए तब मनें बठन की जगह व लिए इधर उधर देखा। पहाड के इस पूरे भाग में केवल एक ही पेड था। वह एवानयामा पड चीड का था। वह माग के किनारे नीच की आर वा एक घार पर खडा था। उसने नाच से एक दूसरा रास्ता ऊब्रड-खावड जमान के ऊपरी किनारे से पहाड की बगल में हाकर जाता था। पेड से काफी दूर तक दिखाई पडता था पर उम पर बड़ना मन्जिल था और उसमें छिपाव की जगह नाम मात्र का थी। पर वहाँ काई और दूसरा पड ता था ही नहीं जो म किसी अय पड का चनाव करना। इस कारण मनें उमी पर बठन का निश्चय किया।

जब म मायकाल के चार बज लोटा तो आत्मी मरा प्रतीशा कर रहे थ और जब मनें उह बताया कि म घोड़ के पेड पर बडूगा ता व हैंसन लग। उतान कहा कि बिना रम्मी की मीठी के वहा बड़ना सम्भव नहा। अगर चटन में सफ्त भी हुआ और रात भर बठन के विचार का वायल्प में लाया भी तो

आत्मखार में बचाव नहा कर मकूगा क्याकि उसके लिए पर बाई रजावट नहा ह । गढवाल म दो एक गोरे थ जिहान वचपन म चिडिया क अउ इकट्ट किए थ । उनम म एक इवटसन थ और दूसरा म था । मन आदमिया की दूसरी आपत्ति का उत्तर नहा दिया वरन् अपनी राइफल की ओर सकत कर दिया ।

उस चीड क पेड पर चढ़न। आसान न था क्याकि बीम फीट तक उसमें गाखाय ही न थी पर एक शाखा तक पहुचन पर फिर कठिन न था । मेरे पास एक मूल की लम्बी रस्सा थी और जब आदमियो न मेरी राइफल को उरुव छोर स बाध दिया तब मनें उसे खाध लिया और पेड पर चढ गया जहा पर मझ चीडका मुईनमा पतियाकी आठ मिल गई ।

आदमिया न मुझ विश्वास लिखा था कि वकरा सूव चिल्लानवाला ह । वकरे का पेड की एक लगी जड म घाघ कर आत्मा चले गए और अगल निन प्रात काल आन का वायना कर गए । वकरे न आदमिया को जात हुए एक नजर म देखा और उसने बाद पेड की जड क पाम की छाटी घास टूगना शरु किया । वकरा जरा भी नहा मिमियाया था पर हमने मझ चिन्ता नही हुई क्याकि मझ विश्वास था कि वकरा फौरन ही अकेलापन अनुभव करेगा और शीघ्र ही मिमियान लगगा । अगर वह रात म भा चिल्लाया ता म वघर का मार लूंगा ।

जब म पड पर चढ गया तब पवता की छाया अलबनना तक पहुच गई । धीरे धीरे यह छाया पहान क ऊपर वना मुझ पार कर गई और पवत शिल्लरा की चाटिया रकनवण हा गई । जसे ही यह लालिमा क्षीण हुई प्रताप की गम्बी रमिया हिम गिलरा स ऊपर उठी जहा पर धस्त होनवा क मूय की किरण गिर फार सी ही गई और टकरा गई । जा सूर्यास्त का देखना जानत ह—और मुझ दुव ह कि ऐसे दयाक बहुत कम ह—उनका ह्याल ह कि विश्व क उनक अपन भाग में सूर्यास्त सब नष्ट ह । म मां अपवाद नही दूँ क्याकि म ह्याल करता हू कि ममार में हमारे सूर्यास्त की सुलना करनवाला सूर्यास्त कहा नही ह और

दूसरा नम्बर बढ़िया सूर्यास्त उत्तरी टागानाका म ह जहा पर वादमाल क बिभी मय क कारण तिम मडिन बिल्मजारी और उमक ऊपर क जलधर डूबत सूर्य के किरणा में बिघले हुए सान क समान धमकन । हिमालय म अधिकां सूर्यास्त गुावी सान और सुनहर होत ह । जिम सूर्यास्त का म उम सायबान चीठ के पन स दख रहा था वह स गावी रग का था और घाटिया स बरछ की नाक क समान प्रकाश क सफा तीर म निकल रहे थ । व गुलाबी वादा हाकर निकलत हुए आवाग म बिडीन हा जाते थ । अनध मनथ्या क समान बकर का भी सूर्यास्त में कोई दिलबस्पी नहा थी । अपनी पहच का घाम साकर वन बठन क लिए जमीन खरष कर लट गया सिकुट गया और भा गया ।

अब एक उग्रमन थी । बघरा मानन का शरमणार आन स नीच मीन हुए बकरे पर ही था । मज्ञ आगा थी कि बकरा मिमियायगा और उसकी आवाज मे बघरा आयागा पर बकरे न एक बार भा मड नहीं खाला । मुह खोला तो थस घाम के तिनर घाटन क लिए उसक बाज वह मुख की नीद सा गया । उम समय पड स उतर कर टाक बगल लोट आनक प्रयत्न करन क मानी थ कि म अपना नाम भी उम सूची में लिखा दू जा जानसूझ कर आत्महत्या करत ह । बघर न कोई मार ता का नहीं थी । आत्मखोर का मारन क लिए मुप कुट ना करना हां था इसलिए मनें वहा रहना निश्चय किया और स्वय बघरा का बुलान की नागिग की ।

अगर कोई मुझम पूछ कि भारतीय जगल में मनें जा इतन वय बिताए ह उममें मत्रम अधिन आन मज्ञ किम बात म मिला ह ता म बिना सबाब बहूगा कि मज्ञ मवग अधिक आन जगल क पन-पक्षिया क म्यमाय और उनकी बाला क आन म मिला ह । जगल पनु पक्षिया की काइ एक माया महा । एक प्रवार क हा पन और पक्षिया की अपना अलग अलग बालिया ह और दर्याप कुल का बाला गामिन है जैसे महा और गिठ का पर हर जानि क जानबरा की बाग जगल के सब हा पनु रणा ममस्तन ह । जगल क किसी भी जनु क बड

के स्नाय के समान समवित नहा ह मिवाय षण्गीदार भुजगा के और इस कारण बादमिया के लिए सम्भव न कि वे धनक प्रकार के पत्र जीर पक्षिया की बोला समझ सकत ह । जगल के जीव जन्तुआ की बोली बालन की याग्यता से आत्मा बाद के अतिरिक्त इच्छानक्षार उभवा सहुपयोग भी किया जा सकता ह । इसके लिए एक उपाहरण ही काफी हागा ।

ईटन के अभी हाग तक के एक हाउसमास्टर लायानल वौन्स्क्य और म १९१८ के बाद ही हिमालय में फागोप्राकी पर रहे थे और मछली का शिकार खल रहे थे । एकदिन सायकाल को हमला एक विशाल पवन की तूहटी पर स्थित एक डानवगले पर पड़च । उसकी दूररी ओर हमारा निदिष्ट स्थान कश्मीर की धानी थी । कई दिन से हम कठिन भूमि पर चल रहे थे और हमारे बोला डानवाग बादमिया का जागम का जखल थी इसलिए हमने एक दिन वगल पर ठहरन का निश्चय किया । अगले दिन फीटस्क्यू तो लिखा पडी में चल रहे और म पहाड की देखभाग को निकल गया कि कहा कश्मीर का बारहसिंगा ही पल्ले पड़ जाय । जिन मित्रा न कश्मीर में शिकार खला था उन्होन बताया कि बिना स्थानीय अनुभवी शिकारी की सहायता के कोई कश्मीर वा बारहसिंगा को नहीं मार सकता । डाक वगल के चौकीदार न भी हम बाड की पृष्टि की । पूरा दिन मेरे लिए पत्र था इसलिए कलक के बाद म अबेला ही चल पत्र । मस इस बात का जग भी अनुमान न था कि कश्मीर का वह लाग हिग्न कितनी ऊंचाई पर रहता ह किसे प्रकारकी जगह पाया जाता ह । जिस पहाड में कश्मीर का दरा ह वह बारह हजार फीट ऊंचा ह । म आठ हजार फीट ऊंचा चढा हागा कि सूफान आ गया ।

बागल के ग म म समझ गया कि आल पडेंगे । बचाव के लिए सावधानी म मन एक पड़ चुन लिया । मनें बादमिया और जानबरा को बाड और विजग से भरत देखा ह । आठों के सूफान के बाग विजग गिरन का डर रहता ह इसलिए मनें थड पेड को छाग कर छोटा पेड चना जिसकी बाग गागवार थी ।

और नीचे काफी घना था। मन सूया पतिया और मूख ठीठा (fir cones) चुन। मन बाग जगल और मरे मिरक ऊपर आगे पन्ते रहे तडिन दप हाना रहा पर म पड का जड पर बठा विल्कुल सुगकिन भरकता रहा।

आला के रुकने ही मूख निकल आया और म पड के सुरक्षित स्थान स जो वाटर आया ता मुझ परियो का देग ही खिवाइ पठा। आला का चान्द विछा थी उन पर मूय का प्रकाण पडता था तो कराल स्थाना म रागनी निकलता थी और पास के तिनके गाभा को ओर भी बटा रह घ। ता तीन हजार फाट और ऊचा घट्टाना की एक श्रणा पर जा पहुँचा। घट्टाना की सग्हटी म नीला पहाडी पीपी खिवाई पनी। इनम से अनक हिमालय के जगली पूला स मवम अधिक मुत्र हात ह। स्वच्छ-स्फटिक स्वत घरातल पर नालाम्बर रग व पूल बडा ही मुहावना दुय उपस्थित कर रहे घ।

घट्टाने बहुत ही फिमरनी थी। पहाड की चाना पर जान स वाई मतलब भी नता था। इसलिए म घट्टाना की वगल स वाइ आर गया और बाघ माल जानन वा मझ विगल दवतार (fir trees) का जगल मिला आर उमक वा घाम का लवा मलन आ पहाड की चाना म लगा कर कई हजार फाट नाच जगल तक चला गया था। पेडा में हाकर जैसे ही म इम घामवाग ररक पर आया ता मने उमक दूमर तरफ एक छान टान पर एक जानवर मना पाया उमकी पूछ मरी आर का था। गिकार का बितावा में मने चित्र दप थ और उनम म ममन गया कि यह कामार का लाल हिरन ह। जब उमन अपना मिर उठाया ता मने जान लिया कि व माल ह। घाम की ररक व मरी तरफ और जगल के बिनार म करेवि तीम गज पर चार फाट ऊचा एक बगली घट्टान था। इम घट्टान और टाल के बीच का फामला वाई चालाग गज था। जब बड़ हिरना चलन लगता तब म मावपाना म घटना और जब व अपना मिर उगानी ता म चुप बट जाता। इम प्रकार म घट्टान का आड में आ गया। हिरना म्पलतवा प्रहरा का घाम कर रही थी। जब व अपना मिर उगाना ता अपन दाहिनी

आर देखती थी इससे म समझ गया कि उमक साथो भा = और किस आर ह । हिरनी के पास ठिप कर और अधिक नहा जाया जा सकता था । जगल में दुवारा प्रवेश करना और फिर ऊपर म आना कुछ कठिन नती था पर उससे मर उद्देश्य की मिष्टि नहा होनी क्योंकि हवा पहाड के नाच की आर वह रही थी । अब एक हा बात थी कि म जगल में दुवारा धमू और पास की ररक के निचले किनारे पर चक्कर बाट पर ममम ममम लगना और चढाई कठिन थी । मनें इसलिए वही रहन का निश्चय किया और सोचा कि म यह देख कि यह हिरन भी जिनको म जीवन में पहली बार हा दख रहा था उसी तरह की प्रतिक्रिया करण जिस प्रकार कि बघरे की आवाज सुन कर चीतल और भाबर करते ह । वहा कम से कम एक बघरा तो था हां क्योंकि मन बहा माग में उसक नाखुना की परचन के चिह्न देखे थ । केवल एक आम् बाहर करके मनें दसा और जब हिरनी पास पर मह भार रही थी तब मनें बघरे की वाणी बोली ।

मरी आवाज की पहला बोणी पर हिरनी एकत्रम मुडा और उसन मेरी आर मह कर लिया और अपन अगल तरा को जमीन पर मारन लगी । यह अपन साधिया को मनक करन का मिगनल था पर उमक माधी जिनका म देखना चाहता था चलय नही जब तक हिरनी आवाज नही दगी । बघरे का दख बिना वह आवाज करनवाली नहा था । म भूरे रग का टधाड का बाट पहन था । मनें अपना बाया कधा दो तान इच चट्टान में बाहर निकाला और उचा नीचा हिगाया । कध की गति को हिरनी न फौरन दख लिया । तान धार कम्म यह आग सही और खान्ना दुरु किया । जिस छतरे की सेनावनी उसन साधिया का दी थी वह नजर में था और साधिया की मुग्सा इसी म थी कि थ उमक पास आ जाय । ममम पहुठ तक माल मर का बच्चा आला मरी जमीन पर पत्रकता बाधा और उसकी जगल में राडा हा गया । घच्च व बाद तान नर आण और उनक पीछ आर् एक बूडा हिम्नी । पूरे छ जानवरा का मड मर मामन पतास गज की दूरी पर था । हिरना अब भी बाल रही थी और उसन दूसर साधी बनौनी निर

भाग और पीछे हवा और आवाज की जांच कर रहे थे और चपचाप भर पीछे
 क जगल की आर ताक रहे थे। गलते हुए ओला पर मेरा आसन कष्टप्रद था
 और चुपचाप बहा रहने के मानी ठंड लगाने के थे। मनें कश्मीर के प्रसिद्ध
 हिरन के एक प्रतिनिधि समूह को देख लिया था। हिरनी की बाला भी
 मुन ली थी पर एक चीज में और जानना चाहता था। मैं हिरन की बोली और
 मुनना चाहता था इसलिए मनें फिर चट्टान के बाहर दो-तीन इंच बंधा निकाला
 तब मुझे हिरन हिरनी और साल भर के बच्चों की आवाज सुनने को मिली।
 विभिन्न स्वरा में वे बालन लग और मझ उससे बड़ा आनंद आया।

मेरे पास एक हिरन मारने की आज्ञा थी और संभव है कि उनमें से एक का
 मिर काफी बड़ा होता। मैं सुबह हिरन को देखने और बंध के साथिया के लिए
 मांस प्राप्ति के लिए आया था पर मनें महसूस किया कि मुझे फिलहाल किसी
 बड़े सिर की आवश्यकता नहीं है। साथ ही हिरन का मांस बड़ा बना जाता है
 इसलिए राइफल प्रयोग करने के बदले में खड़ा हुआ गया और वे छे स्तम्भिन हिरन
 वान की वान में आगे में ओझल हुए गए और शयन भए वान ही टोके के दूसरी ओर
 मनें उनके भागने का आवाज सुनी।

जगल लौटने के लिए समय हुआ गया था और मनें धाम की रस्के में डालने
 और पहाने की तलहटी में जान का समय किया। मैं खुल हुए मौ गज
 म्य मदान के बीच में दौड़ रहा था और छे मौ गज ही गया हाऊगा कि मनें
 याद आने वाली चट्टान पर खड़ी एक मफत चीज लगी। जल्दी में ही देखने में
 मालूम हुआ कि वह गाय का खाया हुआ बकरा है। एक पक्षधार में हमें मान
 गाने की नहा मिला था और पीठस्थल में मनें वापस किया था कि कुछ खान
 के लिए लाऊगा। अब अबसर भी आ गया था। बकरे ने मुझे लपक लिया
 था और अगर मैं गलत मिटा सके और पास में निकल सके तो मनें माया कि
 मैं उमरी टांग पकड़ लूंगा। इसलिए मैं चले पड़ा और वार्ड आने का हुआ।
 चपचाप में उम लपकता जाता था। अगर बकरा बंध पड़ा रहा तो उम जगल

म बढ़िया उम पकड़न की कोई जगह भी न था क्योंकि वह पांच फीट ऊंचा चट्टान जिसके किनारे वह खड़ा था रस्स की आर निकली था। बिना उसका आर तैल चट्टान की तरफ मन रपट्टा मारा और बाए हाथ में उसकी टांग पकड़न का झपट्टा मारा। आतंकपूर्ण धाक के साथ वह पिछले परा खड़ा हुआ और मेरी गिरफ्त में बाहर हा गया। चट्टान में दूसरा आर जाकर जब मन उस देखा तो मजबूत आश्चर्य हुआ कि वह जिसे मन बकरा समझा था दागला बम्बूरी हिरन था। हमारे बीच कबल दस फीट का फागला था और वह छोटा लडाकू जानवर घिराघ स्वरूप झीक रहा था। बापिस हाकर मैं पहाड़ के नीचे पचान गज चला तो मन देखा वह हिरन चट्टान पर खड़ा था और गायन वह अपने आपकी धन्यवाद दे रहा था कि उमन मजबूत डरा कर भगा लिया। कुछ सप्ताह बाद मन कश्मीर के शिकारी जानवरों के मरुतक का यह घटना लिखी तो उन्हें इस बात में बड़ा अपमोम हुआ कि मन उस हिरन की मारा नहा। वे इस बात का जानन के बाद इच्छुक थे कि मन ठीक कहा उस दवा था पर स्थाना के मामल में भरा स्मरण शक्ति बड़ी खराब है। मैं नहा स्थाल करता कि वह दागला बम्बूरी हिरन किसी अजायबघर की शोभा बड़ा रहा है।

नर बघरे अपना एक गिकार क्षत्र ना नियत कर लत है और अगर कोई दूरग वधरा उमम आए तो उमक प्रवण पर ब बंधुपित हाने है। आमतार वधर का क्षत्र लगभग पांच सौ वग मील के इलाक में पला था और समवन इस क्षत्र में और भी नर वधर थे। पर फिर भी इस विगिष्ट हिम्म में वह कई सप्ताह से था और एक प्रकार से यह उसी का इलाका कहा जा सकता था। वधरा के जाड का समय तो खत्म हो चुका था और मेरी बघरे का बागी का वह शायद मांग वधरे की बागी समय जा नर की तयाग में हा इसलिए खूब अधेरा हान तक मैं खप बग रहा। हमसे दान मन बघरे का बोला वाडा। मेरे आश्चय की सीमा न रही कि मेरी बाला का जवाब वधरे ने फौरन ही लिया। लगभग चार सौ पाठ नीचे भरे दहिनी आर मैं वधरे ने जवाब दिया था।

बघर और मेरे बाच में जमान घट्टाना से भरपूर थी और उस पर कटाका झालिया था और मैं जानता था कि बघरा सीधा मरी आर नया आयगा। वह ऊब-झावड़ जमीन का चक्कर गायगा और मर पेड़ के पामवागी घार पर जायगा। यह बात मन बघरे की दूनरी बागी से मात्म कर ली। पाच मिनट बाद उमकी आवाज उम रात्म से आह जो मर पेड़ के पाम हाकर पहाड का बगल में गया था और मेरे पड से नया सौ गज दूर था। बघरे का लिंगा बनान के लिंग में फिर वाली बागी और तीन चार मिनट बाद बघरा मा गज की दूरी पर वाला।

रात बघरी था। मरी राइफल की नाल स बिजगा की बन्नी बधी था। मरा अगूठा बन्नी जलान के बदन पर था। पह की जड स रात्म गी गज तक विकुल सीधा गया था और उसके आग उमम एक मज माड था। लम्बिए मर लिए यह समय नहा होना कि मैं टोक का रागनी का माग पर बहा डालू और मज तब तक रुकना पंगा जब तक बघरा बन्दे पर न आ जाय।

माड के टोक पीछे और कबल साठ गज दूर बघरा फिर बागी और उमका जबाब एक दूमरे बघरे न ऊपर पहाड का आर स लिया। यह स्थिति जितनी हा उलसन पंग बरनवागी थी उतना ही दुर्भाग्यपूर्ण भा थी। क्याकि मरा बघरा इनन निबट था कि मैं उमके लिए वाली नहा बाल रुकना था। चूकि उमके मुझ लाखार बार दा सौ गज की दूरी स मुना था वह स्वभावत यह अनमान करगा कि लजाणी माग पहाड पर और दूर चला गई और वह उमका बहा चुग रहा है। हा एक सम्भावना यह था कि यह उमी रात्म पर चला आव और नोच जानवाल रात्म के दुरात्म जाय। एमी दगा में वह बन्दे का जगर मारगा चाह के उम ग्याय नया। पर बन्दे का भाग्य जार पर था मग भाग्य माय नया न रहा था क्याकि बघरे न दाता मागों द्वारा बनान काण का नाटा और दूमर। बार जब के बागी तब यह मुझमे सौ गज का दूरा पर था और इगव डड सौ गज अनन भावा माया के निबट। नाना बघरा की आवाजें बगाव हाता गन और धन में रक गन। एक लम्बा नीरवता के बाद नया बडा विन्लिया का राता माजार-

प्रणय की ध्वनि वायु में तरलता हुआ मरे आर का आयी। वह आवाज मरे अनमान से जहा घाम का मदान शुरू होता और जगल स्वतन्त्र होता था आई थी। वधरे के भाग्य में भी दुभाग्यवश उसका साथ लिया वह इमल्लिण नहीं कि रात अचरी थी क्योंकि प्रणयकाल में वधरा का मारना बड़ा आसान होता है। यही बातें परा के लिए भी लागू हैं। लेकिन गिकारी जो पदल गरी को उनके प्रणयकाल में मरना जाना है उसे यह बात जाननी चाहिए कि क्या सचमच ही वह उसे देखना चाहता है क्याकि एमे समय में घर नहीं गरी बहूत ही भावुक होती है और उसका कारण है कि बिल्ली जाति के नर अपने प्रणय में बहुत ही भौंड होते हैं और वे यह नहीं जानते कि उनके नर कितने तेज हैं।

वधरा मरा नहीं था और न वह उस रात मरना। पर शायद कुछ मर जाय परमा मर जाय क्योंकि उसकी जीवन घड़िया खत्म होनवाली थी और बहुत देर तक मन में सोचा कि मेरा समय भी करीब आ गया है क्योंकि बिना किसी चनावना के एक आकस्मिक अघड़ पेड़ पर जा गया और मरे मिर और परा की जगह बदल गई। कुछ मक्ति के लिए मन में सोचा कि पेड़ का अपनी ठीक स्थिति पर पहुँचना असम्भव ही है और मेरा उस पर बठा रहना भी असम्भव है। पर जब अघड़ रुक गया तब पेड़ और मैं अपनी पुरानी जगह पर हो गए। इन आगकास किहालत कहा और खराब न हो जाय मन में राइफल को पढ़ भी छात्रा मे वाध लिया। चाइ के पेड़ न वायु के एम प्रकोप बहुत मारु होगा पर किसी जादमी के उमक ऊपर रहे कर उसका वाग्ना बगान हुए एसा कभी नहा हुआ होगा। जब राइफल सुरभित हो गई तब मैं एक छात्रा से दूसरा छात्रा पर चढा और पढ़ की जितनी ही फुनगियों मिली उन्हें तोड़ दिया। यह मरी कल्पना ही हो सकती है पर जब मन में पेड़का हत्या कर लिया तब वह मरे ऊपर मरवा सा नहीं मातूम पना जसा पहले लगता था। भाग्यवश चीख का पेड़ मुलायम और जवान था उमकी जड़ें मजबूत से जमीन में थी क्योंकि वह हवा में एक घण्टे तक घासक निनक की तरह झूना और वात में एकत्रम रकगया जस वह जमा था।

बघर के गैटन की सम्भावना नहा थी इसलिए सिगरेट पीकर बकरे की भांति मंभा मया। जस ही सूरज निकल रहा था वम ही कुई की आवाज गत ही नीचे उतरा। पेड़ के नीचे मर पिछ् रात क दा दाम्न थ। साथ म उनक दा आत्मी भी थ। जब उहान देगा कि म जगा हू ता पूछा कि क्या मन दा बघरा की आवाज सुनी थी और पेड़ पर क्या बीता। वे यह जानकर बड़ प्रमुत्ति हुए कि बघरो से मेरी दास्ता की बात हुई थी और जब कुछ काम नही था तब पेड़ की गालें छोडकर समय काटा। मन तब उनसे पूछा कि क्या उह माउम हू कि रात में थोडी हवा सगी थी। इस पर एक यवक वाला साहब भाडा हवा। इननी ता कभी सुनी भा नही थी। उसन मेरी सापडी उडा दी। इस पर उसके साथी न कहा इसम अफसाम की क्या बात ह ? गरमिह ना खाना नई सापडी बनान का धमकी द रहा था और हवा न ता उस पुरानी सापडी गिराने का तक्लीफ से बचा लिया ह ।

आतकपूर्ण रात्रि

चीड़ व पड़ व बठन व जनभव के कई दिना बाद तक आदमखार से मेरा कोर्फ सम्पक नही रहा। वह उन ऊबड़-खाबड़ जमीन म नहा गीटा और मझ उसका काई पना नहा चग और न उस बाघिन का पता चग जिसन उसकी जान बचाई थी। मन मीला पहाडा पर जुत खत म भी जाच की पर उसका काई खोज न मिया। इन जगला म म बिल्कुल निडर था और उह समझता था। अगर बघरे बहा कही हात तो उह पा ही गेता क्याकि जगला में चिडिया और जानवर थ जा मुझ खोजन में मदद करत। मादा अशात थी और स्पष्टतया वह दूर जा रही थी जहा उस मनें पड़ की घाटी से बोलते सुना था। बघरे से मित्रन व बाद वह अवन हलाक में खली गई और साथ में बघरे का भी त्रिवा ले गई जिसकी भनें मिलान में मल्ल की थी। आदमखार गीघ्र ही गैरगा और अलकनगा व बाए किनार क निवामी बह सतक और साववान थ इस कारण किमी आदमा का पकडना मुश्किल हागा। बघरा सब पुल पार करनकी कागिग करेगा इसलिए म कई रात तक पुल पर चौकसी करन बठा।

अलकनगा के बाई ओर पुल पर जान के तीन रास्ते थे एक था दक्षिण से पुल धीकीदार क मकान क पाम हाकर। चौथी रात का मनें बघरे को चौकीदार का कुत्ता मारने सुना। कुत्ता बडा स्तही थी किमी खाम नस्त का न था। वह बिधारा जब म उघर जाता तब भागकर आता और पूछ त्रिवाकर स्तह त्रिवाता। कुत्ता नाम मात्र का ही भाकता था पर उस रात वह लगानार पाच मिनट तक भाकता रहा और फिर भाकना एकदम एक करुण आवाज में बदल गया। उसक बाद धीकीदार बिल्लाया। महराव स कनीली झाडी दूर कर दी गई पुल खान दिया गया पर बघरे न राय रात्रि में पुल पार करन का प्रयत्न नही किया।

कुत्त का मारकर और उम सडक पर छाडन के बाद बघरा भीनार तक आया क्याकि मुबह मुझ उसके खोज बहा मिल। अगर वह पाच कम्म और जाग

घटना सा पुत्र पर आ जाता पर व पांच बन्धु उमन नहा उठाय । इतक विपरात वह राण का मुह आर बाजारवाला पगडंडी पर याहा दूर चलन क वाल वह गेरा और यात्रा-भाग पर पच्छिम का चला गया । सडक पर एक माल क वाल मस्त उसन खात्र नही मिल ।

रा तिन वाल मस्त खबर मिली कि पिछला रात यात्रा भाग पर सात मीन आग एक गाय मारी गई ह । सडक यही था कि उम आत्मखोर न मारा = क्यकि एक रात पहल यानी जिस रात का आत्मखोर न कुता मारा था उसन एक मकान का दरवाजा ताडन की कोशिश की थी । यह मकान उस जगह के निकट था जहा उमन अगली घाम को गाय मारी थी ।

सडक पर मुझ कई आदमी मेरी प्रतीक्षा करत मिल । यह जानकर कि रात्रियाग स वहां तक आना थमजय हागा उहान बडी समझदारी स मेरे लिए शाय सवार की थी । जब हमन तमाखू और चाय पी ली तब लाग न बताया कि गाय पिछली रात का झुंड क माय नही आई थी और मुवह को जब उसका तलाश की गई तब यह सडक और नदी-जट क बीच पडी मिली । उन रागा मे मस्त यह भी मात्रूम हुआ कि गत आठ वर्षा में के बघरे स कस वाल वाल बघ ह । मने यह बडी दिलबस्पी स सुना कि बघरे न अपनी तीन बरम पुरानी आत्म को फिर दुहराया ह याना मवाना क दरवाजा को ताडकर भीतर घुसना । अनक दगाआ में यह सफल भी हो जागा ह । पहल सा यह उहा लाग का पकडन तक सामिल था जो मकान स बाहर होने थ उमक वाल बर दरवाजा खुल मकान में घुमकर पकडन लगा और अब तो यह गतान इतना निडर हा गया ह कि जब उसमे दरवाजा नहा राखला सा मिट्टी की शिकार में छल कर लगा ह और इग प्रकार अपनी मानवा गिकार प्राप्त कर लगा ह ।

जा लाग हमारे पकत निबामिया को नहा जानत था उनके करिमा ग डरन को बाल का नहा समझत उदें इस बात पर विश्वास नहा हागा कि जा लोग अपनी धारला के लिए प्रसिद्ध ह और जिहान रणक्षत्र में उच्चतम पुरस्कार

पाया ह इस तरह बघरे का दरवाजा तात्न द या मकान की दीवार में छद सात्न दें। मकाना म आत्मिया क पास कुल्हाडी ज्जर रही हागी गंगा पर खुसरी और बहुत हालता में बन्दूक भी रही हागी। उन आठ बन्मा की अवधि में मुझ बवड एक ही मामता सुनत का मिला जिसमें मकाधिला किया गया। उन दशा म भी मकाविला करनवाला एक स्त्री था। वह अपन मकान म अकेली सा रनी थी कुत्ता लगाना वह मूल गई। इस मकान क दरवाजा म जिसम स्त्रा बच गई थी पर बाह बुरी तरह घायल हा गई थी भीतर को खुत्ता था। कमर में घुमन क बाद बघरे न स्त्री की बाई टाग पकड ली और जमे ही बघरे न उस कमरे में से खाचा स्त्रीका हाथ गढाम पर गया। गढास मे स्त्री न बघरे पर चाट की। बघरे न अपनी गिरपन नही छाडा वरन वह कमरे से बाहर आ गया और जब वह बाहर आया तब या तो स्वय स्त्री न दरवाजा बन्द किया या अकस्मात् दरवाजा भिड गया। दरवाजा चाहे कमेही भिडा हो परस्थिति एसी हो गई कि स्त्री कमरेक भीतर और बघरा बाहर। बघरे न बाहर से जार लगाया और उसकी बाह तोट के गया। श्री मुक्तालाल अगठ दिन उस गाव में यू पी अथव स्थापिका चुनाव के लिए घाटा की खातिर आण और कमरे में रात बिताई पर बघरा गैर नही। अथवस्थापिका ममा में श्री मुक्दीलाल न रिपाट दी कि एक साल के भातर बघरे न ७५ आदमी मार डाल ह और सरकार स अपील की कि आत्मखार के विरुद्ध जिहात् बोट दना चाहिा।

एक गाववामी और माधार्मिह के साथ म गाव की गंग लबन गया। नदी स सी गज की दूरी पर और मडक स एक चौथाई मील की दूरी पर गाव मारी गई थी। नाउ क एक आर दली-दली घटाने था जिनके उपर झानिया थी। नाल क दूसरी ओर कुछ पड थ पर बैठन लायक उनमें एक पड भा नहा था। पेडा क नीच लाग स लगभग तीस गज दूर एक घटान थी जिनके आधार म एक मोलन-भा था मने घही बैठन का निचय किया।

माधार्मिह और गाववाता न मरे जमान पर बठन पर घार आपत्ति की पर

स्त्रयाग में जाने में बाद वधरे द्वाग मारे गए जानवर का पहला ही लान मिली थी इसलिए मुझ आगा थी कि वधरा गाध्र हां था जायगा इस कारण मन उनकी आपत्ति की चिन्ता नहा की ।

मरी बठन की जगह मूखी और आराम देनवागी थी । चट्टान स मरी पीठ लगा थी और मेरी टाग छिपान क लिए झाडी थी और मझ विदवास था कि वधरा मम लेश नहा पायगा । उसके यह जानन से पत्ल कि म कहा हू म उसे मार लगा । मरे पास टाच चाकू थ और राइफल् ता घुटना पर आडी रखा हा थी । मम लगना था कि इस एकाग स्थान म वधरा मारन का अव तक क मिले मौनो से अच्छा मौका था ।

बिना हिलेडुल और अपनी आखा का सामनवागी चट्टान पर लगाए हुए म घाम का बठा रहा । प्रतिक्षण वह समय निकट आता प्रतीत हुआ जब बधरा बखटक अपनी मार पर लोटगा । जिस समय की मनें प्रतीक्षा की थी वह आ गया । और अब ता समय निकल जा रहा था क्याकि हाथ के समोपधानी चार्ज भी अस्पष्ट और घघग होती जाती थी । मनें जिस समय वधरे क आन का आगा की थी वह निकल जा रहा था पर मुझ चिंता न थी क्याकि मरे पास टाच थी और लान केवल तीस गज की दूरी पर थी और म इस गन का ध्यान रखूगा कि निगाना टोक पड़ और घायल जानवर का सामना न करना पत् ।

गहरे नाल म धार निम्न-घना थी । पिछल दिन के मूय-ताप न बिनारे की मूखी पत्तिया को मुखा कर लडक कर लिया था यह बड सहारे की वान था क्याकि अंधरा हो गया था । और पहल तो मुझ रक्षा के लिए हृष्टि पर अवलम्बित रहना था तो अब अपनी श्रवणशक्ति पर निर्भर रहना था । मेरा अगुन टाँच के वन पर था अगुनी घाट पर और म जिघर भी आवाज हा निगाना ला को तयार बँठा था । वधर क न आन म म बचन था । क्या यह सम्भव था कि वह मझ चट्टाना में किसी टिप म्यान म इस पूरे समय दम्न रहा था और क्या

वह अनन हाठ चाट रहा था इस आशा में कि वह अपन दात मेरे गल म गढाएगा क्योंकि उस बहुत दिना स मानवी मास नया मिला था ? म उसके न आन का नाई और कारण ही नहा समझ रहा था । अगर भाग्यधन म जितना नाश को छाड सका तो मुझ अपन काना पर ही इतना अवलंबित रहना पत्गा जितना म पहले कमी नही रहा ।

मन अपन काना पर एतना जाग दिया कि मुझ मालम दिया कि म घना स ही मुनन की माघना कर रहा हू और जब मन दम्भा कि इतना अधिक अघरा हा गया ह जितना नहा होना चाटिण तो क्या दखताहू कि गहग वादल आकाश म लोत्पाट-सा रहा है और तारे छिपते जा रहे है । थोडी देर बाद ही बडी-बडी धूने गिरन गी । जहा पहले नितान्त गानि थी वहा अब चारो ओर आवाज थी और अब वह अवसर आ गया जिसकी बधरा प्रतीक्षा कर रहा था । जल्दी ही मन अपना काट उमारा और गनन मे लपेट लिया तथा आस्तीना मे जकड कर गाठ लगा ला । राइफल तो बकार की पर गायन ध्यान दटान का काम दे जाय इसलिये उस ना वाए हाथ म रखा और चाकू खाट कर मजदूनी स दाए हाथ में पकड लिया । चाकू मेरे पास वह था जिसे भौंकनवाला अफरीदी चाकू कहते ह और मनें हृदय स प्राथना का कि वह मरी धैमी ही सेवा करगा जैमी इसन स्वर्गीय माटिक की थी । जब मनें इसे उत्तरी पश्चिमी सीमा में हगू के सरकारी स्टार मे खरीना था तब डिप्टी कमिश्नर न चाकू पर लग एक लबिल पर मरा ध्यान आकषित किया था जिस पर लिखा था इस चाकू स तीन कतू हा चरु ह । वास्तव में वह एक भयानक स्मारक स्वरूप था पर चाकू की अपन हाथ म रख कर मुझ खुशी थी । जब मह घडाघड बरस रहा था तब म इसे मजदूनी से पकड बठा था ।

जगल के साधारण बधरे मेह पमद नही करते और जब मह बरसता ह तब वे बचन क स्थाना की सज करते ह । पर रद्रप्रयाग का आत्मसुखार साधारण बधरा नही था पता नहा कब क्या कर धन ।

लौटन समय माधामिह न पूछा था कि मरा कब तक बठन का इरादा था ।

तब मनें उत्तर दिया था कि जब तक बपर का न माग लू। माघामिहू न सहायता की कोई आशा न थी पर उम समय सहायता की मझ अति आवश्यकता थी। म बहो बैठा रू या चंगा जाऊ य ता प्रश्न मझ पर्याप्त कर रह थ पर ताना म मे कोई आकषक न था। अगर बपरे न मुझ नही दया धा ता बहा म जाना मखता था क्योंकि एसा करन में बधरा देख लगा और उममे मुकाबिले कठिन मागपर ज्ञाणा जिम पर हाकर म जाऊगा। इमक विपरीत अरु स्थान पर और छ पट बठ रहना और प्रतिक्षण अपना जीवन रक्षा क लिए एम हथियार म उडनका माचना त्रिमका म अभ्यस्त नगा था अपन स्नायया और मस्तिष्क पर वहुत डार डालना था इसलिये म खडा हो गया और कध पर राइफल रख कर चल पडा।

मझ ज्याण नहा जाना था केवले पाच मो गज जाना था जिममे आधी दूर ना भागा चिकना मिट्टी पर हाकर और आधी दूर जानबरा क खरा म धिमा चिकना चट्टाना पर हाकर। आत्मग्यार का आकषित करन क डर म म टोक का प्रयोग करन स डरता था। एक हाथ मग राइफल म धिरा था दूसरा धाकू मे। एसी हालत में म अनक बार गिरा। जब अत में म मटक पर पहुंच गया तब मनें पूरा गला फाड कर रात्रि म कुई का आवाज की और एक क्षण धा हो पहाड क गाव का एक मकान घुसा और माघामिहू तथा उमक साथी लास्टेन लकर आ गए।

जब ता आत्मा मने पाम जा गए तत्र माघामिहू न बहा 'जब तक मझ नहा बरमा था तब तक का आपस बारे म मुझ कोई बचना नहा था पर बाए में म बहन बनेन हुआ लालन जगती और कान लगाए बटा रहा। दाना आत्मी रू प्रयोग जान का तमार थ इमलिये हमलाग मान मान चलत था तमार ता। बच्चादिहू आग था उमक बाए माघामिहू क पाम लालन था मधम पीए म। जब म अगल त्ति लोता ता गाय की अना पाया और मडक पर आत्मग्यार क बिल्ल लव। यह बहना कठिन था कि हमार मडकपर चले जान क कितना रर बाए बपरा मडक पर आया।

जब मैं उस रात्रि का ह्याल करता हूँ तब मैं उसे अपना आत्मकपूण रात्रि समझता हूँ। अनेक घोर म डरा हूँ पर मैं इतना कभी नहीं हूँ जितना मैं उस रात को भयभीत हुआ जब आकस्मिक मेरा बरसना लगा और मेरे बचाव के सब साधन छूट गए, बचल एक ब्राह्मिण का जाक रह गया था।

पथरों की लड़ाई

रुद्रप्रयाग तक हमारा पीछा करने के बाद यधरा गुलाबराय स होकर यात्रा माग पर गया। नाथ से गुजर कर जिनके ऊपर से वह कुछ तिन पहुँचे गया था वह उम उबड़ खाबड़ रास्त पर गया जिन रुद्रप्रयाग के पूव की ओर पहाड़ी पर रहनेवाले लोग हरिद्वार के लिए पगडंडा के रूप में प्रमुक्त करत ह।

बदरनाथ और वेदारनाथ की साथ-यात्रा फुसली जाती ह और तीस-यात्रा का प्रारम्भ और उसकी अर्वाध हो जाता पर अचलम्बित होती ह - एक नो बरफ के गलन और दूसरे बरफ और बरफ के निकटवर्ती उच्च पर्वत-शिखरापर गिरन पर। कुछ तिन पूव बररोनाथ के रायन न तार द दिया था कि माग खल गया ह। इस प्रकार के ताग का स्वागत धारा धोर हुआ और गत कुछ तिन में छाया टुकडिया में यात्रा रुद्रप्रयाग होकर आत लग थ।

गन धरों में आदमखार न यात्रा माग पर बर्न भाग्मी मार डाग और आग्मयोर की यात्रा के तिन के लिए यह आग्म मी हा गई थी कि यह हम सडक पर जहा मक उमका गन या आया जाया करला था। यह रुद्रप्रयाग से पूव पहाडा परस्थित गावा में चक्कर काट कर रुद्रप्रयाग से ऊपर पद्मह माल फिर रुद्र पर जाया जाया करता था। इस गालावार चक्कर काटन में उमका एक ही समय नहा लगता था पर ओमनत रुद्रप्रयाग और गुलाबराय के बीच के सडक के टुकड पर पाथ तिन में एक बार उमके गात्र मिलत थ। शकबगन लौटकर मनें एक स्वान घना जहा ग मुक्त सडक त्रिवाड पडनी थी और म अगती दा गत यह आराम ग धाम की कुरी में बठा। पर धपरे के दान नहा हुए।

दा तिन तक मुक्त पन्थम के गाथ में आग्मखार की बार्न गबर नहा भिगी। नामर तिन प्रातःकाल में यात्रा माग पर छ मील तक गया यह माग्म बनन के लिए कि क्या उमआग के किनी गाथ में यधरा हाल में धाया ह। इस वारन मीर की यात्रा के वान में दापहर का लीग और जब म रस्त बरू कर रहा था

तब दा आत्मा आए और मुझ खबर दी कि गत गत भसवाड़ में एक लड़का मारा गया है। भसवाड़ा रूप्रयाग के दक्षिण पूव अटारह मील दूर है।

इदरसन द्वारा स्थापित सूचना व्यवस्था धृत बड़िया तग से काम कर रही थी। उस व्यवस्था के अनुसार आत्मस्वार के इराके में बाघ द्वारा की गई प्रायक मार का समाचार एक निश्चित पमान द्वारा पुरस्कृत हो। प्रत्येक बकरे की मार का खबर के लिए दो रुपये में लगाकर मत्स्य की मार की खबर के लिए बीस रुपये तक निश्चित है। इन इनामों के लिए काफी होठ रहता था। इस तरह सब मारों के विषय में शीघ्र से शीघ्र समाचार मिलने का बीमा-सा था।

जब मैंने दानो आदमिया का दस रुपया प्रति आत्मी लिये तब उनमें से एक तां मेरे साथ भसवाड़ा के लिए पथ प्रणयन को भी तयार हो गया। दूसरे ने कहा कि बह रात में रुद्रप्रयाग ही रुका क्योंकि हाठ ही में बज्ज्वर पीड़ित रहा था और बापिसी के अटारह मील उसा तिन न कर सकंगा। जब मैं चक्क कर रहा था तब वे अपनी बात सुनाने रहे। दोपहर में कुछ पूर्व ही मैं एक टाच गइफ्त और कुछ कारतूस लेकर चला पडा। जैंग ही डाकबगल के पास हमन मडक पार की और दूसरी ओर का पहाड की चढाई पर चढन लग मेरे साथी ने कहा रास्ता दूर है और अघरे में सुरक्षा नहीं होगा। मैंने आत्मा की आग और तज्ज खलन का कहा। अपनी तवियत में मैं भोजन के बाल फौरन ही चढाई पर नडा चडता पर मेरे लिए विवगता थी। पहले तान मील ही मैं हम चार हजार फीट चढ गए। अपने नायी का साथ देन में मुझ बडी कठिनाई हुई। तीन मील के बाद रास्ता कुछ समतल मिया और मझमें कुछ दम आ गया। उसके बाद मैं आग चला और काफी तज्ज चला।

रूप्रयाग आत समय उन दानो आत्मिया ने माग में पहनवाने आत्मिया में बधर की मार के बारे में कह दिया था। लागा मैं यह भा बज्ज दिया था कि उनका इरादा यह है कि वे मझ अपने साथ भसवाड़ा लाने का आग्रह करंग। मेरा ख्याल है कि किसी ने इस बात पर गज्ज न किया हागा कि मैं उनक

आग्रह का मानूँगा क्योंकि प्रत्येक गाँव में बहा की पूँगी आवादी भरी प्रताशा कर रहा था। कुछ न ता मझ आगीवाँद गिया और कुछ न प्रायना की कि जब तक उनके दुश्मन को न मार लूँ तब तक गन्वाँ छाड़ कर न जाऊँ।

मरे साथी न विश्वास गिलाया था कि हम अठारह साल चल्ना ह और जस ही गहरा घालिया का पार करत हुए एक पवन गिगर म दूसरे पर पहुच वस हा मन महमूम किया कि उन अठारह मीला का याना अयन नठिन थी। वे मीला भा क्या थ ? मन ना जावन में कभा भी इनन कठिन और लम्ब मीला का अतभव नहा किया था। साथ ही उन अठारह मीला क लिए समय भी थयष्ट नहा था। मूरज लगभग डव रहा था। जब उन अनाम पवता क एक गिगर म कई मी गज हमम आग एक पवन माग पर वृत स आगमिया का लड दना। जब हम पर उनकी नजर पठी तो उनमें स कुछ ता पवन माग क दूसरा आग गिगर हो गए और कुछ आग बड। स्वागत करनवाला में भमवाँ का मखिया भा था। अभिवादन क बाद यह कह कर उरमाहित किया कि उनका गाव उन पवन गिगर क ठाँव परे ह और गाव म पहुचकर मझ चाय मिलेगा क्योंकि उनन अपन लक को हम काम को भज दिया ह।

१४ अप्रैल सन् १ २६ का दिन गडवाल म चिरम्भरणीय रहेगा क्योंकि सप्रदाय क आदमसार बघरे क जावन में यह अतिम दिन था जब उनन अपना आशिरी मानवा निकार मारा थी। उन दिन मायबाल का एक विधवा अपना गब नो वर्षीया लडका और बारह वर्षीय लक और पहानी क आग वर्षीय लडक क साथ भमवाडा गाव मे कुछ गज ही दूर अपन मायबाल क भाजन क लिए मान पर पानी लन गई। विधवा ओर शाना बच्च भमवाड क मकाना की एक लम्बा पकित क बाँध में रहत थ। य मकान टुल्ल थ। नच का छांगी छन वाला लला मला और लकड़ा रंगन क काम में आता था और ऊपरवाला नियाम क लिए। मकाना क आग चार फाट चौडा बगमना था। ऊपर लन का पयर का मीठिया थी त्रिनर दाना आर तावाँ बनी थी। प्रायक दा मकाना

के लिए एक-एक सीटों थी। मकानों की पंक्ति के चारों ओर एक छोटा दीवार थी। बीच में साठ फीट चौड़ा और तान सौ फीट लम्बा एक बरामदा था। जब विषवा उसके बच्चे तथा पड़ोसी का बच्चा पानी भर कर लौट तब आग आग पड़ासी का लड़का था। जब लड़का सीढ़ियां पर चढ़न लगा तो उसने एक जानवर का स्खा। उस जानवर का उसने कुत्ता समझा। वह सीढ़ियां से स्तर नीचे के तल्ल के खुले कमरे में पड़ा था। उस समय उसने उसका बारे में कुछ नहीं कहा। पर दूसरा न उसको देखा ही नहीं। पड़ासी का लड़का के पीछे विषवा की लटकी थी उसके पीछे स्वयं विषवा सबसे पीछे यानी विषवा का पीछे उसका लड़का था। जब वह आधी सीढ़ियां चढ़ गई तब उसने अपने लड़का के सिर पर रख वस्त्रन की सीढ़ियां के ऊपर गिरन और लड़कन की आवाज सुनी। लड़के की लापरवाही पर उसने बुरा भाग कहा और बरामदे में पानी रख कर वह दबन को मड़ी कि लड़का न वस्त्रन का क्या नकसान किया है। सीढ़ियां के नीचे उसने वस्त्रन धोखा पाया। वह नीचे उतरी वस्त्रन उठाया और लड़का की तरफ में आख दौड़ा। कहा वह नजर नहीं आया तब उसने समझा कि लड़का डर गया है और उस बलाना शुरू किया। पड़ोस का मकानवाला न वस्त्रन की आवाज सुनी थी और जरा मा का पुकारत सुना तो वह दरवाजा तक जाए और पूछन लग कि आखिर क्या बात है। यह सुझाव पग किया गया कि नाच के तल्ल के बसी कमरे में छिपा हागा इसलिए चूकि अधरा था एक आत्मी लाटन जलाकर लाया और स्त्री की आर को बड़ा और जस ही उधर आया उसने स्त्री के निकट पत्थर पर खून की वूदें दिखाई दी। आत्मी की घबराहट की चिल्लाहट सुन कर और आदमी हात में उतर था। उनमें एक बूढ़ा भी था जो अपने मालिक के साथ अनेक बार गिहार के मुहिम पर गया था। लाटन के बाले से लाटन के कर बूढ़ा जाने के पार खून का स्वाज पर चला। खून के स्वाज नीचे दीवार तक गए और आग एकत्र आठ फीट नीचा खत था। यहा मलायम मिट्टी में बधरे के फल पज थे। उस समय तक किसी को यह पक्क न

या कि लडके का आदमखोर ले गया है क्योंकि हम एक न बघरे के बारे में सुना था पर अब तक वह उनके गाव में दस मील की सीमा तक ही रहा था। जमे हा सबका यह मालूम हुआ कि लडके को आदमखोर ले गया है स्त्री न करुण श्रम प्रारम्भ किया। बापमी अपने घर में डोल लन भाग कुछ न बन्दूक उठाई। उस गाव में तीन बंदूके थी—और कुछ ही मिनटों में वहाँ कुहराम-सा शुरू हो गया। रात भर डाल पिटत रहे बंदूका के फायर होने रहे। सृष का प्रकाश हान पर लडके का शव मिया और दा आदमा मझ खबर लेने आए।

मुखिया के साथ जैसे ही मैं गाव के निकट आया स्त्री का करुणांशुदक श्रम सुना। वह मृतक बच्चे की मा थी। यह ही सबसे पहले मझ गाव में मित्री। मैं कोई डाक्टर नहीं हूँ पर यह स्पष्ट था कि दुखिया माना को बहोता का एक मोरा हो चुका है और दूसरा होनवाग है। इस प्रकार के शोक-मागर में अब हूँ मनुष्यों से यात करन की कला से अनभिज्ञ हान के कारण मैं इस बात का इच्छक था कि उससे गत रात की दुघटना का वणन न करवाऊँ। पर यह तो बात कहन पर उतारू थी इसलिए मैंने बात करन में कोई रबावट न डाली। जम ही वह करुण कथा खगे वैसे ही स्पष्ट था कि अपना सुखमरी यात कहन का उद्देश्य यह था कि यह गाववाला के प्रति अपनी शिकायत का व्यथा कह सकूँ क्योंकि गाववाला न बघरे का पीछा करने उसके बच्चे का नहीं बचाया था। मरे दिन महिलकी भरते हुए और दिल की बेचना को आमुआ के तरल रूप में बहान हुए अपने अरना अन्नवेदना प्रगट की कि गाववाले उसक बच्चे का बचान के लिए शीत उस तरह जो सनत प जैसा कि उड़ाई का पिता अगर जीवित हुआ तो उस बचान को जाना। मैंने उस बताया कि गाववाला के प्रति उसका दायारापण अन्वाप्तपूर्ण है और मैंने उस समझाया कि अगर उसका यह विश्वास है कि उसका लडके का कोई जीवित बचा भवता था वह बिल्कुल गलत है क्योंकि अब बघरे ने अपने की उड़ाई की गदन में गढ़ा लिए सब उसका बाला (गुकर लता) से उसका सिर गदन से टूट चुका था और बघरे के उसका हात से

ये ज्ञान न पूव ही प्राण पलक उठ चकें थ और कोई भी आदमी उसे जावित रखन क लिए कुछ कर हो नहा सक्ता था ।

हाते में खड होकर म चाय पी रहा था और मेरे धारों आर लगभग सी आत्मी खड थ । चाय पीने समय म दस बात का ठीक तौर से न समझ सका कि बघर कें आकार कें जानवर न बिना किमी आदमी के दस दिन-राहाड हाते का कसे पार किया । इसके अनिश्चित एक दूसरा आश्चय यह था कि गाव कें कुत्तो न उसकें अस्तित्व का कस नही जान पाया ।

म उम आठ फटी नीवार के नीचे उतरा जिससे लडक का मुह म द्वाए बघरा कद गया था । खत में लिचबदन के पीछे एक दूसरी बागह फीट ऊची दीवार तक गया और आग एक और खत म । इस दूरने खत क किनारे चार फीट ऊचा एक धनी गलाबो की छाडा थी । यहा बघरे न लक की लाग का जमीन पर रखा था । छाडा में कोई माग न पाकर उसन लक का पीठ पकड कर उमे मह म उठा लिया और छाडी को कद कर दूसरी ओर दस फीट ऊचा नीवार क नीचे चला गया । इस तासरी दीवार के नाच गाव के जानवर का रास्ता था और बघरा इस माग पर कुछ ही दर गया हागा कि गाव में भम्भड गुरु हा गया । बघर न लडके का राग को बहा गिरा लिया और पह्लाडी के नाच चला गया । रात भर डार पित्त रहे बन्दूकें चलता रहा इसलिए वह दुवारा लाग पर नगा आया । ठीक बात मेरे लिए यह हाती कि म लडके को लाग का उस स्थान पर क जाना जग बघरे न उमे छाडा था और बठना । पर मेर सामन ता कठिनाया थी । एक ता बठन को स्थान न था और अनपयुक्त स्थान म बठन को मेरी तनियन न करता था ।

निकटतम पड बहा म तीन मी गज दूर था और वह भी पत्तविहीन अस्वराट का । इसलिए थग बठन का कारि मवाए ही न था । ईमानदारी की दान ता यह ह कि जमीन पर बठन का महमें साह्य न था । सूयास्य समय म गाव आया था । कुछ समय ता उम लियया मा की दान मुनन में लगा कुछ चाय

पीन और कुछ वधर के खाज पर जान में। इसलिए इतना प्रकाश न रह गया था कि वधर के लिए मैं सुरक्षित स्थान बना सकूँ कम से कम ऐसा जो दखन में ता सुरक्षित मालूम हो। अगर मैं जमीन पर बैठता तो सब जगह एक ही सी था मैं कहीं भी बैठ सकता था। यह अदाजा लगान का समय न था कि वधरा किस आरस आवगा। पर यह बात मैं अच्छी तरह समझता था कि यदि वधरे न आक्रमण किया तो मुझे यह हथियार प्रयोग करने का अवसर नहीं मिलेगा जिसका मैं अभ्यस्त हूँ—यह हथियार है मर्ग राक्षस। क्योंकि जब बिना घायल वधरे या दर का सामना हो जाय तो बन्दूक या राक्षस का चलाना सम्भव नहीं।

जब मैं निरीक्षण के बाद लौट आया तो मैंने मगिया से कुशल मजबूत सूटा भीतर और कुत्त का ज़रार मागा। कुत्ता मैं तो हात के बाँध में गधुा लाया और लडा ठाका और एक मिर मैं ज़रार बांध था। तब मगिया का महायना सन्देह की लाग का वहाँ ल गया और ज़रार से बांध लिया।

वह जसय गकिन जा जीवन दुखला का प्रतिन करता है जिसे कोई भाग्य कहना है कोई किस्मत अगम्य है। पिछले कुछ दिनों मैं इस गकिन न घर के अग्रभाग के जावन का जन्म लिया—उसका गकिन न उमर उक के घाड में जावन को दुखला को बाट लिया था—उस लखे का जिम उरुबा विषका मा न बड़ लख प्यार में पाला पोसा था—उस बुद्धिया का अन्तिम दिना में गाब-दागर में लाह लिया था। आगा थी कि वह कुम्ह का भरण-पोषण करेगा और माता की सेवा करेगा। लखे का आश्रित इस बात का प्रमाण थी कि माता न मचिन प्यार उहें कर उसकी दयभाल का था। अन्तिम बार् आशय नहीं कि हाथ आन पर तुमिया मा जबरदस्त कर मैं यहा करती है परमावर! भरे बर न लया क्या पाप किया था? मर्ग बरग जिम मर्भी प्यार करत है—जिसके कारण बर अपन जीवन के प्रारम्भ में ही इस भयकर मौत के घाट उतरा। पयरा का अन्त स्थान पर रगन मैं पहलू मने लागा मैं बरग लिया था कि तुमिया मा और उमका

जान में पूव ही प्राण पक्षर उड़ घबरा और कोई भा आदमी उसे आवित रखन के लिए कुछ कर ही नहीं सकता था।

होने में खड होकर म चाय पी रहा था और मरे चारा ओर लगभग सौ आत्मी खड था। चाय पीते समय म इस बात का ठाक तौर में न समझ सका कि बघर के आकार में जानवर न बिना किसी आदमी के दस दिन-दहाड हात को कैसे पार किया। इसकी अतिरिक्त एक दूसरा आश्चर्य यह था कि गाव के कुत्ता न उसकी अस्तित्व को कैसे नहीं जान पाया।

म उस आठ फटी नीवार के नीचे उतरा जिनसे लडके को मह म दवाए बघरा कद गया था। खत में खिचडन के पाछ एक दूसरी वारह फीट ऊंची दीवार तक गया और आग एक और खत में। इन दूसरे खत के किनारे चार फीट ऊंचा एक घनी गलावा की छाडा थी। यहा बघर न लडके की लाग का जमीन पर रखा था। छाडी म काई माग न पाकर उमन उडके की पीठ पकट कर उमे मह स उठा लिया और छाडा को कूट कर दूसरी आठ दस फीट ऊंचा दीवार के नीचे चला गया। इन तीसरी नीवार के नीचे गाव के जानवरा का रास्ता था और बघरा इन माग पर कुछ ही दूर गया हागा कि गाव में भम्भड शरू हा गया। बघर न उडके की लाग को बहा गिरा दिया और पगहा के नीचे चला गया। रात भर ठोले पिठन रहे बन्दूकें चन्ता रहा इसलिए बह तुवारा लाग पर नग आया। ठीक बात मरे तिल यह होती कि म लडके की लाग का उम स्थान पर के जाना जहा बघरे न उमे छाडा था और बठना। पर मने सामन न कठिनाइया थी। एक ता बहन का स्थान न था और अनपयवत स्थान में बठन का मरा तदियत न करता था।

निकरतम पर घरा स तान सौ गज दूर था और वह भी पत्तविज्ञान अस्वगत का। इसलिए वहा बैठन का काई सवाल ही न था। ईमानगारा की बात ता मह न कि जमान पर बहन का मुझमें मान्य न था। मूयास्त समय म गाव आया था। कुछ समय ता उम तुन्दिया मा की बात मुनन म लगा कुछ चाय

पान और कुछ वधर के पात्र पर जान में। इसलिए इतना प्रकाश न रह गया था कि बठन के लिए मैं सुरक्षित स्थान बना सकूँ। मैं मरना नहीं चाहता था। सुरक्षित मानूँ ही। अगर मैं जमीन पर बैठता, तो सब जगह एक ही चीज थी मैं कहाँ भी बैठ सकता था। यह अज्ञानता का समय न था कि वधर किस आराम में आया। पर यह बात मैं अच्छी तरह समझता था कि यदि वधर ने आक्रमण किया तो मैं वह हीचियर प्रयाग करने का अवसर नहीं मिलता जिसका मैं अभ्यस्त हूँ—वह हीचियर है मेरा राष्ट्र। क्योंकि जब बिना घायल वधर का पात्र का सामना हो जाय तो बन्दूक या राइफल का चलाना सम्भव नहीं।

जब मैं निराश्रय के वातावरण में आया तो मैं मगिया मैं कुत्ता मजबूत बड़ा मीठरा और कुत्तों का उद्धार माया। कुत्ता मैं तो हानि के वाचक मगिया पात्र और खूटा ठाँक और एक दिन मैं उद्धार वाचक। तब मगिया का सहायता मगिया का लाल का बर्तन गया और उद्धार मगिया।

वह अज्ञानता कि जावन शूटिंग का प्रश्न करता है किम कोई भाग्य करता है कोई किस्मत अगम्य है। पिछले कुछ दिनों में इस शक्ति ने धर के अज्ञानता के जीवन का जन्म दिया—उस शक्ति ने उस लड़के के धार में जावन का शूटिंग का काट दिया था—उस लड़के का किम उसका विधवा माँ ने वह शूटिंग मगिया पात्रा था—उस बुद्धि का अन्तिम दिना में गाँव-नागर में छाड़ दिया था। आता थी कि वह कुत्तों का भरण-पोषण करना और माता का भका करता। लड़के की आकृति इस बात का प्रमाण था कि माता ने मगिया धार उड़ने के उसका शूटिंग की था। इसलिए मैं आश्चर्य नहीं कि हाँ मैंने पर शूटिंग माँ अकस्मात् कर मगिया करता है परमात्मा। मरने का काट किया था? मगिया किम मगिया धार करत था—किम काट कर काट जावन के प्रारम्भ में ही मैं भयकर मोत के पात्र उतगा। परमात्मा का शूटिंग स्थान पर रगत में पड़ने मने लागा मगिया किया था कि शूटिंग माँ का

उड़की मकाना को पवित्र व अंतिम कमर में चले जाय। सोत समय मन पशाल माग कर उस धुड़िया के मकान के तरबाज व सामन के बरामदे म विछा लिया।

अधरा हा चुका था। उपस्थित रागा म मन कहा कि वे रात भर विल्कुल खप रह और अरन-अरन घर जाय। म बरामद म अपन स्थान पर वठ गया। वग म बगड के सहार लट कर सामन पराल डाल कर उड़क की लाग को देख सकता था पर लाग म म नहा तियाई पत् सकता था।

यह ठीक ह कि उड़क की राग का डूबन मे हलग मचा था पर फिर भी ववग आयगा और जब लाग स्थान पर न मिलगी ता वह गाव में आयगा गमा मग बिचार था। जिस आसानी से उसे पहल गिवार भसवाडा में मिला था वह उस फिर भी आन को प्रेरित करगी। मन पहरेदारी शुरु की।

मायकाल म घादल इकट्टु हो गए व मानो स्त्री के कान और लटके का लाग का नेत्र कर आकाश का तिल उमड रहा हो और आठ बज बुद्धा के रोन्न व अतिरिक्त गव गाव पान्त मुद्रा म लीन था। विजली चमकी वादल गरजा और तूफान के प्यादान घोषणा कर दी कि प्रकृति का काप प्रारम्भ हान वाला ह। एक घट तक तूफान रहा। विजली की जिह्वाए-मी एक घट तक दिसाई पठती रती जिनसे हाने म कना प्रकाश था कि यदि चूना भी निकलता ता म ठीक निगान रागा नेता। मह ता यान में वन हा गया पर आकाश घिरा रहा कोई चीज हाया हाथ तियाई नही पडता थी और बघरे व लिए अब मौका था। पता नहा वह किम दिगा म आवे पर उमे गाय व आन में उतनी हा दर थी जितनी उमक छिनाव व स्थान म वहा पहुचन म।

स्त्री का राना धाना अब बंद था और चारा बार प्रकृति में अब नीरवता थी। इमो तरह व गान वातावरण था म चाहता था और म बवड काना म मालूम कर सकता था कि बघरा आया ह या नही। इसीलिए मैंने रस्मी व स्थान म कुत की उजार बाम म ला थी।

पराल जो मुक्त तिया गया था वादल की तरह सूषा था। मर कान राग की

धोर लग था। पहली आहट जा मुझ भिन्न वह ठीक परा के पास मान्म हुई।
 कई चीज धीरे-धीरे मरा आर बड़ रही थी और पराल के ऊपर न जिस पर म
 लगा था आ रही थी। म शांत पहन था जिसके कारण घुटन खुल था। माघ
 हा इम खुल दरार पर जानवर के बाल घन मा करत प्रतीत हुए। यह मरकना
 आत्मघार के अनिश्चित और किमी का नहा हा सकता और वह तब तक मरकना
 जब तक मरी गरदन न पकड ?। धाए कथ का मने सहारा दिया ताकि पर
 जमा लू और जम ही म घाडा चलान वाला था कि एक छाटा जानवर मरा छाता
 के बीच बूट आया। यह बिल्ला का बच्चा था जा गुफान में बाहर
 गया था और हर दरवाजा बने पाकर गर्मी और रक्षा के लिए मर पाम
 आया था।

मरे को के मानर बिल्ली के बच्चे को अभी आराम मिला ही था और डर
 म में जमा चत हा रहा था कि पुस्तकार खता म दूर एक घामा गुराहट मुनाई
 पड़ी। वह गुराहट धीरे धार तब हुई और अत म वह एक अत्यंत क्रूर लार्ड
 में परिवर्तित हो गई—इतनी तर कि उमम धूर लड़ाई की आवाज मने पहलू बभा
 नहा मुनी थी। स्पष्टतया आत्मघार उस जगह पर आया था जहा उसने पिछड़ी
 रात लडके की लग को छाडा था। जब उमका तपण कर रहा था एक दूररा
 तर बधरा जा इस क्षण विगय का अपन गिकार का म्यान समसना था अनापाम
 बना आ गया और उस पर टूट पया। जिस प्रकार की लडाई का आवाज का
 म मुन रहा था उस प्रकार की लडाईया बड़ी असाधारण होनी ह क्योंकि मानभय
 पण अपन इलाके में सीमित रहत ह यदि किमी कारण एक हा जानि के एक हा
 लिय के दो पणजा का मुठभड हा जाय ता एक नडर में ही एक दूसरे का
 टकन पहचान लग ह और कमजोर बलगाणा के सामने म भाग जाना ह।

आत्मघोर बूडा था पर वह आकार में बडा और गतिगाली था। उस
 पावमी बगमील के इलाके में कई दूररा तर बधरा हस्तक्षेप नगा कर सकता था।
 पर भस्वाड में वह अजनबी था और बने उसका दखल बभा था। जा मुभाव

यहां आकर उमन मोल ली थी उसमें जान वधान का लडना ही था। इसलिए वह लड रहा था।

वधरे पर निगत लन का मरा अवसर अब चला गया था। क्योंकि आत्मछार अपन आक्रमणकारी का हरात म रुकना भा हुआ ता उसका धाव कुछ समय के लिए किसी का मारत में लिखवम्पा न लन का बाध्य करेगा। यह भी सम्भावना थी कि यह लडाई आदमखोर का धातक मिद्ध हा। एसी एथा म उसका अत अत्रत्यागित ही रहेगा। उसकी मौत एक वधर मे मठभड म ही रहेगा जब कि सरकार और जनता क आर वष के मयक्ष प्रयतन अब तक उसके मारत में असफल ही रहेग।

पहले पकड-कुत्ती-लगभग पाच मिनट चला और निरंतर क्रूरता म हाती रही। पर रडो वह अनिर्णित। क्योंकि पकड क बाए म दोना जानवरा की आवाजें मुतता रहा। दन या पडर मिनट क अक्वाग क बाए लडाई फिर गर हो गई। पर दुवारा कुत्ती पहले स्थान मे दो मौ तीन मौ गज दूर हुई। यह स्पष्ट ही था कि स्थानीय मीरा-चम्पियन लडाई में जवरलम्न पड रहा था और धीरे-धीरे वह आत्मखोर का अस्वाह म बाहर निकाल रहा था। तीसरी पकड पहला दा का अपेक्षा थाड़ी ँर चलो पर खूबवारा म वह किसी प्रकार कम न थी और जब एक लम्ब अवकाश क बाद कुत्ती गरू हुई ता अस्वाहा हल कर एक पहाड की बगल म बना था जहा कुछ मिनटा क बाए लडाई का आवाज मुताई न पडा।

अभी अघर क छ घट बाकी थ और मज मारूम हा गया कि भसवाह का मिंगत असफल हा गया है और मेरी आशा कि वधरा की कुत्ती आदमखार की मौत में परिणत हागे केवल दुरागा ही रही। कुत्ता में आए धावा म उसकी न ता मानव मास की हज्जा हा थीमी हागी और न उसका प्राण करत की क्षमता ही कम हागा।

बिस्वा का बच्चा रात भर आराम म साता रहा। भूय का पहला किरण